

**दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र**

**CENTRE FOR DISTANCE & ONLINE EDUCATION**

**जम्मू विश्वविद्यालय**

**UNIVERSITY OF JAMMU**

**जम्मू  
JAMMU**



**पाठ्य-समग्री**

**STUDY MATERIAL**

**एम.ए. एजुकेशन (सत्र- IV)**

**M. A. EDUCATION (SEMESTER -IV)**

**पाठ्यक्रम संख्या PSDGTO407**

**COURSE CODE PSDGTO407**

**पाठ्यक्रम शीर्षक**

**नाटक ते एकांकी**

**TITLE OF THE COURSE**

**Natak Te Ekanki**

**पाठ संख्या 1-15**

**LESSON No. 1 to 15**

**सत्र चौथा**

**SEMESTER IV**

**Dr. Anuradha Goswami**

**Course Co-ordinator**

**Dr. Jatinder Singh**

**Teacher-Incharge**

इस पाठ्य-समग्री दा प्रकाशन सरबंधी अधिकार  
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, जम्मू विश्वविद्यालय कोल सुरक्षत ऐ।

**MA Education**  
**Course Contributors**

**Dr. Radha Devi Sharma**  
**Asstt. Professor,**  
**Dogri Deptt.**  
**University of Jammu**

**Dr. Anuradha Goswami**  
**Course Co-ordinator**

**Dr. Jatinder Singh**  
**Teacher-Incharge**

**Review, Content Editing/Proof Reading**  
**Dr. Jatinder Singh**  
**Lecturer in Dogri, CDOE, University of Jammu, Jammu**

© Centre of Distance and Online Education, University of Jammu, Jammu, 2025

<http://www.distanceeducationju.in>

Published on behalf of the Centre for Distance & Online Education, University of Jammu

**MASTER DEGREE PROGRAMME IN EDUCATION(M.A.EDUCATIONS)**  
**Choice Based Credit System**

(Syllabus for the examinations to be held in May 2025, 2026 & 2027)

Course No.:PSDGTO407

Title : Natak Te Ekanki

Credits: 4

|                                 |     |
|---------------------------------|-----|
| Maximum Marks :                 | 100 |
| Minor Test I :                  | 10  |
| Minor Test II :                 | 10  |
| Internal Assessment Assignment: | 10  |
| Major Test :                    | 70  |

**सलेबस**

1. अपनी डफली अपना राग (नाटक संग्रह)- मोहन सिंह
2. एकांकी अंक, डोगरी शीराजा, ब'रा अप्रैल 1973

**सलेबस दी बंड**

**यूनिट— 1**

नाटक: परिभाषा, तत्व ते भेद

**यूनिट— 2**

अपनी डफली अपना राग दी पाठ्य समग्री ते उसदे रचनाकार बारे सुआल

**यूनिट— 3**

डोगरी शीराजा एकांकी अंक-4 दी पाठ्य समग्री बारे सुआल

**यूनिट— 4**

डोगरी शीराजा एकांकी अंक-4 दे रचनाकारें बारे सुआल

**Note for Paper Setters**

There shall be two tests and one assignment as per Minor Evaluation and one Major test at the end of Semester each semester. The student shall be continuously evaluated during the conduct of each course on the basis of their performance as follows:

| Theory        | Syllabus to be covered | Time allotted for Exams | Weightage of Marks                       |
|---------------|------------------------|-------------------------|------------------------------------------|
| Minor Test I  | Unit I and Unit II     | One hour                | 10 Marks                                 |
| Minor Test II | Unit III and Unit IV   | One hour                | 10 Marks                                 |
| IAA           |                        |                         | 10 Marks (Two questions of 5 marks each) |
| Major Test    | Unit I – Unit IV       | 3 HOs                   | 70 Marks                                 |

**MASTER DEGREE PROGRAMME IN EDUCATION(M.A.EDUCATIONS)**  
**Choice Based Credit System**

**(Syllabus for the examinations to be held in May 2025, 2026 & 2027)**

**Course No.:PSDGTO407**

**Title : Natak Te Ekanki**

**Credits: 4**

|                                        |            |
|----------------------------------------|------------|
| <b>Maximum Marks :</b>                 | <b>100</b> |
| <b>Minor Test I :</b>                  | <b>10</b>  |
| <b>Minor Test II :</b>                 | <b>10</b>  |
| <b>Internal Assessment Assignment:</b> | <b>10</b>  |
| <b>Major Test :</b>                    | <b>70</b>  |

**Note for Paper Setters (Major Test):**

The question paper will contain long and short answer type questions. There will be total of eight long answer type questions (two questions from each unit with internal choice) and the candidates will be required to answer one question from each unit. Each long answer type question will carry 15marks. Question No. 1 will be compulsory and shall have four short answer type questions (100 words per question). Short answer type questions will be from all the units Each short answer type question will carry 2.5 marks.

**सहायक पुस्तकां:**

1. साढ़ा साहित्य- 1990, जम्मू-कश्मीर अकैडमी आफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्विजिज आसेआ प्रकाशत।
2. नाट्य शास्त्रमः श्री बाबू लाल शुकल शास्त्री, चौखम्भा संस्थान
3. हिंदी नाटकः बच्चन सिंह
4. संस्कृत नाटक में अति प्राकृत तत्व- तत्व- डा. मूल चन्द्र पाठक
5. हिंदी नाटक चिंतन- कुसुम कुमार
6. हिंदी नाटक मूल्य संक्रमण- डा. गिरिराज शर्मा गुंजन
7. हिंदी नाटके में पात्र कल्पना और चरित्र चित्रण- डा. सूर्याकान्त शर्मा

विशे सूची

| ध्याs | इकाई    | ध्याs दा नांस                                    | लेखक दा नांस        | सफा |
|-------|---------|--------------------------------------------------|---------------------|-----|
| 01    | इकाई-01 | कूशजादी नाटक दे गद्यांशों दी व्याख्या            | डा. राधा देवी शर्मा | 04  |
| 02    |         | अपनी डफली अपना राग नाटक दे गद्यांशों दी व्याख्या | डा. राधा देवी शर्मा | 06  |
| 03    | इकाई-02 | कूशजादी नाटक बारै सुआल                           | डा. राधा देवी शर्मा | 11  |
| 04    |         | कूशजादी नाटक दे पातरे दा चरित्र चित्रण           | डा. राधा देवी शर्मा | 15  |
| 05    |         | कूशजादी ननाटक च रस योजना                         | डा. राधा देवी शर्मा | 20  |
| 06    |         | लोक शैली ते डोगरी नाटक कूशजादी                   | डा. राधा देवी शर्मा | 25  |
| 07    |         | जितेन्द्र शर्मा हुंदा व्यक्तित्व ते कृतित्व      | डा. राधा देवी शर्मा | 30  |
| 08    | इकाई-03 | अपनी डफली अपना राग नाटक दी अलोचना                | डा. राधा देवी शर्मा | 36  |
| 09    |         | नमी अवाज नाटक दी अलोचना                          | डा. राधा देवी शर्मा | 41  |
| 10    |         | दनां सोचो ते सेही नाटक दी अलोचना                 | डा. राधा देवी शर्मा | 48  |
| 11    |         | मोहन सिंह हुंदा व्यक्तित्व ते कृतित्व            | डा. राधा देवी शर्मा | 55  |
| 12    | इकाई-4  | मंडलीक नाटक दी अलोचना                            | डा. राधा देवी शर्मा | 75  |
| 13    |         | नरसिंह देव जम्बाल हुंदा व्यक्तित्व ते कृतित्व    | डा. राधा देवी शर्मा | 80  |
| 14    |         | एकांकी दा अर्थ, परिरभाशा ते तत्व                 | डा. राधा देवी शर्मा | 87  |
| 15    |         | डोगरी एकांकी दी विकास यात्रा                     | डा. राधा देवी शर्मा | 90  |

‘कूशजादी’ नाटक दे गद्यांश दी सप्रसंग व्याख्या।

(क) गद्यांश –

“अ’ऊं पुच्छनी आं – की बचाया हा मिकी? ए नरक जून भोगने लेई? उस रोज रूढ़ी-डुब्बी गेदी होंदी तां सारा स्यापा गै मुक्की जाना हा (रोन्दे सिसकदे) नां तूं मिकी बचांदा, नां मेरा दीन-दुखी बापू सहान्नै कर्जे दे भार हेठ दबोन्दा-जलोन्दा ते नां अज्ज बिच्च मंडिया मेरी बोल्ली लगदी।”

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियां पाठ्यक्रम च लगगी दी पुस्तक ‘कूशजादी’ नाटक थमां लैतियां गेदियां न। इसदे नाटककार जितेन्द्र शर्मा होर न।

प्रसंग – एह नाटक लोक शैली उपर आधारत ऐ एहदे च उस बेल्ले दा प्रसंग ऐ जिसलै नाटक अपनी जिन्दगी’शा दुखी होइयै दरेआ च छाल मारियै आत्महत्या करने दी कोशिश करदी ऐ पर उसी बचाई लैता जंदा ऐ। इस गद्यांश च करुणा रस ऐ। रूपां गी जेहड़ा बी बचाने दी मदाद करता ऐ ओहदा हथ मंगदा ऐ ओह दुखी होइयै वरलाप करदी ऐ।

व्याख्या – इस व्याख्या च नारी वेदना दा चित्रण होए दा ऐ रूपां अपने जीवन’शा तंग आइयै आत्महत्या करने दी कोशिश करदी ऐ पर उसी बिद्दा बचाई लैदा ऐ। पर रूपां ठीक नेई होंदी ऐ ते ओहदा बापू शाहूकारें शा पैसे लेइयै ओहदा इलाज शैहर जाइयै करोआंदा ऐ। ठीक होई जाने पर बिद्दा ते शाहूकार ओहदे उपर हक जतांदे न, पर रूपां अपने इस मरे होए जीवन’शा तंग आइयै पंचैत सामनै आखदी ऐ जे उसी मरी-मुक्की जाना चाहिदा हा नां ओह बचदी ते नां ओहदे पिता गी जने-खने अगै तली अड्डनी पौंदी ते नां गै इ’यां सारी पंचैती च ओहदी बोल्ली लगदी।

(ख) “इस चाल्ली छे रोज बीती जाने उपर बावे ने ताड़ी नेई पुट्टी। खीर सतमें रोज जिसलै उसने अक्खीं खोल्लियां तां शैल धुखदी धूनी, साफ सुथरा थान ते कोल हथ जोड़ियै बैठे दे गभरू गी दिक्खेआ तां ओहदा मन बड़ा प्रसन्न होआ।”

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियां पाठ्यक्रम च लगगे दे नाटक ‘कूशजादी’ थमां लेती गेदियां न। इसदे नाटककार जितेन्द्र शर्मा होर न।

**प्रसंग** — लोक शैली राहें पूरा घटनाक्रम बुनेआ गेदा ऐ। इस प्रसंग च उस बेल्ले दा चित्रण होए दा जिस बेल्ले रूपां दे स्हेई दावेदार आस्तै पंचैत बुलाई जंदी ऐ। पंत उसदा बितारा करने आस्तै लोकें गी लोककथ सनांदा ऐ जेह्दे कन्नै आम लोकाई रूपां दा फैसला करी सकै।

**व्याख्या** — एह्दे च पंत आम लोकाई गी लोककथ राहें जागश्त करदा ऐ ते कूंशजादी दी कथ सनांदा ऐ। इक गभरू जिस बेल्लै अपनी भाबी दे हत्थें दी बनी दी रुट्टी गी पसिंद नेई करदा ते ओह्दी भाबी उसी आखदी ऐ जे तूं जा कूंशजादी गी ब्हाई लेई आन जेह्ड़ी तूई पकवान बनाइयै खलाऽ। एह् सुनियै गभरू घर छोड़ियै टुरी जंदा ऐ ते जंगल च इक बाबै ताड़ी लाइयै तपस्या करा दा होंदा ऐ। छे रोज गभरू ओह्दे अग्गे-पिच्छे सफाई बगौरा करियै धूफ-धूनी धखाइयै वातावरण गी स्वच्छ बनाई रखदा ऐ। सतमें दिन जिस बेल्लै बाबा अक्खीं खोहलदा तां ओह् अग्गे पिच्छे साफ-सफाई दिक्खियै ओह्दा मन प्रसन्न होई जंदा ऐ।

#### अभ्यास आस्तै किश गद्यांश

(क) “में पुच्छी-मुच्छी लैते दा ऐ। नगगर इक रोज गल्ल होई ही जे इन्नी टैह्ल सेवा एड्डा त्याग ते साक-सरबन्धी बी नेई करदे ओ कुसै केह्ड़े लालचा धरडोआ दा ऐ तां उन्न परता दिता हा — ‘मिकी रती भर लालच नेई चाचा, पर इन्नी गल्ल जरूर ऐ जे रूपां मिकी चंगी लगदी ऐ।”

(सफा — 24)

(ख) “नां जी नां में किश नेई आखना-गलाना तुसैं सेही गै ते में रूपां गी रुढ़दे दिक्खिया तां अपनी जिन्दू दी परवाह, कीते विजन झट्ट दरेआ च छाल मारी दिती। मतलब ए जे में अपना-आप खेतरे च पाइयै रूपां गी जीवन दान दिता ऐ। तुस ए बी जानदे ओ जे दीनू चौधरी मिगी वचन देई चुक्के दा ऐ की चौधरी चेतै हैन नां अपने बोल-विधां तूं इसी नमां जन्म दिता ऐ। जे बची गई तां होई तेरी।” (सफा — 26)

(ग) “टर-टर नेई कर मूरखा। बिन्द सोच ते सेही, जेकर अस फूढ़ी उप्पर उड्डरियै नेई औंदे तां इन्न सुआह दी ढेरी नेई हा बनी गेदे होना? एह् बची ऐ मेरी चमत्कारी फूढ़ी मूजब। एह्दे उप्पर छड़ा मेरा हक्क बनदा ऐ होर कुसै दा नेई।”

(सफा — 63)

(घ) “ओए म्हातड़ शायिया उच्चे भाग ते हे उस गभरू दे जिसी कूंशजादी नेही हूर-परी मुख्तवरी च थोई गई। खबरै किन्नी शुआदली रुट्टी पकांदी होग कि यां चाए-मल्हारें खलांदी होग?”

(सफा — 67)

**M. A. DOGRI**

**C.No. DOG 406**  
**SEMESTER - IV**

**UNIT – I**  
**LESSON – 2**

‘अपनी डफली अपना राग’ पुस्तक च संकलत नाटकें चा इक-इक गद्यांश दी सप्रसंग व्याख्या।

(क) ‘अपनी डफली अपना राग’

“कल आए हे, के कैदे गितै  
इसदे ते नेई आए के कल।  
कल आए हे गऊ रक्षा ते।  
कल औना, लंगड़े लूले ते,  
फही, औगे, शहीद, गित्तै, विघवे गित्तै,  
सोक्के ते हाड़ा नै जेहड़े,  
उझड़ी गेदे, उंदे गित्तै।

(सफा-14)

- संदर्भ** – प्रस्तुत पंक्तियां पाठ्यक्रम च लग्गे दे नाटक संग्रह ‘अपनी डफली अपना राग’ च संकलत नाटक “अपनी डफली अपना राग” चा लेतियां गेदियां न। इस नाटक दे नाटककार मोहन सिंह होर न।
- प्रसंग** – एह प्रसंग उस बेल्ले दा ऐ जिस बेल्लै जोगी आए दिन लोकें गी बक्ख-बक्ख बहाने लाइयै ठगदा ऐ ते लोक जिस बेल्लै ओहदे इस शडयन्त्र बारै जागरुक होंदे न तां ओह ओहदा वरोध करदे न। तां ओह अपना-आप बचाने लेई अपनी सफाई च आखदा ऐ जे कल ओह होर कुसै चीजै लेई चन्दा इक्ठ्ठा करा दा ऐ ते अज्ज होर कुसै लेई आया ते कल्ल होर कुसै होर लेई औना ऐ।
- व्याख्या** – इस व्याख्या च शोशन दी गल्ल चला करदी ऐ। बावे दे जन्म ध्याड़े उप्पर चन्दा मंगन आए दे जोगी दा लोके पाससेआ वरोध कीता जन्दा ऐ कीजे जोगी हर रोज कोई न कोई बहाना लाइयै लोकें गी ठगदा ऐ। हून लोक ओहदी इस करतूत शा तंग आई गेदे न इस करी ओहदा विरोध करदे न। लोकें गी अपने खिलाफ होन्दा दिक्खियै जोगी आखदा ऐ जे ओह कल होर कुसै मकसद लेई चन्दा इक्ठ्ठा करा दा हा यानि कल्ल ओह गऊ रक्षा लेई आया हा। कल बी औना ऐ पर कल

मकसद किश होर होना ऐ जि'यां लंगड़े लूले, शहीदें विधवाएं दे नांउ उप्पर फही सोक्के ते हाड़ें दे नांउ उजड़े गेदी लोकें गितै, पर स्हाड़ा एह सिलसिला मतवातर चलदे रौहना ऐ।

(ख) 'नमीं आवाज' नाटक दे गद्यांश दी सप्रसंग व्याख्या

"हा-हा-हा। ओ भोलेओ, जेकर तुंदी समझ कम्म करन लगी पवै तां ते तुस चट्ट कीते दे मेरे शडयन्त्रें कोला बची निकलो। पर में कोई शडयन्त्रकारी दमाग नेई, जे हर लल्लू पंजू मेरी चालें गी समझी सकै। मैं सताधीश शडयन्त्रकारी दमाग आं। बादशाहियां हत्थयाने ने चलाने आला। मिगी समझने आली समझ दा सर्वनाश निश्चत ऐ। खून-खराबा, दंगे-फसाद ते भुक्खमरी, मेरे निक्के-मुट्टे तमाशे न।"

(सफा-43)

**संदर्भ** – प्रस्तुत पंक्तियां पाठ्यक्रम च लागे दे नाटक संग्रह 'अपनी डफली अपना राग' च संकलित नाटक 'नमीं आवाज' चा लैतियां गेदियां न। इस नाटक दे नाटककार मोहन सिंह होर न।

**प्रसंग** – एह प्रसंग उस बेल्ले दा ऐ जिस बेल्लै संदेश नांउ दा पातर जेहड़ा पढ़े-लिखे दा बेरोजगार नौजुआन ऐ पर एहदे बावजूद उसी समाज'शा छड़े धक्के गे थहोंदे न। ओहदी इस बेबसी उप्पर चरमराई इन्साफ दी व्यवस्था प्रतीक आवाज ओहदा मजाक उड़ांदी ऐ ओहदी इस हालत दा जिम्मेवार अपने आप गी समझदे होई गर्व महसूस करदी ऐ।

**व्याख्या** – समाज च फैली दी आपराजी करण बद्धी बेरोजगारी करी परेशान आम नौजुआन दा मजाक उड़ांदी बुराई दी प्रतीक अवाज आखदी ऐ जे समाज च फैली दी भ्रष्ट व्यवस्था ओहदी गै देन ऐ। ओहदे शडयन्त्रें दे चलदे आम लोकें दी सोच समझ कम्म करना बंद करी गई दी ऐ जेहदे चलदे, ओह लोक ओहदे शडयन्त्रें बारै नेई जानी पांदे ते उंदा शकार होंदे रौहन्दे न। एह अवाज सत्ता च बैठे दे सत्ताधारियों दी प्रतीक ऐ जेहड़े कुर्सी लेई आम लोकें दा शोशन करदे न। अपनी कुर्सी उप्पर बने रौहने लेई समाज च दंगे फसाद करदे न जेहदे चलदे निर्दोश लोकें दा लहू सड़कें उप्पर बगदा ऐ पर इ'नेंगी कोई फर्क नेई पौंदा। इन्दे लेई एह सब किश तमाशा ऐ अपनी सत्ता गी बचाई रखने दा।

(ग) 'दना सोचो ते स्हेई' नाटक दे गद्यांश दी सप्रसंग व्याख्या

"तूं समझदा की निं। हून जमाना बदली गेदा ऐ। तू मेरे अल गै दिक्खी लै। सारा किश जागतें पर सुट्टी दिते दा ऐ। स्याही करन, सफेदी करन। हा सलाह पुछन तां पिच्छे निं हटना ते अपने शैल साम्बे दा सब किश।"

(सफा-9)

- संदर्भ** – प्रस्तुत पंक्तियां पाठ्यक्रम च लग्गे दे नाटक संग्रह 'अपनी डफली अपना राग' च संकलित 'दना सोचो ते रहेई' नाटक च लेतियां गेदियां न। इस दे नाटककार मोहन सिंह होर न।
- प्रसंग** – एह प्रसंग उस बेल्ले दा बखान करदा ऐ जिसलै सुवधा नांS दा पातर ते ओहदी घरैआहली अपने बच्चें दे अपनी मुताबिक जिन्दगी जीन देने दे हकै च नेई लब्बदे। ओह ते अपने बच्चें गी अपनी मर्जी कन्नै सह बी नेई लैन देना चांहदे। तां उं'दी इस सोच पर सुवधा राम दा दोस्त (इ)तराज जतांदा ऐ ते उं'नेगी बदलदे जमाने बारै अवगत करांदे होई अपनी सोच बदलने बारै आखदा ऐ।
- व्याख्या** – इस व्याख्या च रूढ़िवादी विचारधारा दा खण्डन कीता गेदा ऐ जेहड़ी अपने बच्चें गी कुसै बी चाल्ली दी आजादी दे नेई देने दे हकै च ऐ। एहदे च बदलदे जमाने दी नब्ज पन्थानदे होई जागतें गी मान-सम्मान देने दी गल्ल कीती गेदी ऐ। एहदे कन्नै एह बी आखेआ गेदा ऐ जे घरै दियें जिम्मेदारियें गी अपनी संतान उप्पर सुट्टियै उंदा मार्गदर्शन करना चाहिदा ऐ नां के उं'दी सोचने समझने दी शक्ति गी टोक्का-टाक्की करियै खत्म करना चाहिदा।

## अभ्यास

‘अपनी डफली अपना राग’ नाटक संग्रह चा किश होर गद्यांश –

- हं-हं-हं। खरा होआ तुस हंसमुख होई गे,  
सारे गै होई गै मखोली,  
पर, इस बेल्लै टिच्चां करदे शरम निं औंदी, शरम  
निं औंदी। कदें कदालै दिन औंदा।  
रोज ते नेई अस टुरे दे रौहदे। (सफा – 13)
- “बिल्कुल नेइयो। बिल्कुल नेइयो, तुस जालो-खाले दी अग्गी च कैह सड़ना। चुड़ी-चुड़ियै कैह मरना। फक्के कैह रौहना, अस कैहदे आस्तै आं तेरी सोह साढे होंदे तुसें गी कोई कष्ट होई जा तां पही साढा ते जीना गै अकार्थ होई जाहग।” (सफा – 21)
- “नो वेकैसी, नो वेकैसी, सुनी-सुनी मेरे कन्न पक्की गे न जगहा निकलदियां न। दरखास्तां बी होंदा लगदियां न ते उने दरखास्तें च साढे नांS दी दरखास्त बी होंदी ऐ पर नतीजा कृ नौकरी ते जंदी गै उसदे कन्नै पंजी दा कागज ते एटैसटिड कापियां बी जंदियां न। पही होर जगहा निकलदियां, होर दरखास्तां लखोंदियां होर भुक्ख नंग पौंदी ऐ।” (सफा – 41)

4. "मौके दी ताड़ च हा, जि'यां आकखो उमरी दा पट्टा लखाइयै आए दा ऐ चल तेरी इब्बी गल्ल मनी लेई। में तेरियां पिछलियां सारियां गलतियां भुल्ली जन्ना। पर हून-हून के सोचेआ तूं। हून ते मौका बी ऐ ते मौके गी साम्बने आह्ला इक अनमोल आदमी बी तुगी लब्बी गोआ ऐ।" (सफा - 54)
5. "भई उसलै इन्नी समझ नेही। ते कन्नै एहकड़ियां शकीनियां थोहड़ियां हियां। बद्ध कोला बद्ध भाण्डे टिंडे ते मंजे-बिस्तरे ते हून हद्द गै पटोई गई दी ऐ। हून ते ब्याह बपार बनियै रेई गेदे न।" (सफा - 93)
6. "सब किश दिक्खी सुनियै जातै च घुंड़नियां पाई लैचै किश नेई बोलचै, किश नेई, रानी पढ़ना चाहंदी ऐ, मैं कम्म करना चाहना भाबी चाह पूरे करना चाहंदी ऐ - ऐ ते तुसकृ तुस बी ते सुखा साह लैना चाहंदे ओ कृ।" (सफा - 106)

**M. A. DOGRI**

---

**C.No. DOG 406**  
**SEMESTER - IV**

**UNIT – II**  
**LESSON – 3, 4, 5**

---

● **उद्देश्य**

1. इस यूनिट दे अर्न्तगत त्रै पाठ बनाए गेदे न।
2. त्रिये पाठ च कूंशजादी नाटक दा कथानक, पात्तर-चित्रण ते रस दे आधार उपर मूल्यांकन कीता गेदा ऐ।
3. चौथे पाठ च लोकशैली दे आधार उपर नाटक दा मूल्यांकन कीता गेदा ऐ।
4. पंजमें पाठ च कूंशजादी नाटक दे नाटककार दे व्यक्तित्व ते कृतित्व उपर प्रकाश पाया गेदा ऐ।
5. विद्यार्थी इ'ने पाठें दा गूढ अध्ययन करियै कूंशजादी नाटक दा ज्ञान हासल करी सकडन।

‘कूशजादी’ नाटक बारै सुआल

श्री जितेन्द्र शर्मा हुन्दे नाटक ‘कूशजादी’ च इक ऐसी बेबस ते लाचार कुड़ी दा वर्णन होए दा ऐ जिसी हासल करने आस्तै विद्दां ते शाह जनेह कपटी लोक हर सम्भव कोशिश करदे न पर खीर च उनेंगी पछताना पौंदा ऐ।

रूपां मां म्हेटर कुड़ी ऐ ओहदा पिता दीनू उसी माता-पिता दोनं दा प्यार देइयै ओहदी पालमां करदा ऐ। पर उसी एह बी जतान्दा रौहदा ऐ ओहदे कारण गै ओहदी मां दा काल होआ हा। एह गल्ल रूपां नेई स्हारदी ते इक दिन दरेआ च छाल मारी दिंदी ऐ ते बिद्दां उसी बचाई लैदा ऐ ते बदले च दीनू थमां रूपां दा हत्थ मंगदा ऐ। ओहदा पिता उसी पैहले गै नां करी दिंदे ऐ पर बिद्दां उसी अपनी गल्लें च इस चाल्ली पलचांदा ऐ ते उसी बचन देना पेई जंदा ऐ। इस शर्त पर जे ओह अपने सारे बुरे कर्म छोड़ी देग। दीनू ओहदी गल्लें च आइयै अपनी मासूम धीऽ दा हत्थ देने लेई राजी होई जंदा ऐ। रूपां बची जंदी ऐ पर ओहदी हालत बिगड़दी जंदी ऐ। जिस करी सारे ओहदे पिता गी सलाह दिंदे न जे रूपां गी तौले शा तौले शैहरे दे हस्पतालै च लेई जान तां जे उत्थें ओहदा शैल चाल्ली ने लाज होई सकै। शाह इस गल्ला दा पूरा-पूरा फायदा लैदा ऐ। ओह दीनू दी आर्थिक स्थिति गी चंगी चाल्ली जानदा ऐ तां गै ओह दीनू गी दौ सैकड़ें रुपए दिंदे ऐ। ते ओहदे कशा रूपां दा हत्थ मंगदा ऐ। दीनू अगै गै बिद्दां गी बचन देई चुके दा होंदा ऐ ते पही शाह गी बी बेबसी च हां करी दिंदे ऐ। दीनू रूपां गी लेइयै शैहर जाने दी तयारी करदा ऐ। तोआहीं बंसी बी उंदे कन्नै जाने लेई तयार होई जंदा ऐ। ओह अपनी सारी फसल इयां गै सुट्टियै कुसै लुब्ध-लालचै बगैर उंदी मदद करदा ऐ। ओह अपनी दांदा दी जोड़ी तगर बी बेची ओड़दा ऐ। ओह बिद्दां ते शाह आह्ला लेखा दीनू अगै कोई शर्त नेई रखदा। पूरा म्हीना शैहर रेहियै रूपां दी टैहल-सेवा करदा ऐ। खीर ठीक होइयै रूपां घर औंदी ऐ। बिद्दां ते शाह जनेह कपटी ते लालची लोक उसी पाने लेई झगड़ा पाई दिंदे न। तां उंदा झगड़ा मताने लेई ग्रांऽ च पंचैत बलाई जंदी ऐ। सबै बड़े गै परेशान होंदे न कीजे दीनू ने बिद्दां ते शाह जनेह बुरे लोकें गी बचन दिते दा ऐ जिन्दे शा छुटकारा पाना बड़ा गै मुशकल होई जंदा ऐ।

रैहमतां दीनू दी गुआंढन ऐ। रैहमतां ते रूपां दी मां नेई होंदे होई अपना दुद्ध पलेआए दा होंदा ऐ। ओह उसी अपनी संतान आह्ला लेखा हिरख करदी ऐ। ओह दीनू गी रूपै बारै इक बी गल्ल नेई आक्खन दिंदी। ओह बिद्दा ते शाह दी बुरी नियतें गी चंगी चाल्ली जानदी समझदी ऐ तां गै ओह उंदे थमां रूपां दा छुटकारा कुसै बी चाल्ली करोआना चांहदी ऐ। पंचैत बाँहदी ऐ तां पंत होर दीनू गी पूरी गल्ल पुच्छदे न, दीनू दी सारी गल्ल सुनियै पंत होर बी बड़े परेशान होई जंदे न। ते पही न्यांऽ करने लेई सभनं गी ‘कूशजादी’ दी कथ सनांदे न।

इक बारी देर भाबी दी बनाई दी रुट्टी दी निन्देआ करदा ऐ तां भाबी उसी हास्से च मीहना मारदी ऐ जे ओहदे'शा इयै जनेही गै बनदी ऐ जेकर शैल पकोआन खाने न तां ओह कूशजादी गी ब्याहइयै लेई आवै। देरै गी भाबी दी गल्ल बड़ी चुभदी ऐ। ओह रुट्टी छोड़ियै कूशजादी गी ब्याहन टुरी पौंदा ऐ। जंगल जाड़े च जिसलै उसी इक साधु सतमां दिन अपनी अपनी अकखी खोलदा ऐ ते अपने अगगे पिच्छे होई दी सफाई ते धूफै दी बासना सूंगियै ओहदा मन प्रसन्न होई जंदा ऐ। ओह अपनी जटाएं दे बाल दिंदा ऐ जेहदे कन्नै ओहदी किस्मत बदली जंदी ऐ। ते ओह कूशजादी कोल पुज्जियै गभरु साधु दे दिते दे बाल गी कूशजादी दे गल पेदे दे हार कन्नै ब'न्नी दिंदा ऐ। ते हार इंसना आह्ला लेखा गल्ल-बात करन लगी पौंदा ऐ। जे अ'ऊं कूशजादी दे गले च बारां बरे दा पेदा आं अ'ऊं कुत्थुआं कत्थ सनानी ऐ। ते गभरु गी आखदा से तूं फिरने-टुरने आह्ला माहनू ऐ तां गै कोई शैल कत्थ सनां। तां फही गभरु त्रै दोस्तें दी कत्थ सनांदा ऐ। तरखान, चित्रकार ते सौगनिया त्र'ऊं मित्तरें दी कत्थ सनांदा ऐ। त्रै मित्तर हांदे न त्रैवे परदेसे थमां घर परतोआ दे होंदे न। जे इक घने जंगल च उनेंगी रात पेई जंदी ऐ तां ओह त्रैवे सलाह करदे नजे राती त्रैवे मित्तर बारी-बारी पैहरा देउन। इस चाल्ली नै रात बी सखल्ली कटाई जाहग ते कन्नै गै जंगली जनौरै'शा बी बची जागे। सारै'शा पैहले तरखान पैहरा दिंदा ऐ। ओह अपना समा बतीत करने लेई सुन्दर कड़ढियै चित्तर बनाने आहली चित्तर फलक घड़दा ऐ ते फही चित्रकार दी पैहरा देने दी बी बारी औंदी ऐ तां ओह इन्ना शैल चित्तर फलक सामने दिक्खियै इक सुन्दर ते मन मोही लैने आहली नर्तकी दी मूरत बनांदा ऐ। फही जिस बेल्लै पैहरा देने दी बारी सौगनिये दी औंदी ऐ तां ओह अपने सामनै इ'न्नी शैल मूर्ति गी दिक्खियै ट'ऊं होई जंदा ऐ। ओह अपनी मैतर-विद्या दे जरिए ओहदे च प्राण पाई दिंदा ऐ। जिस बेल्लै उस नर्तकी गी तरखान ते चित्रकर दिखदे न तां ओह बी हरान होई जंदे न। फही उ'नें त्रौनें दे बश्कार उस नर्तकी लेई लड़ाई होई जंदी ऐ। सब्भै अपने-आप गी इक दूए'शा श्रेष्ठ मनदे न ते नर्तकी गी पाने दी कोशिश करदे न।

फही गभरु हारै गी पुच्छदा ऐ जे नर्तकी दा असली हकदार कु'न ऐ। तां हार सौगनियें गी असली हकदार आखदा ऐ। पर कूशजादी हारै दी गल्ले'शा सैहमत नेई होंदी ते उसी आखदी ऐ जे सौगनिया ते लालच च आइयै उसी राजमैहले च नचाना चांहदा ऐ पर चित्रकार बिना कुसै लालचै मूजब ओहदी तस्वीर बनांदा ऐ।

ओहदे परैत गभरु दूआ बाल कूशजादी द पलंगै दे पावे कन्नै बन्नदा ऐ। तां फही गभरु उसी कोई होर कत्थ सनांदा ऐ पलंगै दी आवाज औंदी ऐ कूशजादी ने बाहर बरे दा डाहे दा जे हून तोड़ी सलेआ गै नेई। इक हा राजा ओहदे घर संतान नेई ही होंदी राजा अपने राज-पाठ दे कम्मं च गै रुज्जे दा रौंहदा तां रानी अपने देरै कन्नै जाई सुक्खना सरीनियां करदी ऐ। साधु सैंतें दी सेवा करदी ऐ ते प्रभु दी किरपा कन्नै ओहदे घर इक कन्या दा जन्म होंदा ऐ। राजे दा कपटी बजीर राजे दा ऐसे कन्न भरदा ऐ जे आखदा ऐ राजकुमारी उंदे निक्के भ्राऽ दी सन्तान ऐ राजा अपनी रानी ते निक्के भ्राऊ दौनें गी खत्म करी दिंदा ऐ राजे गी दौनें दा ऐसा पाप लगदा ऐ राजे गी कोढ़ पेई जंदा ऐ। राजकुमारी बड्डी होई गेदी होंदी ऐ। ओह अपने पिता दी शैल चाल्ली कन्नै सेवा करदी ऐ ते फही इक बरे बाद राजा शैल नरोआ होई जंदा ऐ। राजा अपनी धीऊ द रिश्ते तुप्पने गितै त्र'ऊं परोहते गी बक्ख-बक्ख नगरिये च भेजदा ऐ। त्रैवे बक्खरे-बक्खरे नगरे च जाइयै राजकुमारी मुताबक वर तुप्पियै ब्याह

दा म्हूर्त कढाइयै वापस परतोई औदे न। परमेश्वरै दी करनी त्रैवै परोहत इक्क दिनै दी लग्ग कढाई ओड़दे न पही तैह् दिन त्रैवे जानियां मैहलें आई जंदियां न। राजा बड़ा गै परेशान होई जंदा ऐ। पिता गी परेशान दिक्खियै राजकुमारी बलदी चिखा च छाल देइयै प्राण देई ओड़दी ऐ। राजकुमारी दी एह् खबर त्रौने राजकुमारें गी लगदी ऐ तां ओह् त्रैवे बी बलदी चिखा अल्ल दौड़दे न। इक राजकुमार चिखा च छाल मारी दिंदा ऐ, दूआ उत्थै गै बेहियै धूनी रमाई लैंदा ऐ। ते त्रीआ राजकुमारी गी जींदा करने लेई अमरतै दी तपाशै च टुरी जंदा ऐ। त्रीआ इक साधु आ'शा दौं बैहतर सुन्ने दि'ये मोहरे दे बदलै अमर लेई औंदा ऐ। अमरत आनियै ओह् चिखा दे आलै-दुआलै अमरत दे छिट्टे करांदा ऐ। तां राजकुमारी दे कन्नै-कन्नै ओह् राजकुमार बी जीवित होई जंदा ऐ। पही त्रैवे राजकुमारी गी अपना-अपना साबत करने आस्तै लड़ाई करन लगी पौंदे न। हर कोई दुए शा अपने-आप गी काबल आखदा ऐ। ते पही गभरु कूंशजादी दे पलंगें शा कूंशजादी दे स्हेई दावेदार बारै पुच्छदा ऐ। कूंशजादी उसी निक्खरदे होई आखदी ऐ जे त्रीआ राजकुमार ते अपनी माता दा कोढ ठीक करने लेई उसी ब्याहना चांहदा हा जे उन्नै राजकुमारी दी कोढ ठीक करने आहली सिफत सुनी दी होंदी ऐ। पैहला राजकुमार बुजदिल होंदा ऐ जेहड़ा राजकुमारी गी खत्म होंदा दिक्खियै छाल मारी दिंदा ऐ ते बाद च बाहर निकलने दी बड़ी कोशिश करदा ऐ पर सफल नेई होंदा। कूंशजादी आस्तै स्हेई वर दे रूपै च दूआ राजकुमार ऐ की जे ओह् बिना कुसै लुब्ध-लालचै दे राजकुमारी कोल धूनी लाइयै बेही जंदा ऐ।

ओह्दे परैत गभरु त्रीआ बाल कडिढयै दरोखी कन्नै ब'न्ददा ऐ। गभरु दीये गी कथ सनाने लेई आखदा ऐ। दीआ गभरु गी आखदा ऐ कूंशजादी ने उसी बाहरें ब'रे दा बाल्ली रक्खे दा ऐ ओह् कथ कुथूं सनाऽ? ओह् गभरु गी आखदा ऐ जे आपूं गै शैल जनेही कथ सना। कीजे फिरने-टुरने आहला माहनू गै शैल कथ सनाई सकदा ऐ। गभरु उसी कथ सनान लगदा ऐ। गरीब करसान दी नरातूं नाऽ दी कुड़ी होंदी ऐ। नरातू बड़ी गै खूबसूरत ते गुणवान होंदी ऐ। ओह् बड़लै रोज पड़ोपी दाने चक्की पींदी ते ओह्दी रुटिटयां बनाइयै खेतरे टुरी जंदी ऐ। रस्ते च धरमू नांऽ दा जागत रोज उसी दिखदा ऐ धरमू मनै-मन नरातू गी चांहदा ऐ, पर कदें बुआसरदा नेई। इक दिन बगदे पानी च नरातू सूई दी कुतिया गी दिखदी ऐ ओह्दे कन्नै ओह्दे त्रै कतरु बी होंदे न। नरातू गी कुत्ती उप्पर बड़ा क्यास होंदा ऐ तां ओह् अपने हिस्से दी रुट्टी उसी पाई ओड़दी ऐ। कुत्ती गी मजे कन्नै रुट्टी खंदे दिक्खियै मनै च बड़ा संदोख बुझदी ऐ। पही नरातू बाई च बाहर निकलदी ऐ ओह्दे पैरें च इक लिशकदा हार पलचोए दा होंदा ऐ। नरातू पराई मानत समझियै उसी उत्थै सुट्टन लगदी ऐ। आकाशवाणी होंदी ऐ – “हार गल पाई लै, एह् पुन्न देवता दा वरदान ऐ। जा इस प्रतापै मूजब तू जिस लकड़ी गी छूहगी ओह् चंदन बनी जाहग मुड़दे दे सिरैर हत्थ फेरगी ओह् जींदा होई जाहग।” नरातू दे उस हारै दी खबर चपासै होई जंदी ऐ। तां हर कोई ओह्दे कन्नै ब्याह करने लेई तयार होई जंदा ऐ। इक'शा इक राजकुमार उसी ब्याहने लेई तयार होई जंदा ऐ। नरातू दा पिता बड़ा जोर लांदा ऐ पर नरातू हाम्मी नेई भरदी। नरातू दे शरीक पिस्सूं पेई जंदे न ओह् फफ्फे कुट्टने दे जरिए ओह् करामाती 'हार' नरातू'शा लेई लैंदे न। थोड़े चिरै परैत नरातू बेहोश होई जंदी ऐ। पही उठदी गै नेई। हर कोई जतन करदा ऐ पर ओह् ठीक नेई होंदी। ओह् त्रैवे राजकुमार, शाहूकार ते धरमू बक्खरी-बक्खरी बत्ता उप्पर टुरी पौंदे न। धरमू इक थाहरै इक बड़डा सप्प ते बिच्छू लभदे न ओह् बिच्छू गी मारी दिंदा ऐ तां सप्प

राजकुमारी दे रूपै च आई जंदा ऐ। ओह राजकुमारी धरमू गी सनांदी ऐ ओह बिच्छू इक राक्षस हा। जेहड़ा उसी मारने लेई पिच्छे लग्गे दा ऐ जिस थमां बचने लेई उन्नै सप्प दा रूप धारण कीता हा। राजकुमारी धरमू'शा खुश होइयै उसी नागराज कोल लेई जंदी ऐ। नागराज धरमू गी मणि दिंदा ऐ। राजकुमार ने दस्स थैलियां मोहरां देइयै उड़्डने आहली फूटी आहनी दी होंदी ऐ। शाहूकारै ने इक करामाती शीशा आहने दा होंदा ऐ। 'धरमू' नरातू गी दिले थमां चांहदा ऐ ते इ'यै कामना करदा ऐ नरातू तौले'शा तौले ठीक होई जा। लोक चिखा उप्पर नरातू गी अग्ग छुहान गै लगदे न धरमू हारै चा झूठा मनका कड़िदयै पारस मणि जड़ी दिंदा ऐ। दिखदे गै दिखदे नरातू उट्ठी खड़ोंदी ऐ। सब्भै भूत-भूत करदे उत्थुआं नस्सी जंदे न। फही त्रौनें बश्कार लड़ाई होन लगी पौंदी ऐ। उ'न त्रौने चा धरमू गै उसी कुसै लुब्ध लालचै बगैर ब्याहना चांहदा हा। नरातू दा स्हेई हकदार धरमू ऐ। ते गभरु बी अपने इम्तेहान च पास होई जंदा ऐ। खीर उसदा ब्याह कूंशजादी कन्नै होई जंदा ऐ। जिस बेल्लै पंत हुंदियां एह सारियां कथां समाप्त होंदियां न तां बिददां ते शाह दौनें दी शामत आई जंदी ऐ बिददां पंत हुंदे आसेआ सुनाई गेदियें कथें गी शैल चाल्ली समझी जंदा ऐ। पर शाह दे किश बी पल्ले नेई पौंदा। पंत होर अपनी ज्ञान दियें गल्लें कन्नै बिददां दे मूहैं सब किश सच्च बलोआई लैंदे न। ओह अपने मूहैं गै सनांदा ऐ उसी ब्याहने परैंत उसी खज्जल करना चांहदा हा, मते'शा मते पैसे कमाना चांहदा हा, सब्भै एह गल्ल सुनियै बड़े गै हरान होई जंदे न ओहदे परैंत शाह दी बारी औंदी ऐ, पर शाह आपूं गै अपने हत्थ खड़े करी लैंदा ऐ। सभने थमां माफी मंगदा ऐ कीजे बिददां ने एह सनाई ओड़े दा होंदा ऐ ओहदी लाड़ी कुदरती मौती नेई उसी शाह ने आपूं मारेआ ऐ – शाह नामर्द ऐ जिसकरी ओहदी पत्नी दे सरबन्ध कुसै होर कन्नै होंदे न जिसकरी ओह उसी मोहरा देई ओड़दा ऐ।

खीर च दीनू पंत होरें गी रूपां दा स्हेई वर तुप्पने लेई आखदा ऐ। तां पंत होर रोहें होइयै दीनू गी आखदे न बंसी जनेह होनहार जागतै गी सामनै दिक्खियै होर कुसै बारै सोचा करदे न। खीर च सब्भै राजी होई जंदे न बिददां गी जेल होई जंदी ऐ रूपां ते बंसी दा ब्याह पक्का होई जंदा ऐ, हर पाससै खुशी दी लैहर दौड़ी जंदी ऐ।

**‘कूशजादी’ नाटक च पात्र-चित्रण**

पात्र बी द’ऊं चाल्ली दे होंदे न मुख पात्र ते गौण पात्र। मुख पात्र गी प्रधान पात्र बी आखेआ जंदा ऐ ते इंदा सरबंध नाटक दी कथा दे फल कन्ने जुड़े दा होंदा ऐ। आम तौरा उप्पर मुख पुरश पात्र गी नायक ते मुख स्त्री पात्र गी नायिका दी संज्ञा दिती जंदी ऐ। आमतौरा उप्पर गौण पात्र दा इ’न्ना असर नेई होंदा पर कदे-कदे कुसै नाटक च किश-इक पात्र नेह निकली औंदे न। जिंदी छाप नायक-नायिका आह्ला लेखा जां उंदे कशा बिन्द घट्ट बनी दी रौहदी ऐ ते कथानक गी सिर चाढ़न च बी उंदा काफी हत्थ होंदा ऐ।

भारतीय नाट्य परम्परा च स्थाऽ दे मुताबक च’ऊं किस्में दे नायकें दा जिक्र कीता गेदा ऐ।

**धीरोदात**

इस श्रेणी दा नायक बड़ा शक्तिशाली, गम्भीर, सूझ-बूझ टिके-जौले दा सैहनशील, अपनी तरीफ आपूं नेई करने आह्ला, दयालु ते अटल निश्चे आह्ला होंदा ऐ।

**धीर ललित**

इस जमात च नायक निश्चिन्त रौहने आह्ला, नाच-गान आदि कलाएं च दिलचस्पी रखने आह्ला, भोग विलासी, कोमल मन ते ठण्डे स्थाऽ आह्ला लेखा होंदा ऐ।

**धीर प्रशांत**

सधारण गुणें ते शांत स्थाऽ आह्ला नायक वीर प्रशांत नायक खोआंदा ऐ।

**धीरोद्धत**

इस किस्म दा नायक घमण्डी, कपटी, चपल, अपनी तरीफ आपूं करने आह्ला अहंकारी, गुस्से आह्ला, माया-जाल च मस्त रौहने आह्ला होंदा ऐ।

**दीनू**

कूशजादी नाटक च मुख पात्र ऐ। दीनू इस नाटक दे इक ऐसे लाचार पिता दे रूपै च साह्दे सामने औंदा ऐ। जिसी हालात दे हत्थें मजबूर होइयै अपनी गौ जनेही धीऊ दा दुख झल्लना पौंदा ऐ। दीनू बड़ा गै गरीब

ऐ, ओहदी त्रीमत परलोक सिधारी गेदी ऐ। अपनी इक्कै-इक्कै धीऽ रूपां कन्नै ओह अपनी जिंदगी बसर करा करदा ऐ। पर किस्मत उंदे कन्नै इक्क ऐसा खेढ खेढदी ऐ जे उसी बड़िये मुशकलें दा सामना करना पौंदा ऐ।

रूपां इक दिन दरेआ च रूढ़ी जंदी ऐ तां बिद्दां नेहा कपटी माहनू उसी बचांदा ऐ। इस करी ओह ओहदियें मिठियें-मिठियें गल्लें नेहा फसदा ऐ जे बाद च उस गल्ला दे निबटारे लेई पंचैत बठानी पौंदी ऐ। बिद्दा दीनू गी विश्वास दोआंदा ऐ जे ओह अपने बुरे कम्म छोड़ी देग। दीनू ओहदियें गल्लें उप्पर जकीन करी लैदा ऐ पर बाद च उसी बड़ा गै पछताना पौंदा ऐ। की जे ओह आपूं बड़े गै साफ दिलै दा माहनू ऐ। इस करी ओह दूरे गी अपने आंगर समझदा ऐ। रूपां बची ते जंदी ऐ पर ओहदी हालत दिनो-दिन खराब होंदी जंदी ऐ। शैहर दे हस्पतालै च लेई जा तां जे उत्थै शैल चाल्ली ने ओहदा लाज होई सकै। पर दीनू दी आर्थिक स्थिति बड़ी गै माड़ी ऐ। ओहदी इन्नी समर्था नेई जो ओह शैहर जाइयै ओहदा लाज कराई सकै। ओहदी इस मजबूरी दा फायदा शाह जनेह लालची ते कपटी लोक पूरा-पूरा लैदे न। ओह दीनू गी दो सौ रुपए मदद दे तौरा उप्पर दिंदा ऐ ते ओहदे बदले च उसी मजबूर करियै रूपां दा हथ्य दा वचन लेई लैदा ऐ। दीनू बिद्दां गी अगें गै वचन देई बैटे दा होंदा ऐ।

दीनू दी मदद बंसी कुसै स्वार्थ बगैर करदा ऐ दीनू उसी बार-बार एह गल्ल जतलाई दिंदा ऐ जे रूपां बारै ओह ख्याल नेई करै कीजे ओह ओहदा हथ्य अगें कुसै होर गी देई बैटे दा ऐ। पर ओह उंदी हर चाल्ली कन्नै मदद करदा ऐ। आखरकार बिद्दां ते शाहकार नेह कपटी लोक अपनी असली औकात दसदे न ते दीनू गी तंग करन लगी पौंदे न। ओह घाबरी जंदा ऐ ते घाबरियै पंचैत बलाई लैदा ऐ। खीर पंत होर उंदी मुशकलें दा नबटारा करदे न तां सभनें गी साह फिरदा ऐ। खास करियै रूपां गी। खीर च दीनू अपनी धीऊ दा रिश्ता बंसी कन्नै करी दिंदा ऐ।

## बंसी

कूंशजादी नाटक दा मुख्य पात्तर ऐ एह इक ऐसे निःसुआर्थ माहनू दे रूपै साढे सामने औंदा ऐ, जेहड़ा अपने नुक्सान दी परवाह नेई करियै दीनू नेह मजबूर माहनू दी मदद खीर तगर करदा ऐ। बंसी खेती-बाड़ी दा कम्म करदा ऐ। ओह मनोमन रूपां गी चांहदा ऐ पर कदें बुआस्सरदा नेई। रूपां दरेआ च रूढ़ी जंदी ऐ ते ओहदी बिगड़दी हालत दिक्खियै जिस बेल्लै उसी शैहर लेई जाना पौंदा ऐ तां हर कोई अपने-अपने मतलब लेई ओहदी मदद मंगदा ऐ। पर बंसी इक ऐसा माहनू ऐ जेहड़ा बगैर कुसै सुआर्थ दे दीनू ते रूपां दी मदद दिले थमां करदा ऐ। ओहदी फसल खेतरे च तयार खडोंती दी होंदी ऐ। जिसी ओह अद्द मझाटै खडोते दे छोड़ियै उंदे कन्नै शैहर चली जंदा ऐ। अपने दांदै दी जोड़ी गी बी बेची ओड़दा ऐ। दीनू बार-बार उसी एह गल्ल सनाई दिंदा ऐ जे ओह अपने मनै च भुल्लियै बी रूपां दा ख्याल नेई करै की जे ओह रूपां दा हथ्य कुसै होर गी देने दा वचन देई चुक्के दा ऐ। इन्ना सब किश होने दे बावजूद बी ओह रूपां आस्तै हिरखी भावनाएं गी दबाई रखदा ऐ ते इयै चांहदा ऐ जे रूपां जित्थै बी र'वै खुश र'वै। पंत होर पंचैत च त्रै-चार नेहियां कत्थां सनान्दे न जेहदे राहें सभनें दियां

अक्खीं खुल्ली जंदियां न ते सारे बंसी गी रूपां दे काबल स्हेई वर दे रूपां च मित्थी लैंदे न। पंत होर दीनू दी सैंसा गी खत्म करी दिंदे न स्हेई वर दे रूपै गी बंसी नेहा गुणवान माहनू लड़ लाई दिंदे न।

## बिद्दां

इस नाटक च बिद्दां ऐसे माहनू दे रूपै च औंदा ऐ जेहड़ा अपने सुआर्थ दी खातर भोली-भाली कुड़ी दी जिंदगी खराब करने दी सोचदा ऐ, पर सफल नेई होंदा। बिद्दां इक कपटी ते लालची माहनू ऐ। ओह सरकारी छतीरिया फड़दा ऐ ते उनेंगी लोकें अगै बेचदा ऐ। चोरी करना ओहदा मुख धन्धा होंदा ऐ। रूपां जनेह दी लाचार कुड़ी गी ओह दरेआ च रुढ़दे होई इन्सानियत करियै नेई बल्के ओहदे गल च पेदी लिश्कदी चैन दिक्खियै बचांदा ऐ। ओह ओहदे गले चा चैन तोआरी लैंदा ऐ जिसलै उस चैन गी बेचदा ऐ तां शाह उसी बेवकूफ बनाइयै अपने कश सबूत रक्खी लैंदा ऐ। ते बाद च पंचैत च उस राज गी खोलदा ऐ।

बिद्दां दीनू गी अपने एहसाने हेठ पूरी चाल्ली दबाने च कामजाब होई जंदा ऐ। ओह अपनी मिट्ठी-मिठियें गल्लें च पलचाई लैंदा ऐ जे दीनू गी ओहदे पर बिन्द बी शक नेई होंदा। ओह रूपां दा हत्थ उसी देने दा वचन देई ओड़दा ऐ। ओह बी एह आक्खी ओड़दा ऐ जे ओह अपने सारे बुरे कम्म छोड़ी देग। जिस बेल्लै रूपां शैहरा वापस परतोंदी ऐ ओह अपनी असलियत दस्सन लगी पौंदा ऐ। दीनू गी रूपां दा हत्थ ओहदे हत्थ देने गी तंग करन लगी पौंदा ऐ। दीनू दुखी होइयै पंचैत बलान्दा ऐ तां बिद्दां उत्थै बी उट्ठ-नट्ठ करदा ऐ पर अपने मकसद च कामजाब नेई होंदा।

## शाह

‘कूशजादी’ नाटक च ‘शाह’ इक ऐसे रूपै च सामने औंदा ऐ जेहड़ा अपनी कमजोरी गी छपाने लेई अपनी लाड़ी (पत्नी) गी जानू मारी ओड़दा ऐ। शाह सूदखोरी दा कम्म करदा ऐ। ओह लोकें गी सूद उप्पर पैसे दुआर दिंदा ऐ। ओह लोकें गी इस चाल्ली बेवकूफ बनांदा ऐ जे लोकें दा कर्जा मुक्कने उप्पर गै नेई होंदा। शाह नामर्द ऐ जेहदा पता ओह कुसै गी बी नेई लगन दिंदा। ओहदी घरैआहली दे होर कुसै कन्नै नाजायज सरबन्ध होंदे न, जिसकरी ओह उसी मारी ओड़दा ऐ। रूपां गी जिस बेल्लै हस्पताल लेना पौंदा ऐ, दीनू दी आर्थिक स्थिति बड़ी माड़ी होंदी ऐ उन्नै शाह‘शा दोआर लैते दा होंदा ऐ। शाह इस मौके दा पूरा-पूरा फायदा लैंदा ऐ। ओह दीनू गी दो सैंकड़े दोआर जबरदस्ती देई दिंदा ऐ। दीनू पैहले ते बड़ा सोच-बचार करदा ऐ पर धीऽ दी जिन्दगी बारै सोचियै ओह पैसे रक्खी लैंदा ऐ। शाह दीनू‘शा ओहदी धीऽ दा रिश्ता मंगदा ऐ। दीनू परेशान होई जंदा ऐ कीजे ओह बिद्दां गी अगें गै वचन देई चुके दा होंदा ऐ।

शाह बड़ा कंजूस होंदा ऐ ओहदी उमर बी हून काफी होई चुकी दी ऐ। लाड़ी दे मरने परैत ओहदे घरा दा सारा कम्म नौकरानियां करदियां न। उसी म्हेशा इस गल्ला दा गै झूरा लगा रौहदा ऐ ओहदी इन्नी कमाई इ‘यां गै जा करदी ऐ। रूपां कन्नै ब्याह बी उसी उस लालच मूजब करना चांहद ऐ तां जे ओहदी गृहस्थी बसी

જાહગ। દૂઆ ઓહ્દે પૈસે બી બચી જાહન। જિસ બેલ્લૈ પંત હોર ‘કૂંશજાદી’ દી બનાઈ દી રુટ્ટી દી તારીફ કરદે ન ઓહ્ રૂપાં દે હત્થા બને દે બન્ન-સબન્ને સલૂને દા નંદ લૈને દે સુખને દિક્ખને લગી પૌંદા એ। પર ઓહ્દિયેં સારિયેં મેદેં પર ડસ બેલ્લૈ પાની ફિરી જંદા એ જિસ બેલ્લૈ બિદદાં અપના રસ્તા સાફ કરને લેઈ ઓહ્દી અસલિયત સારેં ગી સનાઈ દિંદા એ।

શાહ કપટી તે લાલચી બેશક્ક એ પર થોડ દિલૈ આહલા માહનૂ બી એ। બિદદાં દા બુરાહાલ દિક્ખિયૈ ઓહ્ અપને હત્થ પૈહ્લે ગૈ ખડે કરી લૈંદા એ। કંજૂસ તે ઓહ્ એ બાર-બાર પંચૈત સામને અપને દો સૈંકડે દા રોના રૌંદા એ। પર જિસ બેલ્લૈ ડસી પંચૈત સમજાંદી એ ઓહ્ ચુપચાપ ઉત્થૂઆં ટુરી જંદા એ।

## પંત

‘કૂંશજાદી’ નાટક ચ પંત ઇક સમજાદાર, જ્ઞાની તે ગુણવાન માહનૂ એ। પંત હોર સરપૈંચ દા કમ્મ કરદે ન। હર કોઈ કચૈહરી દે ચક્કરે’શા પંચૈત ચ પંત હુંદે કોલા અપના ફૈસલા કરોઆને ચ ભલાઈ સમજાદે ન। ગ્રાં દા હર માહનૂ પંત હુંદી બડી ઇજ્જત કરદા એ। ઓહ્ ઇન્ને સમજાદાર ન જે કોઈ બી ડન્દી ગલ્લા ગી નેઈ પરતાંદા। ડંદી આક્ષી દી ગલ્લ ગી હર કોઈ સિર મત્થે સમજાદા એ।

જિસ બેલ્લૈ દીનૂ રૂપાં દા સ્હેઈ ફૈસલા નેઈ કરી સકદા તે બિદદાં તે શાહ ડસી મતા તંગ કરદે ન તાં ઓહ્ પંચૈત બલાંદા એ। પંત હોર સારી ગલ્લા ગી સુનિયૈ સ્હેઈ ફૈસલા કરને લેઈ કૂંશજાદી તે ત્રૈ હોર કત્થાં સનાંદે ન। ડન્દે દ્વારા સનાઈ ગેદિયાં જ્ઞાન દિ’યેં ગલ્લેં ગી હર કોઈ બડે ગૈ ધ્યાન કન્નૈ સુનદા એ। સારે ડંદી સનાઈ દિ’યેં કત્થેં ગી સુનિયૈ સ્હેઈ-ગલત ગી પન્થાની લૈંદે ન। ઇત્થૂં તગર જે બિદદાં નેહ બદમાશ ગી અસલિયત સામને આઈ જંદી એ। ડીર ચ પંત હોર દીનૂ દે હકૈ ચ ફૈસલા સનાંદે ન તે ઓહ્ બંસી જનેહ નિસુઆર્થ, સમજાદાર તે ગુણવાન માહનૂ કન્નૈ રૂપાં દા રિશ્તા પક્કા કરી દિંદા એ તે ડનેંગી સુખી જીવન દા (અ)શીર્વાદ દિંદા એ।

## રૂપાં

‘કૂંશજાદી’ નાટક દી મુક્ષ પાત્તર એ, રૂપાં માં-મ્હેટર કુઢી એ ઓહ્દે આસ્તૈ ઓહ્દા પિતા તે ઓહ્દી માતા સબ કિશ એ। રૂપાં દિક્ખને ચ બડી ગૈ ડૂબસૂરત એ। ઓહ્દા સ્માઽ બડા ચંગા એ તાં ગૈ હર કોઈ ડસી ઇ’ન્ના હિરખ કરદા એ। માં નેઈ હોને કરી રૈહમતા ચાચી ડસી અપના દુદ્ધ પ્લાઝયૈ ડસી અપની ધીયે આહલા લેખા પ્યાર દિંદી એ। ઓહ્ મ્હેશા ડસી ડુશ દિક્ખના ચાંહદી એ। ઇક દિન રૂપાં દરેઆ રૂઢી જંદી એ તાં બિદદાં નેહા કપટી માહનૂ ડસી બચાંદા એ। ઓહ્ ઓહ્દી જાન બચાને ગિતૈ ઓહ્દે પિતા ગી આખદા એ જે ઓહ્ રૂપાં દા બ્યાહ ઓહ્દે કન્નૈ કરી દેયૈ। મજબૂરી ચ ઓહ્ બચન દેઈ ઓહ્દા એ। બિદદાં તે શાહ રૂપાં દી જિન્દગી ચ ઇન્ની જ્યાદા ડલબલી મચાઈ ઓહ્દે ન। જે ઓહ્ પરેશાન હોઝયૈ અત્થરૂં કેરદી રૌંહદી એ પર મૂહાં કિશ બી નેઈ બોલદી। ઓહ્ નેઈ ચાંહદી જે બિદદા નેહ કપટી માહનૂ દે લડ લગિયૈ જિન્દગી ડરાબ હોઈ જા। ઓહ્ દમે દીનૂ ગી બડા ગૈ દુખી કરી દિંદે ન। ડીર ડનેંગી પંચાયત બઠાની પૌંદા એ। રૂપાં ગી ડત્થેં બી ડંદે કરી બડા દુખી હોના પૌંદા એ। બંસી રૂપાં કન્નૈ મનોમન હિરખ કરદા

ऐ ओह चांदा ऐ जे रूपां म्हेसा खुश र'वै भामें ओह कुतै बी र'वै। ओह उ'नें दौनें दी बड़ी गै मदद करदा ऐ। खीर सच्च दी गै जित्त होंदी ऐ। रूपां दा ब्याह बंसी कन्नै होई जंदा ऐ।

### रैहमतां चाची

‘कूशजादी’ नाटक दी गौण पात्तर ऐ एह इक ऐसे पात्तर रूप च साढ़े सामने औंदी ऐ जेहड़ी बगैर कुसै लुब्ध लालच बगैर रूपां नेही मां—म्हेटर रूपां दी पालमा करदी ऐ। रैहमत चाची दा जन्म पाकदामन मौलविये दे घर होआ। बचपन मसीत च गै बतीत होआ। जिसलै बड़्डी होई तां कम्हैरे कन्नै ओहदा ब्याह होआ। ओहदा घरैआह्ला बी पक्का नमाजी हा। घरैआहले दी मौती परैत रैहमता चाची इक्कली रेईं गेई। ओहदी कोई संतान बी नेईं होंदी। जिस करी ओह रूपां गी अपनी संतान कोला बी बद्ध हिरख करदी ऐ। पर ओह कदें बी एह नेईं जतलांदी ऐ जे ओह ओहदे कन्नै बड़ा हिरख करदी ऐ। ओह कदें बी नेईं चांदा जे रूपां गी कदें बी कुसै चाल्ली दा कष्ट पुज्जै। रैहमता चाची दा दीनू बी बड़ा मान करदा ऐ उसी अपने घरै दे सदस्य आह्ला लेखा समझदा ऐ। खीर च स्हेई फैसला होने पर ओह बड़ी खुश होई जंदी ऐ। बंसी ते रूपां दौनें दी कड़माई पक्की होने उप्पर बड़ी खुश होई जंदी ऐ ते उनेंगी म्हेसां खुश रौहने दा (अ)शीर्वाद दिंदी ऐ।

### कूशजादी

इस नाटक दा मुख पात्तर ऐ। एह इक ऐसे पात्तर दे रूपै च साढ़े सामने औंदी ऐ जिसी अपनी निक्की हारी उमरी च लम्मी बमारी दा सामना करना पौंदा ऐ। कूशजादी दा जन्म होन्दे गै ओहदी मां दा सुर्गवास होई जंदा ऐ। तां राजे ने अपनी धीऊ गी बड़े लाड़—प्यार कन्नै पालेआ। ओह स्यानी होई तां राजा इक दिन शकार खेढन जंगल च जंदा ऐ तां राजा हिरणै दे भलेखै गम्भन हिरणी गी मारी ओड़दा ऐ। दिखदे—दिखदे राजे गी कोढ़ पेई जंदा ऐ। बस पही केह हा राजकुमारी पिता दी नेही भयंकर हालत दिक्खियै पत्थर—जन होई जंदी ऐ। उस दिन दे बाद ओह पूरे बारां बरे तगर एसी हालत च रौंहदी ऐ। केई चाल्ली दे लाज, स्याने दुआले लक्ख जत्न करी हुटदे न। पर कूशजादी ना बोलदी ते नां गै हिलदी ऐ। राजा नगगर च ढंढोरा फरोआंदा ऐ जो कोई कूशजादी गी त्रै बारी बुलाई देग उसी राज—पाठ ते कूशजादी कन्नै ब्याह करी दिता जाह्ग। ते जेहड़ा ऐसा नेईं करी सकड ओहदी मुंडी कप्पी दिती जाह्ग।

खीर च गभरु औंदा ऐ ओह अपने विश्वास ते चमत्कारी बावे द्वारा दिते गेदे बाल ते ओहदे शीरवाद कन्नै कूशजादी गी त्रै बारी बोलने च कामजाब होई जंदा ऐ। ओहदे बोलने दी हर पास्सै खबर पुज्जी जंदी ऐ। हर कोई एह जानने लेई उत्सुक होई जंदे न एह कनेहा माहनू ऐ जिसने ऐसा असम्भव करी दस्सेआ ऐ। खीर सभै खुश होइयै कूशजादी ते गभरु दा ब्याह होई जंदा ऐ।

**‘कूशजादी’ नाटक च रस-योजना**

भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र च त्रौ चीजें गी नाट्य दे जरूरी अंग मन्ने दा ऐ – 1. वस्तु, 2. नेता, 3. रस। इन्हें त्रौनें चा रस गी सारें कोला ज्यादा म्हत्त्व दित्ता गेदा ऐ। पर वस्तु ते नेता दा बी अपनी-अपनी थाहरा बड़ा म्हत्त्व ऐ। जिस चाल्ली कथानक नाटक लेई रीढ़ दी हड्डी दा कम्म करदा ऐ, उ‘यां गै पातर नाटक गी अगगे बधाने च कम्म करदे न। ते रस नाटक दी आत्मा ऐ। एह्दे बगैर नाटक दी कल्पना बी नेई कीती जाई सकदी। की जे जेकर नाटक गी पढ़िये पाठकें गी रस गै नेई औग तां नाटक गी पाठक पूरा पढ़ें जां दिक्खे बगैर गै छोड़ी देग। इस करी नाटक च रस सभनें शा जरूरी तत्त्व ऐ। प्राचीन समें च किश इक रसें गी गै प्रमुख मन्नेआ जंदा हा। पर आधुनिक समें च सारें गै रस अपनी-अपनी जगह पर प्रमुख होंदे न। केई बारी निक्के-निक्के संवादें गी पढ़िये बी रस ध्वनित होन लगी पौंदा ऐ। इस करी कुसै बी रस गी गौण नेई समझेआ जाई सकदा। इन्हें त्रौनें दा बक्ख-बक्ख ब्यौरा इस चाल्ली ऐ :-

कुसै बी साहित्यिक रचना दी सफलता दा अंदाजा ओह्दे चा हासल होने आह्ले आनंदभाव जां रसप्राप्ति थमां लाया जंदा ऐ। नाटक च ते इस तत्व दी होर बी मती लोड़ होंदी ऐ। ‘रस’ आस्तै नाट्यशास्त्र च ‘वृत्ति’ शब्द दी बरतून कीती गेदी ऐ। कुसै भाव गी शब्दें ते अभिनय राहें ठीक चाल्लीं प्रगट करना गै ‘वशत्ति’ खोआंदा ऐ। ‘वशत्ति’ दियां चार किस्मां आक्खियां गेदियां न :-

**1. कौशिकी वृत्ति**

जिस बेल्लै नाच, गाना आदि श्रृंगारक भावें गी व्यक्त करदा ऐ, उसलै कौशिकी ‘वृत्ति’ अपनाई जंदी ऐ। इस च श्रृंगाररस दी गै प्रधानता होंदी ऐ।

**2. सात्वति वृत्ति**

एह् वृत्ति उत्साह बधाने ते बहादरी दा जज्बा दस्सने आस्तै अपनाई जंदी ऐ ते इस च वीर रस दी प्रधानता होंदी ऐ।

**3. आरभटी वृत्ति**

रौह-गुस्सा, खिंज, संघर्ष दे भावें गी व्यक्त करदे बेल्लै आरभटी वृत्ति गी अपनाया जंदा ऐ, इस च रौद्र रस दी प्रधानता होंदी ऐ।

#### 4. भारती वृत्ति

इसदा सरबंध 'नटें' कन्नै होंदा ऐ ते एहदे च वीभत्स रस दी प्रमुखता होंदी ऐ।

##### करुण रस

- दीनू — “ए रूपां महाड़ी धीऽ ऐ पर नेही कलच्छनी ऐ जे जीम लैन्दे सार इन्न अपनी मौरी गी खादा .....
- रूपां — (तड़फियै) नेई बापू नई .....
- दीनू — ते हून बब्बै दा बढेपा खज्जल करारदी ऐ।
- रैहमते — ए तूं के कुफर तोल्ला करनां भाऊ? सील गवै गी कलच्छनी आखा करनां। किश ते खुदा दा खौफ खा। त्रीमत तेरी मोई तां अपनी मौती, इस गरीबनी गी तोहमत लाई तां जहन्म च बी थाहर नेई लगा जुड़न।”
- बिद्धां — “रूपां बाज आई जा। जेहके हत्थें डुब्बने थमां बचाए दा ऐ उऐ हत्थ कुतै तेरी संघी नेई घोटी ओड़न।
- रूपां — (वरलाप—जन करदे) अऊं पुच्छनी आं — की बचाया हा मिकी? ए नरक जून भोगन लेई? उस रोज रूढ़ी—डुब्बी गेदी होंदी तां सारा स्यापा गै मुक्की जाना हा। (रोन्दे सिसकदे) नां तूं मिकी बचांदा, नां मेरा दीन—दुखी बापू स्थान्ने कर्जे दे भारे हेठ दबोन्दा—जलोन्दा ते नां अज्ज बिच मंडिया मेरी बोल्ली लगदी।”

उप्पर दित्ते गेदे दौनें उदाहरणें च करुण—रस ऐ। ‘कूशजादी’ नाटक दी नायका रूपां गी दरेआ चा रुढ़दे बिद्धां नांऽ दा माहनु बचांदा ऐ जेहड़ा ओह्दी जान बचाने दे बदले ओह्दे पिता’शा ओह्दा हत्थ मंगदा ऐ। ओह्दे करी होने आहले दुख गी लेखक ने करुण—रस द्वारा इस चाल्ली पेश कीते दा ऐ जे रूपां कन्नै पाठकें गी इक अपनापन, इक हमदर्दी मसूस होन लगी पौंदी ऐ।

#### 2. हास्य रस

नाटक च केई थाहरें पर लेखक ने संवाद इस चाल्ली कन्नै लिखे दे न जे उनेंगी पढ़ियै हास्य रस अपने आप गै प्रस्फुटित होन लगी पौंदी ऐ। उदाहरण —

- शौकू — “लाड़िया लत्त चुल्ली बाली दी होऐ ते अपने—आप चौल ते दाला गड़कारदियां होन।
- भौकू — रिच्छ चटनी घोटारदा होऐ, चित्तरा छाह छोलारदा होऐ।”

- शौकू — 'म्हाराज अस परमात्मा गी हाजर-नाजर समझियै ब्यान दिन्ने आं .....
- भौकू — जे साढ़ा बब्ब, नामी-कनामी पैहलवान चतरु .....
- शौकू — जेढ़ा छिंजा घुलदा हा तां म्हेशां बड़्डी माल्ली जितदा हा .....
- भौकू — नुहाड़े उप्पर कृ नुहाड़े उप्पर .....
- जोगी — किश उच्चरो बी।
- शौकू — शाहनी होर बड़ियां मैहरबान हियां .....
- भौकू — त्रीए-चौथे रोज सददी भेजदियां .....
- शौकू — ते बट्टी बदाम ते लटरम-पटरम देइयै टोरदियां।"

इ'ने संवादें गी पढ़ियै मनै च इक अजीब हास्य रस पैदा होई जंदा ऐ। इ'यै जनेह पात्तर गै नाटक गी होर मता दिलचस्प बनाई दिंदे न।

- शाह — (मुंढी ल्हाइयै) आहा-हा। नाथ होरें कैशा कवित्त शुनाया, क्या नां लेई दा "भोजन छैल कराई।" मिकी ते शुनियै शौहरी भुक्ख शल्गी उट्टी ऐ। इशलै कदें बत्तरियें पलाएं ते छित्तरियें मद्धरें आह्ला थाल मेरै शमानै आई टिकै तां कृ
- भौकू — तां झट्ट ओदे च कोढ़-किरली आई पवै।"
- प्रस्तुत उदाहरण च लेखक ने अतिहसित हास्य रस प्रयोग कीते दा ऐ।

## स्मित

- बिद्दां — "म-म मेरा मतलब ऐ जे तुसें मनै च झांकियै केह बुज्झेआ?
- पन्त — हा-हा-हां। अस तेरे मनै दियां तेरे गै मूहां सुनना चाहनेआं।"
- एह बड़ा शिष्ट किस्म दा हासा ऐ। एहदे च अक्खी बी हसदियां न ते होठ थोहड़े जनेह खिड़दे न।

## शांत रस

- पन्त — "इस चाल्ली छे रोज बीती गे पर बावे ने ताड़ी नेई पुट्टी। खीर सत्तमें रोज
- जिसलै उसने अक्खीं खोलियां तां शैल धुखदी धूनी, साफ-सुथरा थान ते कोल हत्थ जोड़ियै बैठे दे गभरु गी दिक्खियै तां ओहदा मन बड़ा प्रसन्न होआ।

बाबा — जै गुरु गोरखनाथ! बच्चा अस तेरी सेवा दिक्खियै अति प्रसन्न होए आं, मंग जे किश मंगना ऐ।”

शांत रस उत्थे मन्नेआ जंदा ऐ जिसलै संसारी चीजें कोलां विरक्त होए दे मनुक्खी मन च बैराग्य आई जंदा ऐ, तां ओह ध्यान अलौकिक शान्ति आहले पाससै लाई लैदा ऐ इस चाल्ली दे अलौकिक शान्ति दे भाव दा चित्रण जिसलै काव्य च कीता जंदा ऐ तां उस थमां थोने आहला आनंद ‘शांत रस’ खोआंदा ऐ।

### वात्सल्य रस

रैहमते — “दीनू कुंन होन्दा मिकी आहनने ते नेई आहनने आला? (रूपां गी गल लाइयै) ऐ मेरी स्हेलड़ी दी नशानी गै नेई, में-में इसी अपना दुद्ध पल्याइयै पाले दा ऐ (रुन्हाकी अवाज) इसी मसीबतें च घिरे दे दिक्खियै मेरे ढिड़ड बरछे-जन लगदे न।

पन्त — वाह! भई वाह! जनमेआ माता ने दुद्ध पल्याया अम्मां ने। नाथ जी दिक्खे कुदरत दे रंग।

### भक्ति रस

जोगी — “पैह्ला दर्शन कौल घंडोली, दूआ देवां माई,  
त्रीआ दर्शन चरनपादका, चौथा अद्धकुआरी,  
पंजमां दर्शन भैरों घाटी, छेमी गुफा तुम्हारी।  
सैन्तें गी माता बचड़े दिन्दी, भैनें बीर मलाई।  
जिन सिमरी उन्नै फल पाया, घट-घट जोत सुआई जी।”

### अद्भुत रस

गभरु — “ओ खूब धन-द्रब्ब खर्चियै करामाती शीशा लेई आया ते लगा ओहदी सिफत सुनान जे दूर-दरेडै रौहने आहले जिस कुसै गी बी चेता करो तां नुहाड़ी तस्वीर शीशे च लब्धन लगी पौंदी ऐ।

दीया — बाह भई बाह!

गभरु — धरमू ने नरातू दी डौल दिक्खने दी सलाह दिती तां शहूकारे दे जागतै शीशे गी मत्था टेकियै नरातू गी सिमरेआ तां शीशे च झांकियै त्रौनै गी थरने-परने पेई गे। लोक नरातू दी लोथ चिखा पर रक्खन लगी पे हे। उन्नै आल-माल नेई कीती ते फूढी पर बेहियै उड़डरी पे। चिखा गी अगग छुहान गै लगे हे जे धरमू करलाया, उन्न पौन-पट्ट हारे चा झूठा मनका कड़िहियै पारस मणी जड़ी दिती। लौ जी, नरातू रामे-राम करदी उट्ठी खड़ोती। नड़ाए आहले ए भूत खेढ दिक्खियै नस्सी-नसाई गे ते ओ त्रैवे नरातू कोल आई दुके।

## भयानक रस

- गभरु — “होर केह! राजकमारै ते बपारी पुतरै घोड़े पर टाप्पी मारी ते बाऊ दे फंडाके आंगर उड़्ढरी गे, धरमू ने डांग मूँढै पाही ते टुरी पेआ अपनियां बत्ता। चलो चल-चल चल। ओ दूर इक जुआड़-डंडकारै च पुज्जा ते हुट्टन-लुआहन इक गुट्ठा बेही गेआ। चानचक्क इक बड़ा भारी सप्प सूंकदा ते काह्ला-जन पेदा आई गेआ ते लगी पेआ धरमू दे आले-दुआलै चक्कर लान। नस्सियै जिंद बचाने लेई धरमू उट्ठी खड़ोता पर सप्पै झट्ट ओह्दी लत्ते पलेस मारी टकाए ते बचैरे गी फड़ित्तियां फसाई दित्ता। इच्चरें इक चक्की जेहड़ा बिच्चू औंदा दिक्खेआ तां धरमू ने डांग गूरी लैती। बिच्चूं भलेआं कोल पुज्जा तां उन्न डांगे दियां दौं-त्रैं बनकाइयै जत्तरियां ते उसी फत्तकाई ओड़ेया। लौ जी, सप्पै राजकमारी दा रूप धारी लैता ते ओ बोल्ली जे अऊं नागराजै दी धी आं, सैल करन आई तां इक राखस मेरे पिच्छें ल'ग्गा। सप्पै दा रूप धारियै रुड़्ढे च बड़न लगी तां पापी बिच्चू बनियै मगर दौड़ेआ।
- दीया — राखसैं बी ते अती चुकी दी होंदी ऐ !

### लोक शैली ते डोगरी नाटक 'कूशजादी'

लोक-शैली दा अर्थ ऐ – व्यवहार दा ओह तरीका जां ढंग जेहड़ा शिक्षित समाज दे लैहजे थमां बक्खरा, आम जनसधारण दे जीवन कन्नै सरबन्धत होने दे कन्नै-कन्नै अपने-अपने खित्ते च पारम्परिक तौर पर जुड़े दा होऐ। लोक-शैली कुसै व्यक्ति विशेष दी नेई होइयै सामूहिक अभिव्यक्ति दा साधन होंदी ऐ। लोक-शैली दे नाटकें दी भाशा काव्यमयी होंदी ऐ। इ'यां ते एह नाटक सामूहिक अभिव्यक्ति दा साधन होंदे न ते कन्नै गै पद्यात्मक संवादें द्वारा कल्पना-शक्ति दे भावें गी इ'न्दे च गद्य दा प्रभाव किश घट्ट गै होंदा ऐ। गद्य दा प्रयोग भाड़े दे हास्यात्मक अभिनय जा इतिवश्तात्मक प्रसंगें च कीत्ता जंदा ऐ। एहदा सारें-शा बड़ड़ा उदाहरण 'कूशजादी' नाटक दे पात्तर 'शौकू-भौकू' न। नेहा गद्य बी पद्यात्मक शैली दा गै होंदा ऐ, जित्थें शब्दें दियां लड़ियां इक दुए कन्नै जुड़ी दियां होने करी तेजी कन्नै अगें बधदियां न। पद्यात्मक संवादें दी परम्परा मध्यकाल दे पूर्व थमां लगातार चलदियां आवा करदियां न। नेह नेकां अंश इ'नें नाटकें च होंदे न जेहड़े लोकगीतें दी धुनें पर गाए जंदे न ते लोक भाशा दी परानी शब्द-योजना च बज्जे दे होंदे न।

इस चाल्ली दे नाटकें च गायक अभिव्यक्ति दा इक-मात्तर साधन होंदा ऐ, जेहड़ा साहित्य दा गै इक अंग ऐ। साहित्यक नाटकें आह्ला लेखा लोक-शैली दे नाटक समस्त लोकाचार ते लोकें कन्नै सम्बन्धित तत्थें गी व्यक्त करने दा साधन मजूद होंदा ऐ। कुसै चरित्र जां पात्तर जेहदी म्हत्ता लोक-प्रधान होंदी ऐ, ओहदे बशेश गुणें ते कम्में दा प्रदर्शन लोक-शैली दे नाटकें द्वारा गै कीत्ता जंदा ऐ। लोक-शैली दे नाटक अभिनय प्रधान होंदे न जेहदे च गीत, संगीत ते नश्य दे कन्नै संवाद बी होंदे न।

### लोक-नाटकें दे गुण

लोक नाटकें दे जेहड़े बी गुण होंदे न, साहित्य च लोक-शैली दे गुण बी उनेंगी गै मन्नेआ जंदा ऐ। जेहड़े इस चाल्ली न :-

1. लोक रंगमंच समूह जां समाज दी अनुभूतियें, भावनाएं ते प्रवर्तितियें दी अभिव्यक्ति करदा ऐ, व्यक्ति दी कल्पना ते अनुभवं दी नेई। लोक दी भाशा स्वाभाविक पद्य च होंदी ऐ, तां गै लोक-नाट्य दे संवाद पद्यात्मक होंदे न।

2. टाइप चरित्र (प्रवृत्ति विशेष जां समूह-बशेश दे पात्तर)।
3. खुल्ला रंगमंच, दृश्य-परिवर्तन दा अभाव (आमतौर इक पर्दा पिच्छे टंगोए दा रौंदा ऐ)।
4. अभिनय च संकेत, नश्य दे हाव-भाव कन्नै भरोचे दा अभिनय।
5. पौराणिक कथा, विदूषक दा बार-बार बिच आइयै उपदेश देना, मर्मस्पर्शी अभिनय जां समाज कन्नै जुड़ी दियें बुराइयें दा दुखड़ा रोना जां उच्च वर्ग पर चोट कीती जंदी ऐ।
6. कथानक दा म्हत्व घट्ट, रसानुभूति द्वारा तश्वि दा म्हत्व की जे कथा आमतौर पर जानी पनछानियां होंदियां न।
7. नाटक-मंडली दा हर-इक सदस्य आवश्यकता दे अनुसार – विदूषक, नायक, निर्देशक – सारें कम्म आपूं करी सकदा ऐ।
8. लोक-जीवन दे रीति-रवाज जां उत्सवें दा जिकर बी जरूरी ऐ ते ओहदे च लोक प्रचलित गीत ते कहावतें दा समावेश बी जरूरी होंदा ऐ।

### लोक-शैली दे नाटकें दी लोकप्रियता दे कारण

लोक-नाटकें दी लोकप्रियता दे कारण गै इस चाल्ली व्यक्त कीते दा ऐ – “लोक नाट्य असल च सैहज मानव-जीवन कन्नै गै जीवन-रस प्राप्त करदे न, इस करी उन्दी आत्मा दा लोक-दर्शकें दी आत्मा कन्नै इक नेहा सैहज एकाकार होई जंदा ऐ, जेहदे च प्रदर्शक ते दर्शक दा अन्तर (भेद) गै समाप्त होई जंदा ऐ। लोक-नाट्यें दी रचना लोकरुचि दे सर्वथा अनुकूल गै होंदी ऐ, इस करी बी सामान्य दर्शक लोक-नाट्य दी प्रकृति च इक-रस होइयै रुचिपूर्वक दिखदा सुनदा ऐ। लोक-नाटक च संगीत दा पुट बी आकर्शन पैदा करने च बड़ा गै सहायक होंदा ऐ। नगाड़े दी कड़कदार बाज जित्थै तगर अपनी धाक जमाई रखदी ऐ, उत्थै तोड़ी सुनने आहलें दे कन्नै च इक अजीब जीवन-शक्ति दा संचार होन लगदा ऐ। लोक-नाटक इन्ना सैहज स्वभावक होंदा ऐ जे कोई बी ओहदे जादू-शा नेई बची सकदा अर्थात् हर कोई ओहदे थमां मिलने आहले आनन्द च डुब्बी जंदा ऐ। एहदे च प्रयोग होने आहले आनन्द च डुब्बी जंदा ऐ। एहदे च प्रयोग होने आहली लोक-भाषा, पात्तरें दी उल्लासपूर्ण भाव-मुद्रा, लोक-संगीत, लोक-नायकें दा उच्चा ते पैना सुर, लोक-धुनें दियां धुनां सब-किश मिलियै पाठकें/दर्शकें दा मन मोही लैंदियां न।”

## લોક-શૈલી ਦੇ લક્ષણેં દે અધાર પર 'કૂંશજાદી' નાટક દા મૂલ્યાંકન

લોક-શૈલી દે પૈહલે લક્ષણ દે મતાબક લોક-શૈલી દા નાટક પૂરે સમૂહ, સમાજ દી અનુભૂતિયેં, ભાવનાં તે પ્રવશ્તિયેં દી અભિવ્યક્તિ કરદા એ, નાં કે કુસૈ વ્યક્તિ દી। 'કૂંશજાદી' નાટક ચ બી કુસૈ ઇક વ્યક્તિ બશેશ ગી નેઈ લૈતા ગેદા બલ્કે એહ નાટક અપને સમાજ દે પૂરે સમૂહ દા પ્રતિનિધિત્વ કરદા એ। એહદી ભાશા પૈહલે ગુણેં દે મતાબક પદ્યાત્મક શૈલી ચ ગૈ એ જેહદા ઇક ઉદાહરણ ઇસ ચાલ્લી એ :-

“દિક્ષો કૈસા સુહામાં દેસ ડોગરા, નેહા દેસ નેઈ લભના કોઈ હોર જી।

પ્હાડે ચીઝાં તે દેઆર ન સૂંકદે, પાહલાં પાન્દે જોડેં બિચ મોર જી।”

દુઘ ગુણ દે મતાબક ટાઇપ ચરિત્ર જાં સમૂહ-બશેશ દે પાત્તર દે રૂપે ચ ‘શૌંકૂ-ભૌંકૂ નાંડ દે દ’ઁ પાત્તર અપને સમૂહ બશેશ દા પ્રતિનિધિત્વ બડે ગૈ શૈલ ચાલ્લી કન્નૈ કરદે ન। ઇ’નેં દ’ઁ પાત્તરેં રાહેં નાટક ચ રોચકતા ઔંદી એ।

ત્રીયેં ગુણ દે મતાબક ‘કૂંશજાદી’ બી ખુ’લ્લે રંગમંચ ચ ગૈ ખડોએ દા એ। તે દ્રિશ્શ પરિવર્તન દા અભાવ હોને કરી ઇક દ્રિશ્શ કાફી લમ્મા ચલદા રૌંહદા એ। જિ’યાં પંચાયત દા દ્રિશ્શ ખુ’લ્લે મદાન ચ દસ્સેઆ ગેદા એ।

ચૌથે ગુણ દે મતાબક અભિનય ચ કુતૈ-કુતૈ સંકેતાત્મક ભાશા દા પ્રયોગ બી હોએ દા મિલદા એ, તે પાત્તર અભિનય કરદે બેલ્લૈ નશ્ત કરદે ન।

“શૌંકૂ – ‘મ્હારાજ અસ પરમાત્મા ગી હાજર-નાજર સમઝિયૈ બ્યાન દિન્ને આં કૃ

ભૌંકૂ – જે સાઢા બબ્બ, નામી-કનામી પેહલવાન ચતરૂ કૃ

શૌંકૂ – જેહ્ઝા ઊંજા ઘુલદા હા તાં મ્હેશાં બઢ્ઢી માલ્લી જિતદા હા કૃ

ભૌંકૂ – નુહાડે ઉપ્પર કૃ નુહાડે ઉપ્પર કૃ.

જોગી – કિશ ઉચ્ચરો બી।

ભૌંકૂ – ત્રીએ-ચૌથે રોજ સદ્દી ભેજદિયાં કૃ

શૌંકૂ – તે બટ્ટી-બટ્ટી બદામ તે લટરમ-પટરમ દેઝ્યૈ ટોરદિયાં।”

(સફા-38)

पंजमें गुण दे मताबक 'कूंशजादी' नाटक च विदूषक दे रूप च पन्त होरें समाज गी उपदेश दित्ते दा ऐ। अपनी गल्ला गी शैल चाल्ली कन्नै समझाने आस्तै उनें केई चाल्ली दे उदाहरणें गी बी इस रचना च लैते दा ऐ। ते रूपां आसेआ मर्मस्पर्शी संवाद गी हर कुसै दे मनै गी छूर्ई लैदे न। जेह्दे उदाहरण इस चाल्ली न —

बिद्दां — "(सूर्त फिरदी ऐ) के ऐ? (अक्खीं मलदे) के होआ ?

रूपां — (बरलाप करदे) मासी मिकी बचाई लै, तेरे छन्दे मिकी इस कसाइये कोला बचाई लै। (रोन्दी—तड़फदी ऐ)।<sup>12</sup> (सफा—72)

रैहमते — "आपूं एह्दे कालजै भामबड़ बालियै हुन अत्थरूं कन्ने उनेई ठंडा बी नेई करन दिन्दा?

दीनू — ए तूं के गलारनी भाबी?

रूपां — (रोन्दे—रोन्दे) मासी सच्च गलारदी ऐ बापू? तूं कियां बचन दिता इस चंडाले गी? बोल, बोलदा की नेई ?" (सफा—74)

समाज कन्नै जुड़ी दियें केई चाल्ली दियें बुराइयें गी इस नाटक (रचना) द्वारा दस्सेआ गेदा ऐ, जे किस चाल्ली दीनू जनेह् आर्थिक तौर पर गरीब ते लचार माहनु दा बिद्दां ते शाह नेह् कपटी लोक पूरा—पूरा फायदा लैदे न ते उन्दा शोशन करदे न। एह्दे लावा शाह नेह् पैहे आह्ले लोकें जरिये एह् दस्से दा ऐ जे एह् लोक किस चाल्ली गरीब लोकें कोला थोड़े पैहे दे बदले सूद पर सूद चाढ़दे रौह्दे न जेह्ड़ा कदें बी नेई मुकदा। बाद च उंदी सन्तान गी ओह् कर्जा मकाना पौंदा।

छेमें गुण दे मताबक लोक—शैली दी रचना च कथानक दा म्हत्त्व घट्ट गै होंदा ऐ। की जे एह्दे च रचनाकार दा उद्देश्य रचना दे कथानक पाससै नेई होइयै रचना गी मते'शा मता आनन्दमयी बनाने दी कोशश च गै लग्गे दा रौह्दा ऐ। की जे आमतौर पर लोक—शैली दी रचना दी कथा जानी—पन्छानी गै होंदी ऐ। 'कूंशजादी' नाटक दी कथावस्तु दा बी इन्ना ज़्यादा म्हत्त्व नेई ऐ। पर इसी पढ़ने परैन्त इन्ना ज़्यादा रस औन लगी पौंदा ऐ जे उस रस दा ब्यान करना शब्दें च मुमकन नेई ऐ।

सतमें गुण मताबक नाटक—मंडली दा हर इक सदस्य जरूरत मताबक विदूषक, नायक, निर्देशक — सारे कम्म आपूं करी सकदा ऐ। 'कूंशजादी' नाटक च बी कुतै पन्त नेह् समझदार माहनु सभनं गी विदूषक दे रूपै च उपदेश दिंदे न। रैहमते चाची, मैहन्त होर ऐसे नेकां पात्तर न जेह्ड़ा लोड़ै मताबक इनं पात्तरें दे रूपै च कम्म करी सकदे न।

अठमें गुण दे मताबक लोक शैली दे नाटक च रीति—स्वाजें, उत्सवें दा जिकर कीता जाना बड़ा जरूरी ऐ ते ओहदे च लोक—प्रचलित गीतें ते कहावतें दा समावेश बी बड़ा जरूरी रौहदा ऐ।

‘कूशजादी नाटक च एह सब गुण मजूद न। ग्रांऽ च पंचैत बौहदी ऐ तां उत्थें गारड़ी आस्सेआ कारक दा गाना बी लोक तत्व दा प्रमाण ऐ। ते दूआ जोगी द्वारा गाया गेदा एह सुहाग लोग शैली दे कोल लेई औंदा ऐ।

“नां बाबल मरे बर गै तुप्पेआ,

नां कीती कड़माई

कैहल बज्जी नां ढोलक खड़की,

नां मां मंगल गाई,

नां गै ढोल बजन्तर बज्जे,

नां कोई जान्नी आई,

धरमें बज्जे बाबल खातर,

धी मंडिया बिच आई .कृ जी।”

प्रश्न – जितेन्द्र शर्मा हुंदे व्यक्तित्व ते कृतित्व पर रोशनी पाओ?

उत्तर –

**व्यक्तित्व**

**जन्म**

जितेन्द्र शर्मा हुंदा जन्म 16 मार्च 1931 च जम्मू शैहरे च होआ। एह मूल तौरा उपपर कटड़े दे रौहने आहले हे। पर इन्दे पिता जी पलटने च नौकर होए तां सतवारी आई बस्से। इन्दे पिता उसलै 'रघुप्रताप (फस्ट जैक राईफल्ज) च कैप्टन (कप्तान) हे। खीर च उससै पलटने च कमांडिंग अफसर बने।

**शिक्षा**

इन्दी शुरुआती स्कूली शिक्षा सतवारी दे मिडल स्कूल थमां शुरु होई बाद च एह माडल अकैडमी च पढ़े रेह। इनें दसमीं सैकड डीविजन च पास कीती पही प्रिंस ऑफ वेल्ज कॉलेज च जेहका हून जी.जी.एम. साईस कॉलेज खुआंदा ऐ उत्थै भर्ती होई गे। देसै दे बंटवारे कारण अन-दिक्खी भाजड़ ते अनसुनी मारो-मारी मूजब स्कूल कॉलेज बंद होई गे। पढ़ाई लिखाई दा सिलसिला थम्होई गेआ ते अगै इनें प्राइवेट तौरा उपपर पढ़ाई जारी रक्खी।

**घर-परिवार जां ब्याह**

1962 च प्रो. रीता शर्मा हुंदे कन्नै ब्याह होआ। इंदियां दो धियां ते इक जागत ऐ। रीता शर्मा होर हिन्दी ते संस्कृत च एम.ए. न। एह इक नाटककार ते रेडियो दि'यां श्रेष्ठ अभिनेत्री न।

**व्यवसाय**

1947 च जिस बेल्लै रेडियो स्टेशन बनेआ तां इनेंगी देहाती प्रोग्रामें आस्तै चुनी लैता गेआ। बल्लें-बल्लें रेडियो दी बंदौलत मन्ने-परमन्ने दे लेखकें गी ज्हारें-लक्खें श्रोताएं गी वयक-वक्त प्रभावत करने दे सनैहरी मौके थोन लगे। उत्थे उभरदे सखेतरुयें गी अपनी कान्नी गी सोआरने-नखारने दे अनमोल अवसर प्राप्त होन लगी पे। सन् 1986 च जितेन्द्र शर्मा होर अडीशनल सक्लेटरी दे औहदे उपपरा रिटायर होए।

## कृतित्व

श्री जितेन्द्र शर्मा हुंदे कृतित्व दा ब्यौरा इस चाल्ली ऐ –

1. कूशजादी (लोकशैली दा नाटक)
2. बुद्ध सुहागन (एंकाकी संग्रह)

बक्ख-बक्ख पत्रिकाएं जां कताबें च छपने आहले एकांकियें दा ब्यौरा इस चाल्ली ऐ।

1. कर्तब
2. वो कांटे
3. अन्तिम इच्छेआ
4. आ बसमां लाई लैचे
5. तोबा मेरी तोबा
6. चोरै गी मोर

## कूशजादी

इस च लेखक ने इक ऐसी बेबस ते लाचार कुड़ी बारै दस्से दा ऐ। जेहड़ी मां म्हेटर ऐ। ते हून ओहदे आस्तै ओहदा पिता गै सब किश ऐ। दरेआ च रुढ़दे होई उसी ग्रांड दा इक बदमाश बचांदा ए। जान बचाने दे बदले ओह ओहदा हथ ओहदे प्योऽ दीनू शा मंगदा ऐ। इ'यां गै शाह बी उसी बड़ा तंग करदा ऐ, झगड़ा बधी जाने पर गल्ल पंचैत तकर जाई पुजदी ऐ, तां पंत नेह देवता माहनू नां सिर्फ उंदी मदद करदे न बल्के अपने ज्ञान द्वारा सबने लोकें दी अक्खीं खोल्ली दिंदे न। पंत होर गल्ला गी मकाने लेई 'कूशजादी' दी कथ ते ओहदे कन्नै जुड़े दे होर प्रसंगें गी लोकें गी सनांदे न तां सबने दि'यां अक्खीं खुल्ली जंदियां न। बंसी ग्रांड दा इक शरीफ गभरु ऐ जेहड़ा बिना कुसै सुआर्थ दे दीनू ते रूपा दी मदद करदा ऐ ते खीर च रूपा दा ब्याह बंसी कन्नै होई जंदा ऐ।

## बुद्ध सुहागन (एंकाकी संग्रह)

इस एंकाकी च चार एंकाकी संकलित न। न्हरे दी तानी, संजोग दे धागे, शूटिंग तृष्णा ते बुद्ध सुहागन न। एह एंकाकियां, कुसै ना कुसै चाल्ली कन्नै पाठकें गी गूढा संदेश दिंदियां न।

## न्हरे दी तानी संजोंगे दे धागे

इस एंकाकी च बेबस ते अंधविश्वास च जकड़ोए दे माहनू बारै दस्से दा ऐ जिसी बढेपे च अपने जुआन पुतर दी मौत दिक्खनी पौंदी ऐ। ओह इक ऐसी जादुई चामचिड़क दे मायाजाल च फसी जंदा ऐ। जेहड़ा बरदान ते दिंदी ऐ पर ओहदे बदले च किश-ना किश अनर्थ बी पक्का करदी ऐ।

## शूटिंग

इस एंकाकी च फिल्मी एक्ट्रेस बारै दस्से गेदा ऐ, जेहड़ी अपने रूप ते आकर्शन दे जोरा पर केई लोकें गी मूर्ख बनाइयै अपना मतलब कड़ढदी ऐ।

## तृष्णा

इस एंकाकी च ऐसे लालची माहनू बारै दस्से दा ऐ जेहड़ा पैहे दे लालचै च अपनी पत्नी मारी दिंदा ऐ। खीर तगर कुसै गी पता बी नेई लगन दिंदा ते हिरख गी बपार समझने आहले लोकें बारे पाठक गी दस्से दा ऐ।

## बुड्ढ सुहागन

इस एंकाकी च इक ऐसी बेबस नारी दी कहानी ऐ जेहदा ब्याह न्यानी उमरी च गै इक बुड्ढे कन्नै होई जंदा ऐ। सौहरे घर पुज्जने शा पैहले गै ओह विधवा होई जंदी ऐ, अपनी साकन दे बच्चें गी ओह अपने बच्चें कोला बी बद्ध प्यार दिंदी ऐ। पर बदले च उसी सिवाए दुख ते नफरत दे इलावा किश बी हासल नेई होंदा। खीर च ओह मैहल छोड़ियै चली जंदी ऐ।

बक्ख-बक्ख कताबें ते पत्र-पत्रिकाएं च छपने आहले एंकाकी –

## कर्तबब

इस एंकाकी च लेखक ने इक ऐसे नौजुआन दी कहानी दस्सी दी ऐ जेहड़ा अपने देश दी खातर अपने नमैं ब्याहता जीवन गी त्यागियै दुए दिन गै बार्डर पर टुरी जंदा ऐ। देश दी सेवा करदे-करदे ओह शहीद होई जंदा ऐ। घरै च दुखै दा म्हौल बनी जंदा ऐ। जुआन नूहै गी दिक्खी-दिक्खी अमर दी मां दा बुरा हाल होई जंदा ऐ। पर अमर दे दोस्त आसेआ सोची गेदी कहानी करी निशा दा ब्याह अमर दे निक्के भ्राऽ अजीत कन्नै होई जंदा ऐ।

## अन्तिम इच्छेआ

इस एंकाकी च दस्सेआ गेदा ऐ जे किस चाल्ली इक कंजूस माहनू गी अपनी मौत गी कोल दिक्खियै कहाली पौंदी ऐ। शाह सारी उमर पाई-पाई जोड़दा ऐ, पर खीर समें च जिस बेल्लै साह-सत्त नेई रौंहदा तां ओह जीना चांहदा ऐ जिसदा चित्रण लेखक ने बड़े शैल ढंगा कन्नै कीते दा ऐ।

## चोरै गी मोर

इस एंकाकी च ऐसे माहनू बारै दस्से दा ऐ जेहड़ा अपने इक जनानी आसेआ दोहार करने पर उसी बक्खरे-बक्खरे पैरें दे सैंडल दा जोड़ा देई ओड़दा ऐ। पर जनानी ओहदे'शा बी मती चलाक निकलदी ऐ। ओह दूई बारी परतियै दुकान पर औंदी ऐ ते परतियै दोहार करियै दूआ जोड़ा लेई जंदी ऐ।

## तोबा मेरी तोबा

इस एंकाकी च हिरख करने आहले हिरखियें बारै दस्से दा ऐ जेहड़े अपने प्यार गी लेइयै बड़े गै चिन्तत रौंहदे न। दीपक ते आशा दमै इक दुए गी हिरख करदे न। पर उंदे दौनें दे मां-प्योऽ बड़े गै आशक मिजाज माहनू न। इस प्रवर्तते कारण गै दीपक ते आशा दोए आत्महत्या करी लैंदे न।

## आ बसमां लाई लैचै

इस एंकाकी च ऐसे हिरखियें बारै दस्से दा ऐ जिनेंगी जात-बिरादरी दे झूठे आडम्बरें करी दौ बारी बिछड़ना पौंदी ऐ। दमै सारी उमर ब्याह नेई करने दा फैसला करी लैंदे न। खीर च उंदा हिरख रंग लांदा ऐ ते ओह इक बारी फही मिली जंदे न।

## अनूदित रचनां

1. मल्लिका (मोहन राकेश दे नाटक दा चंचल शर्मा दे सहयोग कन्नै)
2. दत्ता (शरत चन्द्र दे उपन्यास दा अनुवाद)
3. सुन्ना ते सुआर्थ (शम्भू मित्रा दे नाटक दा अनुवाद)
4. लेओ फही सुनो (सुरेन्द्र प्रकाश दी उर्दू कहानियें दा अनुवाद)

## सम्पादन

1. पंजरंग (एंकाकी संग्रह दा सम्पादन)
2. कथा क्यारी (कहानी संग्रह दा बंधु शर्मा हुंदे सहजोग कन्नै सम्पादन)

## सम्मान

1. 'कूशजादी' नाटक उप्पर रियासती कल्चरल अकादमी पासेआ 1987-88 पुरस्कर मिली चुके दा ऐ।
2. अखिल भारतीय रेडियो प्रतियोगिता च 'बो कांटे' लेई हास्य वर्ग दा प्रथम पुरस्कार (1989-90)
3. अखिल भारतीय रेडियो प्रतियोगिता च 'तोबा मेरी तोबा' लेई हास्य वर्ग दा प्रथम पुरस्कार (1992-93)
4. 'बुड्ढ सुहागन' (एंकाकी संग्रह) : साहित्य अकादमी पासेआ पुरस्कार 1994 च मिलेआ।
5. 'लेओ पही सुनो' अनूदित कथा साहित्य पर साहित्य अकादमी पासेआ अनुवाद साहित्य दा पुरस्कार थोए दा ऐ।

## अभ्यास आस्तै सुआल

### (क) लम्मे सुआल

- प्रश्न-1 'कूशजादी' नाटक दी तात्त्विक द्रिष्टी कन्ने अलोचना करो।
- प्रश्न-2 'कूशजादी' नाटक दा लोकशैली दे लक्षणें दे आधार उप्पर मूल्यांकन करो।
- प्रश्न-3 'कूशजादी' नाटक च आई दियें बक्ख-बक्ख प्रासंगिक घटनाएं दा ब्यौरा अपने शब्दें च लिखो।
- प्रश्न-4 नाटक दे नाटककार हुन्दे ब्यक्तित्व ते कश्चित्त्व पर रोशनी पाओ।
- प्रश्न-5 जितेन्द्र शर्मा हुन्दा बतौर नाटककार डोगरी नाटक साहित्य च कि'न्ना योगदान ऐ संक्षेप च लिखो ?

### (ख) लौहके सुआल

- प्रश्न-1 'कूशजादी' नाटक दा उद्देश्य स्पष्ट करो ?
- प्रश्न-2 'कूशजादी' नाटक दी रस योजना उप्पर नोट लिखो।
- प्रश्न-3 'कूशजादी' नाटक दा पातर चित्रण करियै नायक दे गुणें अप्पर लोऽ पाओ।
- प्रश्न-4 'कूशजादी' नाटक दी भाशा-शैली उप्पर टिप्पणी करो ?

● **उद्देश्य**

1. इस यूनिट गी बी च'ऊं हिस्सें च बंडेआ गेदा ऐ।
2. इस यूनिट दा मुख्य उद्देश्य 'अपनी डफली अपना राग' नाटक संग्रह दे नाटकेँ बारै जानकारी देना।
3. इस यूनिट दे पाठ अट्ठ च 'अपनी डफली अपना राग' उप्पर सुआल तेआर कीता गेदा ऐ जेह्दे कन्नै विद्यार्थी इस पाठ दा अध्ययन करियै 'अपनी डफली अपना राग' नाटक दी मूल जानकारी हासल करी सकडन।
4. पाठ नौ च नाटक 'नमीं अवाज' ते पाठ दस्स च 'दना सोचो ते स्हेई' उप्पर सोआल तेआर कीते गेदे न।
5. पाठ ज़्यारां च 'अपनी डफली अपना राग' दे नाटककार दे व्यक्तित्व ते कश्तित्व उप्पर रोशनी पाई गेदी ऐ।

प्रश्न – ‘अपनी डफली अपना राग’ नाटक दी तत्वे दे आधार उपर अलोचना करो ?

उत्तर – ‘अपनी डफली अपना राग’ नाटक दे नाटककार मोहन सिंह होर न। इस नाटक संग्रह च त्रै नाटक संकलित न। एह नाटक 1990 च प्रकाशित होए।

### कथानक

लोक शैली च लखोए दा नाटक ‘अपनी डफली अपना राग’ जित्थै डुग्गर दी सभ्यता, संस्कृति, कार-ब्यवहार, एकता, भाईचारे ते भलोकेपन दी सशक्त तस्वीर प्रस्तुत करदा ऐ, उत्थै, सियासी नेताएं ते उंदे चिमचें दे हत्था लोकें दे होने आहले आर्थिक शोशन दी अक्कासी बी करदा ऐ। सियासी खड़पैच ते उंदे चिमचें कदें गाऊ रक्षा, कदें लंगड़े-लूलें, कदें शहीदें, कदें विधवाएं, कदें विश्व शांति ते कदें कुसै देवी-देवताएं दे नांउ उपर पैसे ठगियै लोकें दा आर्थिक शोशन करदे न। जेहड़ा माहनू इंदे रस्ते च औने दी कोशिश करदा ऐ उसी गै एह लोक कुसै ना कुसै चाल्ली अपने रस्ते चा हटाने दी कोशिश करदे न।

सियासी नेता जित्तने मगरा लोकें गी मूंह नेई दसदा ते जिस बेल्लै दुई बारी चनाऽ औंदे न तां ओह वोटें गी रझाने दे हर सम्भव प्रयास करदा ऐ। पर लोकें दी एकता अगुँ उसदी कोई चाल सफल नेई होंदी। खीर च ओह अपने खैर-खवाहें (चापलूसों) दी मदद कन्नै लोकें गी भरमाइयै, डराइयै-धमकाइयै अपना राजनीतिक सोआर्थ पूरा करी लैदा ऐ।

### चरित्र-चित्रण

नाटक च इक, दूआ, त्रीआ, चौथा, नेता जोगी, नर्तका इक ते दो बदमाश इक ते दो आदि पातर अपनी भूमिका नभांदे न। इंदे अलावा किश गायन मंडली दे सदस्य बी हैं।

### पातर इक, दूआ, त्रीआ ते चौथा

चारै पातर शुरू थमां खीरै तगर बक्ख-बक्ख रूपें च सामनै औंदे न। ओह मजूर करसान, कलर्क, फौजी आदि दे इलावा आम लुकाई दा प्रतिनिधित्व बी करदे न। पातर जित्थै अपनी सभ्यता, संस्कृति, एकता, हिरख-प्यार आदि दा अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करदे न, उत्थै गै अपने सोआर्थे आस्तै बिकदे बी लभदे न। ओह सैहज गै सियासी खड़पैचें दे झांसे च फसियै आपसी फुट्ट (तकरार) दा शकार बनदे जंदे न। ओह सियासी चालें गी समझने च नाकाम रौहदे न तद्दै केई बारी आपूं च टकराऽ बी पैदा करी लैदे न।

पात्तर दूआ, त्रीआ ते चौथा अपना सोआर्थ साद्वने लेई कुसै बी हद्दै तगर गिरी जंदे न। पात्तर इक उनें चौनैं च सिर कड़ढदा लभदा ऐ। ओह समाजी एकता गी त्रोड़ने आहलें गी पंछानने दी समर्थ रखदा ऐ, पर अपने लोकें दा सहयोग नेई थहोने कारण मन मसोसियै रेई जंदा ऐ ते अपने उद्देश्य च सफल नेई होंदा।

## नेता

नेता बी अज्जै दी राजनीति दा इक हिस्सा ऐ। उब्बी जितने परैत अपने वोटरें दी बात नेई पुच्छदा, पर चनाएं बेल्लै उनेंगी हर चाल्ली कन्नै मनाने ते रझाने दी कोशश करदा ऐ पर, लोक उसदी कोई बी गल्ल सुनने गी तेआर नेई होंदे। ओह अपने चले चांटे दी मदद कन्नै आम लोकें च फुट्ट पुआइयै अपने उद्देश्य च सफल होई जंदा ऐ।

## जोगी, दोयै बदमाश ते नर्तक

जोगी, दोयै बदमाश ते दोऐ नर्तकें साम, दाम, दण्ड, भेद आह्ला हर हर्बा बरतियै अपने चहेते नेता गी चनाएं च हर बारी सफल बनावे न ते आम लोकें दा आर्थिक ते मानसिक शोशन करदे रौहदे न। ओह कदें गौ रक्षा, विधवाएं दे कल्याण, जतीम बच्चे, विश्व शांति ते कदें कुसै देवी देवताएं दे नांउ उप्पर ठगियां करदे रौहदे न। दोऐ नर्तकें बिच-बिच मजाकिया किरदार नभांवे बी लभदे न।

## संवाद

नाटक दे संवाद पात्तरें दे अनुकूल न। संवाद दिलचस्प स्भावक लगदे न जिस करियै पाठकें/दशकें दी रोचकता नाटक च बनी दी रौहदी ऐ। नाटक दी राजनैतिक पछौकड़ होने करी इसदे मते हारे संवाद राजनीति थमां प्रेरत लगदे न। अज्जै दी राजनीति सिर्फ शोशन दा पर्याय बनियै रेही गेदी ऐ। सयासी खड़पैच कुसा नां कुसै ब्हानै लोकें थमां पैसा-धेला बटोरी लैंदे न। इसदा उदाहरण इस चाल्ली ऐ –

कल आए हे कैदे गित्तै,

इसदे ते नेई आए के कल।

कल आए हे गरु रक्षा ते।

कल औंना, लंगड़े लूलें ते,

ते पही औगे, शहीद गित्तै,

विधवें गित्तै,

सोक्के ते हाड़ा नै जेह्ड़े

उझड़ी गेदे, उंदे गित्तै।

(सफा-14)

राजनेता सिर्फ अपने सोआर्थ आस्तै राजनीति करदे न। पर, लोकें दा दुख-दर्द बंडने दा ढोंग बी जरूर करदे न। मसाल दे तौरा उप्पर एह संवाद दिखो -

“अग्गी च कैह सड़ना, चुड़ी-चुड़ियै कैह मरना। फके कैह सैहना। अस कैहदे आस्तै आं। तेरी सोह साढ़े होंदे तुसैंगी कोई कष्ट होई जा तां पही साढ़ा जीना गै अकारथ होई आ नां।”

नेताएं द चिमचे द्वारा लोकें गी भलकरने ते उंदी मजबूरी दा बेल्ले सिर फायदा ठोआने दा सबूत पेश करदा एह संवाद इस चाल्ली ऐ -

“बाकी लोकें गी मार तूं गोली चौधरी। तू बाकी लोकें गी दिखना ऐ जां अपने आपै गी। दिख निं करदा अपने मफाद आस्तै लोक कि'यां अक्खीं फेरी लैंदे न?”

### भाशा-शैली

नाटक दी भाशा-शैली बोलचाल आहली ऐ। भाशा सरलता ते सरसता दे गुणें कन्नै भरपूर ते रोचक ऐ। नाटक च बरतोए दे आप-मुहारे अलंकार, खोआन ते मुहावरे भाशा-शैली च मठास पैदा करदे न।

### अलंकार

नाटक च बक्खरे-बक्खरे अलंकारें दी बरतून इस चाल्ली ऐ जि'यां रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि।

### रूपक

“सच्च गलाया तूं ते भाऊआ

निरी-मुरी एह ठग्ग फड़ग्गी

साढ़े कोला लेइयै दाने

ओह दाने जो ज़्याने खाने।

राशन-पट्टा सब किश साढ़ा

ते खाने गी लल्ली बुच्ची।” (सफा-13)

“नेता बनियै बैठे दे न, बगले भगत पुजारी जी।” (सफा-24)

तुंदियें नीतें दे गारे कोला, एह गलिये दा

खोहबा केई गुणा चंगा ऐ।

(सफा-25)

### उपमा

“लक्क पतला ते लम्मे-लम्मे बाल

सपनी आंगू चलदी चाल। चलदी चाल।

(सफा-7)

### मुहावरें दा प्रयोग

“अस खेतरे खपाई दिन्ने जान।”

(सफा-10)

“तुस केह दिक्खा करदे बिट-बिट।”

(सफा-12)

“तुस रेही जन्ने मूंह गै दिक्खदे।”

(सफा-13)

“जो बी ऐ, ओ इनै पच्चड़ै कैसी फसना।”

(सफा-14)

“इत्थै तुंदी दाल निं गलनी।”

(सफा-15)

“कुसै दी पट्टी चढ़ी गोओ तुस।”

(सफा-15)

“अक्खीं दिक्खियै जैहर खाई लैचै?”

(सफा-21)

### खोआनें दा प्रयोग

“एक ने कही दूजे ने मानी,

नानक आक्खे दोनों ज्ञानी।”

(सफा-3)

“दिन्नै दा भुल्ले दा जेकर त्रकालें घर आई जा

तां केह उसी घरा बाहर कड्ढी दिन्दे न।”

(सफा-21)

“बगान्ना गैहना पाना ते अद्धा रूप गोआना।”

(सफा-22)

“मूर्ख मित्तर कोला अक्लमंद दुश्मन चंगा।”

(सफा-23)

## उद्देश्य

नाटककार दा उद्देश्य अपने-अपने सोआर्थ दी खतर नेताएं दे लारे-लप्पे च फसे दे लोकें दे जीवन दे यथार्थ गी दस्सना ऐ। नाटककार ने इस नाटक च मतलबप्रस्त ते स्वार्थपरक लोकें दे चरित्रें गी व्यंगात्मक गीतें ते शब्दें राहें गोआड़े दा ऐ कि'यां लोक अपने इक ममूली हारे सोआर्थ पिच्छे बिकै करदे न।

प्रश्न-2 'नमी आवाज' नाटक दी तत्वे दे आधार उपर अलोचना करो?

**उत्तर** – 'नमी आवाज' नाटक इक प्रतीकात्मक शैली च लिखे गेदा नाटक ऐ। नाटक भ्रष्टाचारी ते शङ्खन्त्रकारी व्यवस्था दे शिकार ते इसदे खलाफ आवाज चुकियै चलने आहले लोकें उपर आधारत ऐ। इस नाटक च नाटककार ने एह दस्सने दा प्रयास कीते दा ऐ जे शङ्खन्त्रकारी व्यवस्था अपने शङ्खन्त्र कन्ने लोकें च फुट्ट पोआइयै उनेंगी गुमराह करने दा हर सम्भव प्रयास करा करदी ऐ। जेहड़े लोक इसदे शङ्खन्त्र गी समझने च नाकाम रौहन्दे न, ओह अपने आस्तै तरक्की-बाढ़े दे सारे रस्ते बंद करी लैदे न। उंदी सोच-समझ इस व्यवस्था दे घेरे च फसियै कम्म करना बंद करी दिंदी ऐ। ओह लोक इस व्यवस्था दियें चालें थमां बचने दा रस्ता तुप्पने दे बजाए उंदे च फसदे जंदे न ते अपना सब किश तबाह करी लैदे न। नाटककार नै इस नाटक च संदेश नांS दे पात्तर दा हवाला देइयै अपने कथन दी पुष्टी कीती दी ऐ। संदेश एम.ए. पास करियै नौकरी थमां महरूम रौहदा ऐ ते अपने भविष्य दे कन्ने-कन्ने अपनी प्रेमिका दे प्यार थमां बी उसी हथ धोना पौंदा ऐ।

दुई बक्खी जेहड़े लोक इस व्यवस्था दे रंगें च पूरी चाल्ली रंगोई जंदे न ओह अपने जमीर दा कल्ल करियै दुए दी भावनाएं कन्ने खिलवाड़ करने दा प्रयास करदे न। ओह कुसा बी चलाकी कन्ने दुएं गी शोशत करने दा मौका हत्था नेई गोआंदे। नाटककार ने इस कथन दी पुष्टी आस्तै रणदीप ते लिली नांS दे पात्तरें दा हवाला दित्ते दा ऐ। रणदीप अपने जमाती संदेश गी नौकरी दा झांसा देइयै उसदी प्रेमिका गी अपनी हवस दा शकार बनाने दी योजना बनांदा ऐ ते लिली इस घनौनी साजश च उसदा साथ देने गी तेआर होई जंदी ऐ। नाटक च एह दस्सेआ गेदा ऐ जे इस भ्रष्ट व्यवस्था गी बदलने दा जेहड़े लोक प्रयास करदे न, लोक उनेंगी पागल करार देइयै अपना खैदा छड़ाने दी कोशिश करदे न। नाटक च बुद्धे आदमी दा किरदार इस गल्ला दा सबूत ऐ।

#### पात्तर-चित्रण

नाटक च बैक-ग्राऊंड आवाज दे इलावा, संदेश, बुद्धा आदमी, मस्त मागडू रोहलू राम रणदीप ते पंज मर्दाना पात्तर न जदके संजोगता ते लिली दो नारी पात्तर न।

आवाज, संदेश, बुद्धा आदमी, मस्त मागडू संजोगता नाटक दे प्रमुख पात्तर न। रोहलू राम, रणदीप, लिली बगैरा सहायक पात्तर न।

## अवाज

अवाज शङ्खन्त्रकारी ते भ्रष्ट व्यवस्था दे प्रतीक दे रूपै च बझोंदी ऐ। शङ्खन्त्रकारी व्यवस्था ऐसे-ऐसे शङ्खन्त्र रचदी ऐ जे पढ़े-लिखे दे ते सूझवान व्यक्तियें दी पुख्ता सोच बी इ'नें शङ्खन्त्रें दा शकार होइयै नकारा होई जंदी ऐ। ओह लोकें गी मिलियै इक सांझी सोच बनाइयै चलने दा कोई मौका नेई दिंदी। ओह इ'यै चांहदी ऐ जे लोक उसदे दबा हेठ आइयै जी'-हजुरी करदे रौहन। ओह लोकें गी अपने-अपने मसले च गै उलझाइयै रखदे न। तां जे लोकें दी सोच सिर्फ अपने आपै तगर गै सीमित रवै। आवाज कन्नो-कन्नी अपने मनसूबें गी बुहास्सरदी रौहन्दी ऐ। ओहदा असली मकसद लोकें च साम्प्रदायक दंगे करोआइयै लोकें च फुट्ट पैदा करना ऐ। ओह हरगिज गवारा नेई करदी जे लोक उसदे शङ्खन्त्रें कोला मुक्त होई सकन। ओह अपने खलाफ सिर सोआकने आहले व्यक्तियें गी अपना शत्रु समझदी ऐ उंदे मनसूबे गी नाकाम करने दा हर सम्भव प्रयास करदी ऐ। ओह अपनी जी-हजुरी ते उसदे मतैहत रौहने आहले व्यक्तियें गी पूरा संरक्षण दिंदी ऐ।

## संदेश

संदेश अज्जै दी भ्रष्ट ते शङ्खन्त्रकारी व्यवस्था च फसे दा इक पढ़े-लिखे दा मजबूर नौजोआन ऐ। पढ़े-लिखे दे बाकी नौजआनें आंगर उसदा बी इक मात्तर सुखना नौकरी प्राप्त करने दा ऐ। पर बाकफी ते खीसे च पैसा नेई होने कारण उसदा एह सुखना इक सुखना गै बने दा रे'ई जंदा ऐ। नराशा दे आलम च ओह हर बेल्लै अपने आपै गी कोसदा रौहदा ऐ। ओह अपनी जिम्मेदारियें गी बखूबी समझदा ऐ। पर बेरोजगार होने करियै उनेंगी पूरा करने दी समर्था नेई रखदा। संदेश इमानदारी दे रस्ते उप्पर चलिगै अपनी मंजल तोड़ी पुज्जना चांहदा ऐ। पर बेईमानी दे दौर ईमानदारी कन्नै चलना ओहदे लेई दोधारी तलवारी पर चलने आंगू साबत होंदा ऐ। ईमानदारी दा राग अलापदे-अलापदे ओह अपनी प्रेमिका तक गी बी गोआई दिंदी ऐ। पर, अपने लक्ष्य तोड़ी पुज्जने च असफल रौहदा ऐ। खीर च ओह अपना ख्याल तज्जियै दुएं आस्तै इस व्यवस्था कन्नै लड़ने गितै तेआर होई जंदा ऐ।

संदेश सच्च गी कबूलियै चलने आहला व्यक्ति नजर औंदा ऐ। ओह अपनी प्रेमिका संजोगता गी साफ-साफ आक्खी ओड़दा ऐ जे उसदा भविक्ख उस कन्नै रेहियै उज्जवल नेई होई सकदा। ओह अपनी प्रेमिका गी झूठे सुखने दस्सियै भरमाने दी कोशिश नेई करदा, सगुआं उसदा भरम मटाने दी कोशिश करदा ऐ। ओह संजोगता बगैर रेहियै अपने आप गी सजा देई सकदा ऐ। पर उस दि'यां खुशियां नेई खोही सकदा। इस करियै ओह संजोगता गी कुसै होर कन्नै ब्याह करने दी सलाह दिंदी ऐ। संदेश हर बेल्लै नराशा दे घेरे च बज्जे दा लभदा ऐ। ओह अपने भविक्ख दे प्रति कदें बी आशावादी नजरी नेई औंदा। ओह गरीब ते नराश जरूर लभदा ऐ, पर अपने असूलें कन्नै गलत समझौता करने दा हामी नेई लभदा। ओह अज्जै दी नौजोआन पीढ़ी आस्तै ईमानदारी दे मामले च प्रेरणा स्रोत बनने च सफल ऐ।

## संजोगता

संजोगता नाटक दी प्रमुख नायिका ऐ। ओह नाटक च संदेश दी प्रेमिक दे रूपै च सामने आँदी ऐ। ओह समें दी रफ्तार कन्नै चलने आहली कुड़ी ऐ। ओह अपने प्रेमी संदेश गी समें दे कन्नै समझौता करियै चलने दी सलाह दिंदी ऐ। ओह संदेश गी हर चाल्ली समझाने दा प्रयास करदी ऐ। जे इमानदारी ते कोरा आदर्शवाद अज्जै दे समें च कुसै कारी नेई आँदे। ओह गलांदी ऐ जे एह दोयै सिर्फ थोहड़े चिरै आस्तै अपने मनै गी तसल्ली ते देई सकदे न। पर खुशहाल जिंदगी जीने दा सरिस्ता नेई करी सकदे। ओह अपने प्रेमी कन्नै ब्याह करने दी इच्छुक ते लभदी ऐ पर उसदे नराशावादी ते आदर्शवादी द्रिष्टीकोण गी बदलने च नाकाम राँहदी ऐ। ओह समें दी नजाकत दिक्खियै कुसै होर कन्नै ब्याह करी लैंदी ऐ।

## मस्त मांगडू

मस्त मांगडू नाटक दा इक म्हत्वपूर्ण पात्तर ऐ ओह शंगार रस दे कवि दे रूपै च सामने आँदा ऐ उस दि'यें गोश्ठियें च सिर्फ बेहल्ले मुष्टंडे गै दर्शक होंदे न। इस गल्ला गी ओह आपूं बी कबूलदा ऐ। ओह इक मस्त-मलंग माहनू ऐ। उसगी अपनी कलम दी ताकत दा एहसास ते ऐ, पर ओह अपनी कलम दा से'ही प्रयोग करदा नेई लभदा। ओह अपनी कविताएं द्वारा भ्रष्ट व्यवस्था ते उसदे शड्यन्त्रें थमां लोकें गी सोहगा करने दे बजाए आपूं उसदा शकार बनी जंदा ऐ। नाटक दे इक पात्तर बुड्ढे आदमी द्वारा झुनके जाने पर ओह कलम ते अपनी अवाज जनता गी जागरुक बनाने आस्तै चुकदा ऐ। इस गल्ला पर बुड्ढे आदमी दा शुक्रिया अदा करदा ऐ। उसदे बाद ओह बुड्ढे आदमी दे सैहयोग ते प्रेरणा कन्नै जनजागरण दा बीड़ा ठोआंदा ऐ ते शड्यन्त्रकारी व्यवस्था गी बदलने दा अनथक्क प्रयास करदा ऐ। मस्त मांगडू नांऽ दा पात्तर नाटक च इक शायर दे रूपै च चितरोए दा ऐ। उसदे लैहजे थमां एह कुतै नेई बझोंदा जे ओह इक शायर ऐ। पूरे नाटक च ओह कुतै बी शेऽयरो-शायरी करदा नेई लभदा। नाटककार ने जेकर दो चार शेऽर उसदे मूँहा खोआए दे होंदे तां पाठकें दर्शकें गी उसदे स्तर ते शैली दी जानकारी होई सकदी ही पर नाटककार ने इस मामले च मस्त मांगडू कन्नै ना-इन्साफी कीती दी लभदी ऐ।

## बुड्ढा आदमी

बुड्ढा आदमी नाटक च सारेंशा सशक्त ते म्हत्वपूर्ण पात्तर ऐ। ओह नाटक दी केन्द्री भूमिका च नजरी आँदा ऐ ते जने-खने कोला पंजी-दस्सी मंगदा ऐ। ओह जीवन दे कौड़े-कसैले सच्च दा भुगतभोगी ते जिंदगी दे तलख-तजरबे दा गूढ़ ज्ञानी प्रतीत होंदा ऐ। ओह इक साफ दि लते मूँह फट्ट इन्सान ऐ। ओह हर कुसै दे मूँहां पर कोरी ते सच्ची गल्ल आखी ओड़दा ऐ। ओह पूरे नाटक च भिक्ख मंगने दे कन्नै-कन्नै समाजिक चेतना जगाइयै लोकें गी समाजिक नां बरोबरी ते भ्रष्टाचार दे बरुद्ध लड़ने दी प्रेरणा बी दिंदा ऐ। ओह पैदाइशी भिक्खमंगा नेई बल्के इक अच्छे खासे-असर-रसूक रखने आहले खानदान कन्नै सरबन्ध रखने आहला व्यक्ति ऐ। ओह अपनी जोआनी च अपनी पिता दे रसूक कन्नै थोने आहली नौकरी गी ठोकर मारियै मजूरी करना पसिंद करदा

ऐ। ओह मनदा ऐ जे असर-रसूक ते सफारश कन्नै लगने आहले लोकें दे कारण गै समाजिक आर्थिक ते बौद्धिक संतुलन च अस्थिरता बनै करदी ऐ। कीजे सफारशी लोक अगै आई जंदे न योग्यता रखने आहले लोक पिच्छे रेई जंदे न। ओह समूलची भ्रष्ट व्यवस्था गी पूरी चाल्ली बदलने दा हामी ऐ ते ओह इस कम्मै आस्तै लगातार संघर्षशील रौहदा ऐ।

बुढ़ा आदमी नाटक च सूतस्थार दी भूमिका च लभदा ऐ। ओह हर पातर गी इक-दुए कन्नै जोड़ी रखदा ऐ। ओह पढ़े-लिखे दे नौजआनें ते इक आदर्श स्थापत करने च सफल रेह दा ऐ।

### रोहलू राम

रोहलू राम उ'नें लौहके दर्जे दे सरकारी कर्मचारिएं दी नुमाइंदगी करदा ऐ जेहड़ं घट्ट तनखाह ते मते खर्चे कारण म्हेशां आर्थिक तंगी दा शकार रौहदे न। रोहलू राम 240 रुपए म्हीने दी तन्खवाही उप्पर कम्म करने आहला इक सरकारी कर्मचारी ऐ। ओह अपने परिवार दि'यें जरूरतें ते जिम्मेदारियें गी पूरा करने च असमर्थ लभदा ऐ। ओह इक भला मानस ऐ। जेहड़ा अपने परिवार दे सदस्यें दी गिनतरी च बाढ़ें गी परमात्मा दी मर्जी आखियै अपनी गलती छपैलने दा प्रयास करदा ऐ। ओह सारा-सारा दिन दफ्तर सिर खपांदा ऐ पर उसगी उसदे कम्मै दी माकूल तनखाह नेई थोंदी। ओह हर म्हीने आर्थिक तंगी च गुजर-बसर करदा ऐ। पर ईश्वर उप्पर विश्वास करने आहला बी लभदा ऐ। पर अपनी माली हालत कमजोर होने करियै अपनी बदनसीबी दे रोने बी रोंदा ऐ। मस्तू मांगडू ते बुढ़े आदमी दे सम्पर्क च औने दे बाद उब्बी भ्रष्ट व्यवस्था दे खलाफ अपनी लड़ाई शुरू करदा ऐ।

‘रोहलू राम’ कोई मता प्रभावशाली पातर नेई बझोंदा पर उसदी हालत थमां लौहके मलाहजमें दे पारिवारिक जीवन दे यथार्थ दी तस्वीर सामने आई खडोंदी ऐ।

### रणदीप

रणदीप नाटक दा इक सशक्त सहयोगी पातर ऐ ओह अज्जै दी भ्रष्ट व्यवस्था च पूरी चाल्ली गिढे-मिढे दा नौजआन ऐ। ओह अपने जमीर गी मारियै पैसा ते ऐशो-अराम दे सारे साधन ते कठेरी लैंदा ऐ पर अपना चरित्र बी दागी करी लैंदा ऐ। ओह नित नमी-नमियें कुड़ियें दी संगत दा आदी लभदा ऐ। खूबसूरत कुड़ी उसदी कमजोरी साबत होंदी ऐ। ओह सिर्फ अपनी ऐशपरस्ती कन्नै मतलब रखदा ऐ। उसी दुयें दी भावनाएं कन्नै कोई सरोकार नेई। सच्चे हिरखै दे बारे च ओह सोचना फजूल समझदा ऐ। खूबसूरत कुड़ियें दे मामले च उसदी कमजोरी उस बेल्लै सामने औंदी ऐ, जिस बेल्लै ओह अपने बचपन दे जमाती संदेश दी प्रेमिका संजोगता गी दिखदे गै मोहित होई जंदा ऐ। ओह हर हाल च संजोगता गी अपनी वासना दा शकार बनाना चाहदा ऐ। इस आस्तै ओह संदेश गी नौकरी लोआने दा झांसा बी दिंदा ऐ ते कन्नै गै अपनी प्रेमिका लिली दा सैहयोग बी मंगदा ऐ। रणदीप दे किरदार गी दिक्खियै इ'यां बझोंदा ऐ जे ओहदे आस्तै सिर्फ पैसा ते अपनी ऐशपरस्ती गै म्हत्व रखदे न। इ'नें दोन्ने चीजें आस्तै ओह कुसै बी हद्द तगर जाई सकदा ऐ।

## लिली

लिली सैहयोगी नारी पातर दे रूपै च पाठकें/दर्शकें सामनै औंदी ऐ। ओह रणदीप जनेह ऐय्याश माहनू कन्नै हिरख करदी ऐ।र उसदे हर इशारे पर नचदी ऐ। ओह अपने प्रेमी दी हवस मिटाने आस्तै नित्त-नमियें कुड़ियें दा सरिस्ता करदी ऐ। ओह अपने प्रेमी दे हत्थें दी कठपुतली बनी दी लभदी ऐ। ओह आपूं शोशत होंदी गै ऐ, अपने कन्नै होरनं कुड़ियें गी बी अपने प्रेमी द्वारा शोशत करने च सहायक बनदी ऐ। ओह इक अ'न्नी प्रेमिका बझोंदी ऐ, जेहड़ी अपने प्रेमी पर ब्याह आस्तै दबाऽ पांदी ऐ। ओह इन्ना बी सोच बचार नेई करदी जे रणदीप जनेह ऐय्याशप्रस्त कन्नै ब्याह करियै ओहदा भविक्ख केह होग? ओह इक ऐसी प्रेमिका ऐ जेहड़े अपने प्रेमी गी सिद्दे रस्तै लाने दे बजाए आपूं बी उस कन्नै गलत रस्तै चलन लगी पौंदी ऐ

## संवाद

नाटक दे सारे संवाद पातरें दे सोआत्म ते उंदी स्थिति अनुकूल न। संवाद कुतै लौहके, कुतै लम्में ते कुतै दरम्यानी लम्बाई दे न। लम्मे संवाद नाटक दे प्रस्तुतिकरण ते पातरें दी स्थिति गी प्रगट करने च स्भावक लभदे न।

शड्यन्त्रकारी आवाज अपनी पंछान किस चाल्ली करोआंदी ऐ, “मैं शड्यन्त्रकारी दमाग आं। शैतान दा चेल्ला ते हैवान दा गुरु। लालच दा जाया ते वैहशत दा भाई, बदी दा पालक ते नेकी दा नाशक। ते तुस सारे मेरे शड्यन्त्रें दे शकार, बेबस ते लाचार, नकारा, अर्थहीन बेकार।” (सफा-41)

“हा-हा-हा। ओह भोलेओ जेकर तुंदी समझ करन लगी पवै तां ते तुस झट्ट कीते दे मेरे शड्यन्त्रें कोला बची निकलो। मेरी चालें गी समझी सको में सत्ताधीश शड्यन्त्रकारी दमाग आं। बादशाहियां हत्थयाने ते चलाने आह्ला। मिगी समझने आह्ली दा सर्वनाश निश्चत ऐ।” (सफा-43)

अपनी प्रेमिका कन्नै वार्तालाप करदे संदेश दी बेबसी ते नराशा गी प्रकट करदे संवाद –

“होर केह आक्खां? एह आक्खां जे सब किश ठीक होई जाग जदके मिगी पता ऐ किश बी ठीक निं होई सकदा जदके तेरे कन्नै मेरा जीना होर बी मुश्कल होई जाहग। में तेरे बेहियै तेरे उप्पर कविता लिखां तुगी गोदी च लेइयै तेरा शलैपा सोआरां जां तुगी कलावे च लेइयै ख्याली बनां।” (सफा-83)

## भाशा-शैली

नाटक दी भाशा आम फ़ैम डोगरी ऐ। भाशा सरल ते रोचक ऐ। भाशा पातरें अनुकूल ते स्भावक ऐ। भाशा-शैली च ब्यंग दी पुट नाटक दी गुणवत्ता गी नखारने च मदद करदी ऐ। नाटक दा इक-इक शब्द पाठकें/दर्शकें दे दिलो-दमाग उप्पर अपना प्रभाव छोड़ी जंदा ऐ। नाटक च मुहावरे खुआनैं ते अलंकारें दा समावेश नाटक च रोचकता पैदा करदा ऐ।

## मुहावरे

|                                            |          |
|--------------------------------------------|----------|
| “जे बेल्लै हत्था नेई गुआ।”                 | (सफा-43) |
| “सिर कलम करना मेरा शौक ऐ।”                 | (सफा-43) |
| “जिसदे नै बड़े-बड़े पर्दे फाश होई जंदे न।” | (सफा-45) |
| “सखनी भुंबली च फूँका मारां दे आं।”         | (सफा-45) |
| सारी दुनियां दी मंगनी पर टंगनी।”           | (सफा-49) |

## खोआनें दा प्रयोग

|                                |          |
|--------------------------------|----------|
| “मान निं मान में तेरा मेहमान।” | (सफा-56) |
| “आपू निं थाहर पंज पीर साथ।”    | (सफा-57) |
| “आप मोए जग परलो।”              | (सफा-72) |

## अलंकार

नाटक च आमतौरा उप्पर अर्थ अलंकारे दी बरतून होई दी लभदी ऐ — 1. उत्प्रेक्षा, 2. उपमा, 3. रूपक।

## उत्प्रेक्षा

|                                                        |          |
|--------------------------------------------------------|----------|
| “एह हादसे ते तेरी जिंदगी दा हिस्सा जन बनी गेदे न।”     | (सफा-57) |
| “साढ़े बुद्धिजीवियें गी बुद्धि आक्खो जि'यां ऐ गै नेई।” | (सफा-57) |

## उपमा

|                                                                                             |          |
|---------------------------------------------------------------------------------------------|----------|
| “जिंदे बब्ब थुआड़े आंगर होंदे न ओह इयै किश करदे न।”                                         | (सफा-41) |
| “में चाहन्नां जे तूं इसदा पूरा-पूरा फायदा लैएं। तुम्मी मेरे आह्ला लेखा इक बड़्हा आदमी बने।” | (सफा-44) |

## रूपक

“जेहड़े आपूं इक बुझारत होन उंदे अगै बुझारतें दा सुआल पैदा निं होंदा।” (सफा-49)

“गुरबत दी ऐनक दे शीशे भलेआं धुंधले ते बे-बसीले होंदे न।” (सफा-51)

## निर्देशन ते मंचन

नाटककार ने निर्देशन दे मामले च कोई कंजूसी नेई कीती दी। उसने जगह-जगह निर्देशन देइयै पातरें दी स्थिति गी प्रस्तुत कीते दा ऐ। नाटक की जे मंचन ते निर्देशन दी विद्या ऐ इस करियै इक सोहगा नाटककार अपनी रचना च लोड़चदे थाहरे पर निर्देशन देना नेई भुलदा। नाटककार ने जित्थे थाएं-थाएं निर्देशन देइयै पाठकें गी स्थूलियत प्रदान कीती दी ऐ। उत्थै इक निर्देशक दे अधिकारें दा अतिक्रमण बी कीता दा ऐ।

मंचन दी द्रिष्टी कन्नै उ'यै नाटक सफल मन्नेआ जंदा ऐ, जिसगी मंच पर सफलता कन्नै खेढेआ जा, जित्थूं तगर 'नमीं आवाज' नाटक दे मंचन दा सरबन्ध ऐ, एह साधारण ते खुल्ले मंच पर खेढेने जोग नेई ऐ। इसी उत्थै गै खेढेआ जाई सकदा ऐ जित्थै लाइटस ते सांऊड आदि दी बशेश व्यवस्था होयै। इस नाटक च ऐसा कोई बी सीन जां पातर नेई ऐ। जिसगी मंच पर प्रस्तुत नेई कीता जाई सकै। जि'नें द्रिश्यें गी मंच पर प्रस्तुत करने च औख आई सकदी ऐ नाटककार ने उ'नेंगी बैक ग्रांऊड आवाज दे माध्यम कन्नै प्रस्तुत करने दा सफल प्रयास कीते दा ऐ।

## उद्देश्य

नाटककार दा उद्देश्य भ्रष्ट ते शङ्क्यन्त्रकारी व्यवस्था च फसे दे आम मनुक्खी जीवन दी यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करना ऐ। अज्जै दी भ्रष्ट व्यवस्था च पढ़े-लिखे दे नौजआनें गी नौकरी आस्तै किस चाल्ली दर-दर भटकना पौंदा ऐ। नाटककार ने संदेश नांS दे पातर दी बेरोजगारी दा हवाला देइयै स्पष्ट कीते दा ऐ। नाटककार ने नाटक द्वारा इब्बी दस्सने दा प्रयास कीते दा ऐ जे शङ्क्यन्त्रकारी व्यवस्था आम भलोकें माहनुएं गी अपने शङ्क्यन्त्र दा शकार बनाइयै उंदियें तांहगे-मेदें दा खून करने दा हर संभव प्रयास करदी ऐ। उसदे शङ्क्यन्त्र दा शकार म्हेशां काबल ते गैर-सफारशी लोक बनदे न। नाटककार ने इस व्यवस्था गी बदलने आस्तै लोकें गी अपने निजी सोआर्थ छोड़ने ते किट्ठे होइयै लड़ने दी प्रेरणा दिती दी ऐ।

प्रश्न-3 'दनां सोचो ते सेही' नाटक दी तत्वे दे आधार उप्पर अलोचना?

**उत्तर** – 'दनां सोचो ते सेही' नाटक इक पारिवारिक दस्तावेज ऐ। नाटक दा ताना-बाना घरै च अपनी-अपनी चौधर चलाने आह्ले पति-पत्नी गी लेइयै रचेआ गेदा ऐ। सुवधा राम ते उसदी पत्नी शांति हर घड़ी कुसा ना कुसा गल्ला पर घरै च बखैद पाई रखदे न। दौनें दी लड़ाई घरै च अपनी-अपनी चौधरै दी दावेदारी गी लेइयै होंदी ऐ। दौनें चा इक बी व्यक्ति हार मन्ने गी तेआर नेई होंदा। उ'नें दौनें दे इस बतीरे दे कारण घरै दी सुख शांति भंग होई दी रौहन्दी ऐ। घरै दे सारे जीव अंदरो-अंदरी कुढ़दे रौहदे न। पर, अपने माता-पिता दे लेहाज ते लोकाचारी दे कारण मूहां किश निं बुहास्सरदे। ओह दोयै पति-पत्नी सिर्फ अपने-अपने अहम् दी गै सोचदे न। दुये जने बारै सोचने दी उंदे कोल फुरसत गै नेई होंदी। उनेंगी दुए जनें दि'यें भावनाएं कन्ने कोई सरोकार नेई। ओह दोयै बस अपनी-अपनी चौधर कायम रखने च गै अपनी दनाई समझदे न। उंदे बखैद कारण घरै दे बाकी जीव दी केह दशा ऐ, ओह सोच-बचार नेई करदे। पर जिस बेल्लै गल्ल उंदी बरदाशत दी हद्दै थमां बाहर होई जंदी ऐ तां आज्ञा घर छोड़ियै जाने दी तेआरी करन लगी पौंदा ऐ। घर च कोहराम मची जंदा ऐ। खीर सुवधा राम गी अपनी गलती दा एहसास होंदा ऐ ते ओह अपने सिरा दी पग अपने बड़दे पुत्तर क्रांति दे सिरा पर रक्खियै उसी घरा दी जिम्मेदारी सौंपी ओड़दा ऐ।

### चरित्र-चित्रण

#### सुवधा राम

सुवधा राम घरै दे बड़दे बजुर्ग दे रूपै च सामने औंदा ऐ। ओह इक अक्खड़ मजाजी, इक्कल सोख, जिद्दी-कंजूस, लालची, मूंह फट्ट किस्मै दा व्यक्ति नजरी औंदा ऐ। ओह अपने घरै च सिर्फ अपनी गै चौधर चलांदा ऐ। अपना हर फैसला दुएं पर थोपना अपना अधिकार समझदा ऐ। पर अपने फर्ज थमां बिल्कुल अंजान प्रतीत होंदा ऐ। ओह अपनी मन-मर्जी दा मालक ऐ। अपनी मर्जी दे खलाफ होने आह्ले कम्म ते व्यक्ति उसी दना नेई भांदे। उसगी अपने गै द्वारा कीता गेदा कम्म दनाई आह्ला लगदा ऐ। ओह अपने घरै च सिरफ अपने आपै गी काबल ते समझदार समझदा ऐ। दुएं दे समझाने दा उस पर कोई असर नेई होंदा। इत्थूं तगर जे ओह अपने जालम दि'यें हितकारी सलाहें गी बी नजर अंदाज करी ओड़दा ऐ। ओह इक गालडू ते झगड़ालू व्यक्ति बी नजरी औंदा ऐ। ओह गल्लें च कुसै गी बी अग्गें निं लंघन दिंदा। ओह हर गल्ला अपनी पत्नी शांति कन्ने लड़ने-झगड़ने पर उतारु रौहदा ऐ।

सुवधा राम इक कंजूस ते लालची सोआत्म आह्ला माहनू ऐ। अपने जागतै दी कड़माई करदे बेल्लै दाजै च बेसहाबा सामान लैने गी तेआर होई जंदा ऐ जे कुड़ी देई ओड़ी पिच्छै केहू रेई गोआ?

खीर च उसी अपनी लोआदी दे बरोध अगै झुकना पौंदा ऐ। ते ओह अपनी गलती पर पछतांता बी ऐ। सुवधा राम दा चरित्र पाठकें/दर्शकें च कुतै-कुतै खिंझ बी पैदा करदा ऐ ते इसदे कन्नै गै उसदी मूंह फट्ट शैली उंदा मनोरंजन बी करदी ऐ। सुवधा राम इक अच्छे पिता ते पति दे रूपै च अपने फर्ज थमां विमुख प्रतीत होंदा ऐ।

### शांति देवी

शांति देवी बी अपने पति आंगर गै जिद्दी ते झगड़ालू ऐ। अपने पति आहले मते हारे लक्षण ओहदे च मजदूर न। उसी बी कुसै गल्ल हारना जां पिच्छे हटना गवारा नेई। उब्बी घरै च बखैद्व पाने ते उन्नी गै जिम्मेदार ऐ, जिन्ना के उसदा पति। झगड़े दे मामले च ओह अपने पति थमां बी चार गैई अगै लभदी ऐ। उसी हर गल्लै च अपनी लत्त डाने दी खोऽ ऐ ते इस खोऽ शा ओह कदें निं टलदी। ओह कदें बी कुसै गल्ला अपनी जीभ दंदे हेठ नेई रखदी। ओह अपने पति कन्नै झगड़े च सामी बरोसरी करदी ऐ। घरै च बखैद्व पौने दे कारण उसी सिर्फ अपना पति सुवधा राम गै लभदा ऐ पर अपने पासै ओह जरा बी ख्याल नेई करदी जे उब्बी बराबर दोशी ऐ।

शांति देवी घर आए दे परोहने दी दिक्ख-रिक्ख बी नेई करदी उसदे पति दा दोस्त जालम उसगी समझाने दी कोशिश करदा ऐ तां शांति उसगी 'फेरमे चुल्ले' दी संज्ञा दिंदी ऐ। शांति इक ऐसी नारी ऐ जेहड़ी हर गल्ला दा पुट्टा मतलब कड़िढयै झगड़े दा मसौदा तेआर करी लैंदी ऐ कुसै दी इज्जत मान दी उसगी बिल्कुल परवाह नेई। शांति देवी अपने पति आंगर अपनी मन-मर्जी दी मालक सेही होंदी ऐ। ओह कुसै बी जीव कन्नै सलाह-मशवरा कीते बगैर अपनी धीऽ दा रिश्ता करन टुरी पौंदी ऐ। उब्बी अपने पति आंगर अपने घरै च अपनी सामी मलकीयत दी दावेदारी जतलांदी ऐ। शांति इक अक्खड़ सस्स, गैर जिम्मेदार मां, ते लड़ाकी पत्नी दे रूपै च मिलदी ऐ।

### क्रांति कुमार

क्रांति कुमार सुवधा राम ते शांति देवी दा जेठा पुतर ऐ। ओह इकदम शांत स्थाऽ दा पातर ऐ। ओह हर गल्लै गी सुलह-सफाई कन्नै नबेड़ने दा हामी ऐ। ओह शांति पसन्द व्यक्ति ऐ ते उसगी घरै च कुसै बी किस्म दा बखैद्व ना-गवार गुजरदा ऐ। ओह केई बारी अपने माता-पिता गी लड़ाई-झगड़े थमां परहेज करने दी सलाह दिंदा ऐ पर उंदे झगड़े च उसदी इक बी नेई चलदी। इससे गल्ला उसी केई बारी अपमानत बी होना पौंदा ऐ। पर, अपने बड़्हे बजुर्गे दे लिहाज ते लोकलाज दे कारण ओह अपनी जबान सीऽ लैंदा ऐ। उसदा मन्नना ऐ जे बखेद्विये कन्नै जेकर बखेद्वी बनी जाओ तां मामला होर बी उलझनां पैदा करी सकदा ऐ। तद्दै ओह अपनी पत्नी संतोष गी बी संयम बरतने दी सलाह दिंदा ऐ।

क्रांति कुमार इक संयमी ते सैह्नशील पात्तर दे रूपै च लभदा ऐ। पर उसदी सैह्नशीलता दुएं दी नजरी च कमजोरी ते दब्बुपनै दा पर्याय बनी दी लभदी ऐ। ओह हर हाल च घरै च सुख शांति बनाई रखने दा हामी ऐ।

### आज्ञा राम

आज्ञा राम सुवधा राम दा लौहका पुत्तर ऐ। ओह अपने बड़दे भ्राऽ दे सोआतम'शा इकदम विपरीत प्रवृत्ति दा ऐ। ओह माता-पिता दे झगड़े गी चुपचाप बरदाशत करने दे हक च नेई लभदा। ओह अपने घरेलू झगड़े च लोक-लाजै दी दनां परवाह नेई करदा ते अपने माता-पिता दे आचरण गी खुल्ली चनौती दिंदा ऐ। उसदा गलाना ऐ जे लोक उंदे माता-पिता गी जेकर समझान निं आई सकदे तां पुत्तरें दे बरोध पर उ'नेंगी टिप्पणी करने दा बी कोई हक्क नेई।

आज्ञा राम इक तेज तरार ते आत्म विश्वासी पात्तर ऐ। ओह सरकारी नौकरी करने दे बजाए स्वरोजगार दे तैहत अपने पैरें पर खढ़ोने दा हामी ऐ। ओह अपने पिता दी नजरें च बेशक्क नकम्मा ते नखटटू ऐ। पर, ओह अपनी योग्यता सिद्ध करियै अपने पिता दे इस द्रिष्टीकोण गी बदलना चांहदा ऐ। उसदा मन्नना ऐ जे आदमी दी योग्यता दा अंदाजा मौका उपलब्ध कराए बिना ते वक्त कोला पैहले नेई लाया जाई सकदा। अपने घरै च इक उ'यै व्यक्ति ऐ जेहड़ा अपने पिता दे गलत फैसले दा बरोध करदा ऐ। अपने पिता गी सिद्धे रस्तै लाने आस्तै ओह घर छोड़ियै जाने दी तेआरी कर लैदा ऐ। खीर च ओह अपने पिता गी उसदी गलती दा एहसास कराने च सफल होई जंदा ऐ। आज्ञा राम नराश ते बेरोजगार नौजआनें आस्तै इक प्रेरणा स्रोत बनियै सामने औंदा ऐ।

### जालम

'जालम' नाटक दा इक म्हत्वपूर्ण पात्तर ऐ। ओह इक हमदर्द, सच्चा मित्तर ते इक सूझवान व्यक्ति लभदा ऐ। ओह अपने मित्तर सुवधा राम गी उसदे अक्खड़ रवेइये दे कारण उसगी समें-समें पर समझाई-बझाइयै मित्तराचारी दा पूरा फर्ज नभांदा ऐ। ओह समें दी नब्ज ते रफ्तार गी परखियै चलने आहला व्यक्ति ऐ। ओह नमीं सोच दी हामी ते नामीं पीढ़ी गी उंदी मर्जी मुताबक कम्म करने दा हमायती बी ऐ। जे बजुर्गे गी जिन्नी तौले होई सकै घरै दी सारी जिम्मेदारी लोआदी पर सुटिटयै सुखरू होई जाना चाहिदा। ओह धीऽ दे जागतै गी नजरी दे इक्कै पल्लड़े च तोलदा ऐ। ओह अज्जै दे समें च दाज लैने दैने पर बरोध प्रकट करदा ऐ। पर, अपने ब्याह च दाज लैने दा कारण ओह नासमझी दसदा ऐ। ओह हर बारी अपने मित्तरै गी घर च सुख-शांति बनाए रखने दी सलाह दिंदा ऐ। उसदा मन्नना ऐ जे बड़दे बजुर्गे दे झगड़े दा लोआदी पर माझा असर पौंदा ऐ। इस करियै ओह अपने बखेद्धी मित्तर ते उसदी पत्नी गी खबरदार करदा रौंहदा ऐ। जालम दा किरदार पाठक/दशकें पर अपना पूरा प्रभाऽ छोड़ी दिंदा ऐ।

## संतोष

‘संतोष’ सुवधा राम दी बड़्डी नूह ऐ ते क्रांति दी पत्नि दी भूमिका च नजरी औंदी ऐ। उब्बी उ‘ने नारियें दी गिनतरी च नजरी औंदी ऐ। जेहड़ियां अपने सस्सु-सौहरे दी बदसलूकी ते अपने पतियें दी चुप्पी साद्धने कारण मनो-मन कुढ़दियां रौहदियां न। पर अपने मनै दी गल्ल बुहास्सरी नेई सकदियां। इस चाल्ली संतोष बी अपने सस्स सौहरे दे बतीरे कारण दुखी होंदी ऐ। पर ओहदी कोई पेश नेई चलदी। ओह अपने मनै च पाले दा अरमान पूरा नेई करी सकदी। ओहदियां सद्धरां, उसदे चाऽ मनै च गै रे’ई जंदे न। ओह अपने पति गी घर दी कलह कोला दूर जाइयै रौहने दी सलाह बी दिंदी ऐ। पर, उसदा पति उसदी इस सलाह पर अमल नेई करदा। ओह अपने पति ते सस्सू सौहरे दौनें पाससेआ दुखी बझोंदी ऐ। कीजे उसी अपनी मर्जी मुताबक रौहने दी खुल्ल नेई थहोंदी ते नां गै बक्खरे होने दी अपने पति दी सैहमती।

## रानी

रानी इक साधारण कुडी ऐ, जिन्दी घरै च कोई बात नेई पुच्छी जंदी। ओह अपने माता-पिता ते बड़्हे भ्राएं दे दाब्बे हेठ रेहियै अपनी जिन्दगी गजारदियां न। इस्सै चाल्ली रानी बी अपने घरै च अपनी मनमर्जी नेई करी सकदी। उसगी बी अपने माता-पिता दी पसिंद-नापसिंद दा ख्याल रखना पौंदा ऐ। इत्थूं तगर जे ओह अपने ब्याह सरबन्धी होने आहले म्हत्वपूर्ण फैसले पर बी अपनी राऽ प्रगट नेई करी सकदी। उसदे माता-पिता उसदी पसिंद ते राऽ गी नजर-अंदाज करियै बक्ख-बक्ख थाहर रिश्ता ते करी ओढ़दे न। ओह घरै दी मान-मर्यादा च बज्झियै डुगगर दी सभ्यता संस्कृति दा पूरा पालन करदी ऐ। रानी सैहनशील ते अपने माता-पिता दी आज्ञा दा पालन करने आहली थीऽ दे रूपै च लभदी ऐ। ओह अपनी आत्मरक्षा ते इज्जत-मान आस्तै मशटंडे गी सबक सखाइयै समूलचे नारी जाति च हिम्मत जगांदी प्रतीत होंदी ऐ।

## अशोक

‘अशोक’ आज्ञाराम दे मित्तर ते उसदे हितैशी दे रूपै च सामने औंदा ऐ। उब्बी अपने मित्तरै आंगर सरकारी नौकरी दे बजाए सैल्फ-इंपालयमेंट पर मता जकीन करदा ऐ। तद्दै ओह कर्जा लेइयै ‘प्रिंटिंग प्रैस’ लाने दी सोचदा ऐ। ओह अपने दोस्त आज्ञा कन्नै पूरी हमदर्दी रखदा ऐ। ओह आज्ञा राम दी हर समस्या गी अपनी समझियै मसूसदा ऐ। ओह घरै च बखैद्ध दे कारण होने आहले नुक्सान कन्नै पूरी चाल्ली वाकफ लभदा ऐ। ओह अपने मित्तरै दी उसदे घरै दी बदसलूकी दूर करने दी नेक सलाह देइयै अपने मित्तर ते मित्तरी दे प्रति अपनी पूरी निश्ठा बरतदा ऐ।

## संवाद

नाटक दे संवाद सरल, त्रिक्खे ते रसीले न। संवाद पात्तरें दे सोआतम कन्नै पूरी चाल्ली मेल खंदे न। जि‘यां सुवधा राम नांऽ दा पात्तर घरै च अपनी खुदमुखतारी ते दबदबा कायम रखने च गै अपनी शान समझदा ऐ। उसदे कथन दी पुष्टि करदा ऐ।

“केहड़ा माई दा लाल मेरे खुदमुख्यतारी खुस्सी सकदा ऐ मेरे कोला भला। डक्करे निं करियै रक्खी देआं उसदे। जेहड़े तेरे कोई अगले पिछले हैन लेई आ उनेंगी बी। जिंदी शैहई पर तूं बुडका करनी ऐं।” (सफा-84)

“बत्थेरे मौके देई-देई दिक्खे इनेंगी एह नेहो कम्म करने जोगे। बेल्लियां खान गिज्जे दे न। पिछले दिनें में इनेंगी इक कुक्कड़ी लेआन्नी दिती बीऽ पंजीह रपे खरचियै। मखे लेओ कन्नै इसदी टैहल सेवा करो ते कन्नै आंडे खाओ भाएं खाओ ते भाएं बेचो तुंदी मर्जी पर एहकृ इक कुक्कड़ी दी हफाजत नेई करी सके।” (सफा-90)

“सच्चदेव दी गल्ल सच्च जानेओ, शांति भैण एह जागत परषोतम नेई मरयादा परषोतम ऐ। साक्षात राम दा अवतार ऐ, आज्ञाकारी। कदे कुसै गी नां दा परता नेई दिता केह नांऽ लैंदे। कम्म मगरा दरसो होए दा पैहले लेओ। इसदा बड्डा साहब ते इसदे बगैर पानी बी नेई पींदा।” (सफा-97, 98)

“दिक्खो कुड़े न्हेर साईं दा, इंदा सत्तै बीहें सौ ते साढा पंजे बी नेई। तुस समझदे ओ जे में हारी जाहड। इस गल्ला निं में पिच्छे हट्टन लगी।” (सफा-104)

### भाशा-शैली

नाटक दी भाशा आम बोलचाल आहली भाशा ऐ। भाशा च रवानगी ऐ ते भाशा च मुहावरें-खोआन ते अलंकार दा समावेश नाटक दी भाशाई गुणवत्ता गी निखारदा ऐ। भाशा च कुतै-कुतै अंग्रेजी ते ठेठ उर्दू शब्दावली दा समावेश बी होए दा लभदा ऐ।

### मुहावरें दा प्रयोग

“अक्खै पट्टियां बन्नी रखचै ते कन्नै रुं देई रखचै।” (सफा-82)

“हून ओकड़े निम्बलें गी निं बलगदे रवेओ।” (सफा-82)

“झेहियां लैने दी कुत्ती खोऽ पेदी ऐ।” (सफा-82)

“कसाइये आक्खै मेहरु नीं मरदे।” (सफा-83)

“सारे टब्बरै दे नक्क धूं दित्ते दा ऐ।” (सफा-83)

“कोई होर होंदी तां कोठे उप्पर चढ़ियै छिंझ पांदी।” (सफा-83)

“नक्कै घसीटां कड्ढादी तां पता लग्गना हा।” (सफा-83)

“तूं उन्नी गै सिर चढ़दी जा करनी ऐ।” (सफा-83)

### खोआनें दा प्रयोग

|                                                |          |
|------------------------------------------------|----------|
| “हड़डे-गोड़डे रेह ते राम जप्पन गे।             | (सफा-82) |
| “गल्लै कन्नै फ़ाड़ निं ढठदे।”                  | (सफा-83) |
| “जातै दी कोढ-किरली ते शतीरे गी जप्पे।”         | (सफा-83) |
| “लुंडी चिड़ी कपूरा नां फंग होन तां सुरगैई जा।” | (सफा-85) |
| “पल्लै नि धेला करदी मेला-मेला।”                | (सफा-84) |
| “बरिक्की कुड़ी भ्रऊ नै चाधियां।”               | (सफा-85) |
| “औंदा नि का ते नांS विद्यासागर।”               | (सफा-85) |

### अलंकारें दी बरतून

नाटक च अर्थअलंकारें दी गै बरतून होई दी लभदी ऐ। जि'यां रूपक, उपमा ते उत्प्रेक्षा।

### रूपकालंकार

|                                                                                                      |          |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------|
| “अच्छा हनुमान गोसाई तेरे कन्नै बाद च टीका-टिप्पणी करगे। पैहलै इस ताड़का कन्नै बैहस-मुहासा करी लेचै।” | (सफा-82) |
| “तुंदे गितै में फ़ाड़ आं।”                                                                           | (सफा-82) |
| “सच्चदेव दी गल्ल सच्च जानेओ शांति भैण एह जागत परषोतम नेई मरयादा परषोतम ऐ। साक्षात राम दा अवतार।”     | (सफा-97) |

### उपमालंकार

|                                                                                                          |          |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------|
| “तुस ते ऐ निं सलक्खने। तां बम्बीरी आह्ला लेखा घमघाई जा करदे ओ सारें गी।”                                 | (सफा-83) |
| “सनाओ, अशोक जी, कोई कम्म धंधा, नौकरी बगैर किश शुरू कीता नेई। जां आज्ञा आह्ला लेखा ठोंके गै फंडा करदे ओ।” | (सफा-93) |
| “जि'यां साढ़ा देश ना-इत्फाकी दे घेरे च गरक ऐ, इ'यां गै साढ़ा एह घर बी।”                                  | (सफा-95) |

“सचदेव दी गल्ल जानेओ शांति भैन, साढ़ी रानी दा स्भाऽ बी बड़ा मखौली ऐ तुंदे आह्ला लेखा। केह  
नांऽ लैंदे।”  
(सफा-87)

### उत्प्रेक्षालंकार

“तुसेंगी बी मैइयै सखायदा होना ऐ ढंगा दी गल्ल करने दी जि'यां सगंध होयै खाद्धी दी। कोई होने जीने  
दी गल्ल गै निं करनी।  
(सफा-94)

“इस घरा च सुआए पिता जी दे बाकी आहली दी आक्खो कोई खुआइश, कोई मरजी गै नेई।”  
(सफा-112)

“तुस दोयै आमने-सामने होंदे गै इ'यां पलची पे ओ जि'यां आक्खो पता निं कदुआं दे बरागे दे होवो।”  
(सफा-95)

प्रश्न-4 मोहन सिंह हुंदे व्यक्तित्व ते कृतित्व पर रोशनी पाओ?

नौजवान कवि ते नाटककार मोहन सिंह हुंदी कविता ते नाटकें इच जन साधारण दे चित्रण इच बड़ी सरलता ते सरसता ऐ। समाजी कुरीतियें ते स्यासी नीतियें दे बरुद्ध रोह आहली भावना ते नमें युगै दे निर्माण दी तांहग ऐ। इंदे साहित्य इच व्यंग्य दी भावना थां-थां मिलदी ऐ।

मोहन सिंह हुंदा जन्म 8 फरवरी 1955 ई. गी श्री सकत्तर सिंह हुंदे घर ग्रांड गुढा सल्हाथियां तसील साम्बा इच होआ। इंदे पिता होर आर्मी रसाले इच भरथी हे ते छे साल नौकरी करने दे परैत घर बापस आई गे ते फही सिविल इच पटवारी दे औहदे उप्पर सर्विस शुरू कीती ते गरदौर बनने उप्पर रिटायर होई गे। मोहन सिंह होरें गी, अपने पिता दी इस नौकरी दे कारण बक्ख-बक्ख ग्राएं-पिंछें इच जाने दा मौका मिलदा रेहा जिस करी बक्ख-बक्ख सूखम भेद रक्खने आहली भाशा दी इलाकाई झोन इंदे साहित्य इच मिलदी ऐ।

पढ़ने ते लिखने दा शौक इ'नेंगी बचपन थमां गै हा। इ'नें अपनी साहित्यक प्रतिभा गी कविता ते नाटकें राहें व्यक्त कीता। सन् 1969 इच एह अपना ग्रांड छोड़ियै जम्मू आई पुज्जे।

1970-72 दे इर्द-गिर्द 'साढ़ा साहित्य' इच इंदा पैहला गीत 'दिन ओह सुहाने जिंदे' छपेआ हा ते मार्च, 1974 इच रेडिया इच इंदी इक कविता बी दिहाती प्रोग्राम इच प्रसारित होई। उ'नें दिनें इच गै इ'नें 'सुखना' नां दी कवता बी लिखी। इसदे अलावा अपने संगियें-साथियें दा मनोरंजन करने आस्तै एह फुटकर शेडर बी लिखदे रौहदे। नाटकें इच अभिनय करने दा शौक इ'नेंगी शुरू थमां गै ऐ ते इसदी शुरूआत इनें रामलीला थमां कीती दी ऐ।

मधुकर हुंदे कन्नै परिचे होने उप्पर इंदे लेखन इच होर गतिशीलता आई गई, मधुकर हुंदी बजह कन्नै गै इंदी पंछान वेदपाल दीप हुंदे कन्नै बी होई गई। इंदी साहित्यक सोच गी पुष्ट करने इच इ'नें द'ऊं शक्सीयतें दा बड़ा बड़ड़ा हथ्य रेहा। मोहन सिंह होरें 1975 ई. च सब थमां पैहलें नाटक 'पृथ्वी का स्वर' च गुलाब भवन दी स्टेज उप्पर ऐक्टिंग कीती। इंदा अपना लिखे दा 'नाटक' नां दा नाटक बी गुलाब भवन दी स्टेज उप्पर गै खेढेआ गेआ जिस इच एह आपूं बी ऐक्ट करा करदे हे। इसदे अलावा ओ.पी. सारथी हुंदा लिखे दा 'तलाश' नां दा नाटक बी इससे दिन ऐक्ट कीता गेआ। इसदे बाद इंदे नाटक 'नमीं आवाज', 'काला सूरज', 'पंज कल्याणी', 'दना सोचो ते सेही' अभिनव थियेटर इच खेढे गे।

नुक्कड़ नाटकें दी शुरूआत मोहनसिंह होरें 1986 इच ग्रांड कोटे सैनियां थमां कीती। इसदे बाद 15 अगस्त, 1986 गी बलौर इच बी एह नाटक खेढे गे। नुक्कड़ नाटकें दी खातिर मोहन सिंह होरें गी बसोहली, भूँड, शननघाट, दत्तेआल, बस्सी खैरी आदि केई दूर-दरेडे ग्राएं च जाने दा मौका मिलेआ। उ'नें दिनें इक ब'रे इच गै डुग्गर मंच ने सौ शो करियै इक रिकार्ड कायम कीता हा। एह सारी प्रक्रिया बिना कुसै सरकारी सहायता दे गै चलदी रेही। एह मोहन सिंह हुंदे नुक्कड़ नाटकें दी इतिहासिक यात्रा ऐ। अज्ज नुक्कड़ नाटकें दा नांड लैंदे गै मोहन सिंह हुंदी छवि सामनै आई जंदी ऐ। एह मोहन सिंह हुंदी साहित्यक ते कला यात्रा दा अनथक्क ते सफल प्रयास ऐ।

कुसै बी साहित्यकार दा व्यक्तित्व ओहदे साहित्य इच स्पष्ट झलकदा ऐ। साहित्यकार लोकें दी मानसिकता दा विश्लेशन करिये उसी अपने ढंगा कन्नै प्रस्तुत करदा ऐ। सिर्फ फर्क इन्ना गै जे कोई साहित्यकार अपनी अभिव्यक्ति दा माध्यम कविता गी बनांदा ऐ ते कोई कहानी, नाटक ते उपन्यास दे द्वारा अपनी गल्ल पाठकें तोड़ी पुजांदा ऐ। मोहन सिंह होरें अपने साहित्य दी अभिव्यक्ति इच अपनी संवेदनशीलता, सहृदयता ते बुद्धिमता दा पूरा-पूरा सबूत दिते दा ऐ। असल इच बिशे दी रहेई अभिव्यक्ति गै रस दा मूल कारण ते साहित्यकार दी सफलता दी पनछान करवांदी ऐ। एह अभिव्यक्ति जिन्नी मती लोकें कन्नै जुड़ी दी होग उन्नी गै प्रभावपूर्ण होग। की जे अभिव्यक्ति दा वास्तविक अर्थ ऐ आम लोकें दी गल्ल-बात।

असल इच 'अभिव्यक्ति' इच 'व्यक्ति' शब्द कन्नै 'अभि' उपसर्ग लग्गे दा ऐ जिस च 'अभि' शब्द दा अर्थ होंदा ऐ कोल-कच्छ जां सामनै ते 'व्यक्ति' शब्द दा अर्थ ऐ 'माहनू'। इस चाल्ली पूरे शब्द दा अर्थ होआ सामनै जां कोल-कच्छ आहले आले-दुआले दे लोक। अगूं-पिच्छूं आहले लोकें दी गल्ल-बात अर्थात् अपने गै समाज दे लोकें दी चर्चा। स्पष्ट ऐ जे अभिव्यक्ति इच साहित्यकार लोकें दे अन्तःकरण दी गल्ल बात गी अपने शब्दें द्वारा आक्खने दा प्रयास करदा ऐ। इस करी अभिव्यक्ति दी इस परिभाषा दे अन्तर्गत सम्प्रेषण आहला गुण बी अपने आप गै समाई जंदा ऐ अर्थात् भावें दी अभिव्यक्ति गै दूर शब्दें इच साहित्यकार दे भावें दा सम्प्रेषण ऐ। जे साहित्यकार दे भावें दा सम्प्रेषण नेई होऐ तां ओह सफल अभिव्यक्ति नेई खोआंदी।

मोहन सिंह होरें अपने साहित्य इच सफल अभिव्यक्ति दी तलाश करदे होई शब्दें दा चयन भावें दे स्भाविक झकाऽ, प्रवृत्ति, प्रकृति ते उंदी बशेशता गी दिखदे होई गै कीते दा ऐ। उ'नें संतुलत ते लोक मानसिकता दे अनुकूल गै शब्दें दा बी प्रयोग कीता दा ऐ।

असल इच साहित्यिक खेतर इच मोहन सिंह होरें अपनी जातरा दी शुरूआत कविता थमां कीती पर डुग्गर प्रदेश ते एहदे थमां बी अगै उ'नें अपनी पनछान नुक्कड़ नाटकें राहें बनाई। अज्जै दे व्यस्त माहनू दे जीवन इच उंदे एह नाटक बड़े गै कारगर साबत होऐ ते उ'नें तौले गै लोकें दे दिला च थाहर बनाई लेआ। इंदे नुक्कड़ नाटकें इच लोक मानस दी झलक नजरी आँदी ऐ। जेहकी इंदी कविता इच बी थां-थां मिलदी ऐ। जे एह गल्ल आक्खी जा जे साहित्य अपने समें दा चित्र प्रस्तुत करदा ऐ तां मोहन सिंह हुंदे आस्तै एह गल्ल पूरी चाल्ली प्रमाणित

होंदी ऐ। मोहन सिंह होरें आम लोकें दे सिद्धे-साद्धे शब्दें ते उंदी आपसी साधारण गल्ल-बात इच बी छप्पी दी उस खेतर-बशेश दी सभ्यता ते संस्कृति दे गैहरे भावें गी तुप्पने दी कोशिश कीती दी ऐ। नाटकें इच उत्सुकता ते जिज्ञासा शुरु थमां आखर तगर बनी रौहदी ऐ। इसदे अलावा सरलता ते स्भाविकता इंदे नाटकें दी बशेशता ऐ। अपने साहित्य इच इनें सिर्फ राजनीतिक खेतर इच होने आहले शोशन, अत्याचार, भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार ते छल-कपट आहलियें नीतियें गी गै व्यक्त नेई कीते दा बल्के समाज दे दूए खेतरें इच बी फैले दे अंधविश्वासें गी अपने साहित्य इच लैते दा ऐ। इंदे नाटकें इच विकृत सामाजिक व्यवस्था दे प्रति इक रोह आहली भावना ते विद्रोह दा सुर निरंतर मिलदा ऐ। नेक नीयती ते सुच्चे-सच्चे रस्ते उप्पर चलने आहले माहनू दी होने आहली दुर्दशा दा बर्णन बी इंदे साहित्य च थां-थां मिलदा ऐ। इंदी भाशा बिल्कुल सरल ते मुहावरेदार ऐ ते कुसै किस्म दी बी क्लिष्टता दा प्रदर्शन नेई लगदा। मोहन सिंह होर सरल ते साधारण शब्दें द्वारा बड़ी कोला बड़ी ते भाव भरोची गल्ल आखने इच चंगी-चाल्ली माहिर न। इंदा तकरीबन हर एंकाकी कवितामय ऐ जेहड़ा इंदे कवि हृदय दा बी प्रतीक ऐ। एहदे अलावा इंदे साहित्य इच आपसी भाईचारा, दोआसी, निराशा, पीड़, निम्नोन्नानी, लचारी परेशानी ते आर्थिक अभाव बगैरा भावें दे दर्शन बी होंदे न।

मोहन सिंह हुंदी शुरु दी कविताएं इच जेहड़े बचार अपनी कच्ची उमरी दी झलक दिंदे न उ'ऐ बचार नाटकें इच परिपक्व ते प्रौढ़ अवस्था इच मिलदे न। मोहन सिंह हुंदे अन्दर जेहका वैचारिक द्वंद छिड़े दा रौहदा ऐ ओह समें-समें पर कविता ते नाटकें राहें बाहर औंदी ऐ। उंदी शिक्षात्मक, उपदेशात्मक, आदर्शवादी, व्यक्तिवादी ते दार्शनिक बचारधारा नाटकें इच इक दम यथार्थ धरातल उप्पर उतरी औंदी ऐ। कविता इच जेहड़े बचार पाठकें गी सुत्तनींदरै सुनचदे न नाटकें इच ऊ'ऐ बचार जोरै दी झुनक कराइयै उ'नेंगी नींदरा थमां जगाइयै उंदियां अक्खियां खोहलदे न।

लोक मानस मोहन सिंह हुंदे साहित्य दी जान-पन्थान ते प्राण गै नेई बल्के मूलाधार ऐ। इससै करी मोहन सिंह होर निस्बतन मते यथार्थवादी ते लोकें दी प्रगति दे बारे इच सोच-बचार करने आहले न। इंदे नाटक इच प्रस्तुत पात्र, पात्रें दे नां, पात्रें दे पारिवारिक जीवन दा स्तर, उंदी हर इक गल्ल-बात, उंदी सभ्यता ते संस्कृति एह सब किश साधारण सार आहला अर्थात् आम लोकें दे स्तर आहला ऐ।

मोहन सिंह हुंदे अज्ज तक छपे दे साहित्य दा ब्यौरा इस चाल्ली ऐ –

(अ) कवता

(क) अस लोक (1978 ई.)

(ख) घड़ी – खंड काव्य (1984 ई.)

**(आ) नाटक**

- (क) काला सूरज (1982 ई.)
- (ख) पंज कल्याणी (1986 ई.)
- (ग) अपनी डफली अपना राग (1990 ई.)
- (घ) सत्त जमां सत्त (नुक्कड़ नाटक 1998 ई.)

**(इ) अनुवाद**

- (क) मछेरे (1995 ई.) मूल तकषी शिवशंकर पिल्लई हुंदा तमिल उपन्यास
- (ख) मुक्तिबोध (2001 ई.) मूल जैनेन्द्र कुमार हुंदा हिंदी उपन्यास

**(ई) गज़ल-तितलियां (2002 ई.)**

**(उ) संकलन-संपादन – वेदपाल रचना संसार (2002 ई.)**

मोहन सिंह हुन्दे नाटक 'काला सूरज' गी स्टेट अकैडमी ते 'अपनी डफली अपना राग' गी साहित्य अकादमी दिल्ली पासेआ क्रमशः 1984 ते 1991 ई. च सम्मान कन्नै सम्मानत कीता जाई चुके दा ऐ। इंदे द्वारा अनुवाद कीते गेदे मछेरे उपन्यास गी बी साहित्य अकादमी सम्मान कन्नै 2001 ई. च सम्मानित कीता जाई चुके दा ऐ।

मोहन सिंह होरें अपने नाटके गी इक नमें ढंग कन्नै प्रस्तुत करने दा इक सफल प्रयास कीते दा ऐ। नाटकें दे शुरु इच ईश्वर जां कुसै देवी-देवता सरबन्धी वन्दना दी प्राचीन पद्धति गी नकारदे होई नमें ढंग कन्नै वन्दना कीती दी ऐ जि'यां – "अपनी डफली अपना राग' नाटक इच –

“लाज रक्खेओ मेरी लाज रक्खेओ

मेरी लाज रक्खेओ ओ दर्शको।

जौले हत्थ करी के अरजां पुकारने आं

गुण दोश दस्सेओ ओ दर्शको।

डोगरे आं भइयो अस डुगगरे दे बासी आं

डुगगरें दी शान नराली ऐ।”

इसदे अलावा मोहन सिंह हुंदे मते—हारे नाटकें इच पात्रें गी इक, दो, त्रै, चार कुतै यक्का, दुक्का, त्रिक्का, चौका ते जां पही ढोलकी आह्ला, बाज्जे आह्ला, कुतै मीरी, दोली, त्रेली, फाडी ते जां पही कोई होर बशेशन देइयै बगैर कुसै नां दे सम्बोधित कीता गेदा ऐ। स्पष्ट ऐ जे साहित्यकार नां दी अपेक्षा माहनू दे गुण ते कर्म गी मता म्हत्त्व दिंदा ऐ। नाटकें इच बन्दना दी नमीं पद्धति गी अपनाना बेनाम पात्रें गी जि नेंगी कोई नेई जानदा इंदे नाटकें इच नमैपन दी बशेशता ऐ। मोहन सिंह होरें डोगरी साहित्य गी कविता दी अपेक्षा नुक्कड़ नाटकें राहें मता समश्रद्ध कीता। इंदे नाटकें इच ‘अपनी डफली अपना राग’, ‘नमीं आवाज’, ‘दनां सोचो ते सेही’, ‘सत्त जमां सत्त’ दे अन्तर्गत इंदे चौदां नाटक न। इसदे अलावा ‘पंज कल्याणी’ ते ‘काला सूरज’ बी हैन। ‘काला सूरज’ इंदी इक शाहकार रचना मन्नी जाई सकदी ऐ। सबनीं नाटकें च किश मुख गल्ला सांझियां होंदे होई बी इंदे नाटक बक्ख—बक्ख किस्म दे बचारें गी लेइयै चलदे न ते आम लोकें दे जीवन कन्नै सरबन्धत होने करी इंदे नाटकें इच प्रगतिवादी भावना ते सत्ताधारियें दे प्रति रोह ते विद्रोह दा सुर मुख ऐ। इंदे नाटक आम लोकें गी किट्टे होइयै शोशक वर्ग दे खलाफ संघर्ष करने दी प्रेरणा दिंदे न। इसदे अलाव छल—कपट ते गंदी नीतियें कोला सतर्क होइयै रौहने दा संदेश बी मिलदा ऐ जिंदे उप्पर विस्तार इच चर्चा करने दी लोड़ ऐ।

जि’यां के पैहलैं बी अक्खेआ जाई चुकेआ ऐ जे इंदे नाटक आम लोकें दे जीवन कन्नै जुड़े दे होने करी इंदे नाटकें दे पात्र बड़े गै सिद्धे—सादे ते अनभोल न जिस करी ओह असेंगी थां—थां आपूं चें सधारण वार्तालाप करदे मिलदे न। जिस इच उंदी अज्ञानता ते अनपढ़ता स्पष्ट झलकदी ऐ। जि’यां —

बदमाश : “ओ भलिये लोके साढ़े फौजिआ दी चिट्ठी आई दी ऐ।

नर्तका : केह लिखदा ऐ साढ़ा फौजी।

बदमाश : लिखदा ऐ मिगी दो बिल्लियां लग्गी गेइयां न।

नर्तका : ए माए एह केह होआ? जै बाहवे आहली माता, तेरै छिल्लियां

चाढ़ड, जे मेरे जागता गी बिल्लिएं कोला छड़काएं।” (अपनी डफली अपना राग—8)

उप्पर आहलियां पंक्तियां लोक साहित्य दा सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करदियां न इ’नें सिद्धे—सादे लोकें कन्नै चलाक लोक हर बारी अपनी चाल चलने इच सफल होई जंदे न। पर नाटककार गी इ’नें धोखेबाज लोकें दे प्रति बड़ी घरणा ऐ इससै करी ओह इ’नें लोकें गी भगमीं टल्लें इच ठग योगी दे रूपा इच मनदा ऐ जेहड़े घर—घर बोटें आहली रसत गराहंदे फिरदे न। हेठ लिखे दा गीत एह गल्ल होर बी स्पष्ट करी दिंदा ऐ —

“भारत पुरी दा योगी चलेआ

लेइयै झुंडे चौकी/बापू गांधी दी जै—

चौकी दे बिच धरेदे झुंड़े,  
 कन्नै धरी दी टोपी//बापू गांधी दी जै—  
 जागत पूगत नचदे औंदे  
 ढोल बजांदा ढोली/बापू गांधी दी जै—  
 घर—घर जाइयै रसत गरांहदे,  
 अड्डी—अड्डी झोली/बापू गांधी दी जै—।” (अपनी डफली अपना राग—11)

इ‘नें पंक्तियें इच मोहन सिंह होरें मतलब परस्त ते स्वार्थपरक चरित्तरें गी व्यंगात्मक गीत दे शब्दें द्वारा चित्रित कीते दा ऐ। एह लोक अपने स्वार्थ आस्तै दूए अगगै झुकने इच बी झक्क मसूस नेई करदे। लोकें दे बरोध करने ते पुट्टियां सिद्धियां गल्लां आक्खने उप्पर बी ओह बुरा नेई मनांदे बल्के उंदियें गलत ते अपमानजनक गल्लें गी बी अपने स्वार्थ गी दिखदे होई मजाक इच लेई लैंदे न —

जोगी : “हं—हं—हं। खरा होआ तुस हंसमुख होई गे/सारे गै होई गै मखौली/

पर इसलै टिच्चां करदे शरम निं औंदी/कदें कदालें दिन औंदा ऐ/ रोज ते नेई अस टुरे दे रौंहदे।”

एह लोकें गी सिर्फ अपनी मिट्ठी—मिट्ठी गल्लें दे वाक—जाल इच फसाइयै अपना उल्लू सिद्धा करियै चलदे होंदे न। एह सिर्फ गल्लां गै करी सकदे न ते कम्मा दे नां उप्पर छड़ी लोटी। नाटककार दे अनुसार हर बरी इक नमां नाच नच्चियै लोकें गी भरमाई लैंदे न ते जिस बेल्लै एह लोक उंदे जाल इच चंगी—चाल्ली फसी जंदे न फही ओह उ‘नेंगी अपनी मन—मरजी दा नाच नचांदे न। ‘अपनी डफली अपना राग’ इच नाटककार ने स्पष्ट रूप इच किश नेताएं दे मतलब परस्त ते छल—कपट आहले चरित्र चित्रित करदे होई आक्खे दा ऐ —

“छल—कपट ते धोखे धड़ियां/बनी सयासत भारी जी/वक्त पवै तां तरले करने/करनी ताबेदारी जी/भुट्ट बनाने लोक फसाने/करनी खूब सवारी जी/कम्म निं करना लारे लाने/उमर बितानी सारी जी।”

जि‘यां कि‘यां बी होई सकै ओ सत्ता दी कुर्सी साम्मी रखना चांहदे न। ते केई बारी लोकें दी एकता गी दिक्खियै उंदे नजदीकी बनियै मौका साम्मी रखदे न। पर लोकें दी एकता अगगै जिसलै कोई पेश नेई चली सकै तां उसलै ओ लोकें दियां आर्थिक मजबूरियां ते दूइयां कमजोरियां फड़ियै उ‘नेंगी अपने कन्नै जोड़ी लैंदे न। प्रस्तुत नाटक इच बी ‘डिवाइड एण्ड रूल’ दी नीति अपनाइयै ओ लोकें गी बक्ख—बक्ख करियै अपनी डफली अपना राग बजाने ते गाने आस्तै मजबूर करी ओड़दे न। पर हत्था मौका नेई खुंझन दिंदे।

## नमीं आवाज

प्रस्तुत नाटक इच अट्ट पात्र न। जिं दे इच आवाज, संदेश, संजोगता, बुद्धा आदमी, मस्त मांगडू ते र्होलू राम दी भूमिका बड़ी म्हत्ता आहली ऐ। इसदे अलावा रणदीप ते लिल्ली संदेश दे दोस्त न। 'नमीं आवाज' इच आम लोकें दिथें आर्थिक समस्याएं ते बेरोजगारी गी लैता गेदा ऐ। इसदे अलावा सत्ताधीश ते आम लोकें इच होने आहले पारिवारिक संघर्ष दा जिक्र बी ऐ। प्रस्तुत नाटक इच 'आवाज' उस सत्ताधारी राजा दा प्रतिनिधित्व करदी ऐ जेहड़ा आम लोकें गी अपने अत्याचार दा शकार बनाना चांहदा ऐ। जेहड़ा उसी समझियै ओहदा हल्ल कड्डना चांहदा ऐ उसी समाप्त करी दिता जंदा ऐ। 'संदेश' अज्जै दी नौजवान नमीं पढ़ी-लिखी बे-रोजगार पीढ़ी दा प्रतीक ऐ। अज्जै दे पढ़े-लिखे नौजवान बी संदेश आंगर खज्जल होआ करदे न। ईमानदारी दा अर्थ अज्ज सिर्फ कताबें तगर गै सीमत होइयै रेही गेदा ऐ।

संजोगता पूरी चाल्ली नै भौतिकवादी द्रिष्टीकोण गी लेइयै चलने आहली ते इक दुनियाबी सोच रक्खने आहली संदेश दी प्रेमिका दे रूप इच सामनै औंदी ऐ। संजोगता संदेश दा मार्गदर्शन करदी ऐ ते उसी सब किश करने आस्तै मजबूर करदी ऐ। पर संदेश ईमानदारी ते आदर्शवादी विचारधारा आहला होने करी अपनी रोजी आस्तै गलत हरवा ते अपनाना दूर बल्के अपनी आर्थिक अभाव ते होर मजबूरियें कारण मना इच उठने आहले संजोगता दे हिरख-प्यार गी बी थाहर नेई देई सकेआ। नाटक इच 'रहोलू राम' उ'नें लोकें दा प्रतिनिधित्व करदा सेही होंदा ऐ जेहड़े कुसै बी किस्म दे खतरे आहले कम्म नेई करना चांहदे ते समें कन्नै समझौता करियै गम पीने दे आदी होई जंदे न।

'मस्त मांगडू' कवि दे रूप इच सामनै औंदी ऐ जेहड़ा अपनी दुनियां इच मस्त रौहदा। उसी दुनियां दे दुख कलेशें कन्नै कोई सरोकार नेई ऐ। ओह पूरी चाल्ली स्वच्छन्तावादी प्रकृति आहला होई चुके दा ते अपने मना गी खुश रक्खने आस्तै रोमांटिक कवतां लिखदा रौहदा ऐ।

बुद्धा आदमी उस हर इक प्रगतिवादी माहनू दे अन्दर आहला माहनू ऐ जेहड़ा स्वतंत्रता प्राप्ति थमां लेइयै अज्ज तगर दे लम्मे अन्तराल चा गुजरने करी बुद्धा होई चुके दा ऐ ते समें दी जरूरत ने उसी अज्ज फही जागने आस्तै आकखेआ ऐ। 'बुद्धा आदमी' मस्त मांगडू (कवि) जनेह लोकें गी रोमांटिक कवतां लिखना छोड़ियै यथार्थ उप्पर औने आस्तै प्रेरत करदा ऐ।

संदेश ते मस्त मांगडू जनेह बक्ख-बक्ख बचार-धारां दे लोकें गी इक करियै उंदे इच संघर्ष दी भावना जागस्त करना ते बेजबान लोकें गी जबान देना, बोलने दी समर्था प्रदान करना र्होलू राम जनेह आदमी दा गै कम्म ऐ।

## दनां सोचो ते सेही

इस नाटक इच नाटककार ने घर-परिवार इच निक्के-मुट्टे घरेलू लड़ाई-झगड़े दे आधार उप्पर होने आहले विघटन ते मानसिक तनाव गी प्रस्तुत कीता दा ऐ। प्रस्तुत नाटक रूढ़ीवादी परिवार दे उस वातावरण कन्नै सरबन्धत ऐ जित्थै जनानी गी पैरा दी जुती कोला बद्ध किश नेई समझोआ जंदा। सुविधा दी घरा आहली शान्ति नमें जमाने दी डुआठन उप्पर पैर रक्खी चुकी दी ऐ अर्थात् सुविधा कन्नै बरोध करने दी हिम्मत अपने अन्दर आहनी लेई दी ऐ। सुविधा पूरी चाल्ली रूढ़ीवादी होने करी हर गल्ल अपनी गै मनवाना चांहदा ऐ। इस करी निक्की-निक्की गल्ला पर दोऐ जने तीर-कमान कस्सी लैंदे न। नाटक दी शुरुआत बी लड़ाई आहले ते बड़े हास्यात्मक द्रिश्य थमां होंदी दस्सी दी ऐ, जिसलै के सुविधा राम सवैरै-सवैरै आरती करा करदा होंदा ऐ।

स्पष्ट ऐ जे शान्ति ते सुविधा राम दी आपूं चें इन्नी खैह पेई चुकी दी ऐ जे ओह इक-दूए दी गल्ल स्हारने गी त्यार नेई न। घरा इच व्यवस्था नां दी कोई चीज नेई रेहदी इस्सै करी रानी दी कड़माई करने आस्तै सुविधा राम इक थां चली जंदा ऐ ते शान्ति दूए थां चली जंदी ऐ। इक थां सुविधा राम अपने निक्के पुत्तर आज्ञा दी कड़माई उसी बगैर पुच्छे पक्की करी औंदा ऐ पर आज्ञा इस दा बरोध करदा ऐ। सुविधा राम ते आज्ञा दी मते बरी मै-मै, तूं-तूं होई जंदी ऐ। पर क्रान्ति बड्डा पुत्तर होने करी किश हद तगर पराने बचारें दा ते पक्षपाती होने करी माऊ-बब्बा दा पक्ष लैंदा ऐ। पर ओहदे घरा आहली संतोश पराने बचारें कन्नै बिल्कुल सैहमत नेई होंदी। क्रान्ति रानी दी कड़माई दे बारे इच बब्बा दी जिद्द दिक्खियै आखदा ऐ –

“एह ते सच्चें गै कृएह ते सढें दा भेड़ ते जूड़े दा नास आहला स्हाब कताब होई आ/इ’नें हालें ते कुड़ी दा गला बड्डने आहली गल्ल ऐ।”  
(सफा-107)

अपने माऊ-बब्बा दी गलतियें ते जिद्द-बाजी दे कारण क्रान्ति गी अपनी लाड़ी दियां बी चंगियां-माड़ियां सुननै पौंदियां न। क्रान्ति दी स्थिति घरा इच अपेक्षाकृत मती निराशाजनक ऐ की जे उसी अपने मां-बब्ब, भैन-भ्रा ते लाड़ी आहले त्र’ऊं थाहरें उप्पर निबटना चौंदा ऐ। घरा इच बने दे इस मानसिक तनाव, अनुशासन हीनता ते विघटन दा नतीजा एह निकलदा ऐ जे सुविधा राम दे अपने गै पुत्तर घर छोड़ने उप्पर मजबूर होई जंदे न। प्रस्तुत नाटक इच ‘जालम’ सुविधा दा दोस्त घरा इच समझौते कन्नै चलने दा हाम्मी ऐ। जालम दे बार-बार समझाने उप्पर बी सुविधा राम गी फर्क नेई पौंदा। प्रस्तुत नाटक इच एह गल्ल स्पष्ट कीती दी ऐ जे घरें इच लड़ाई आपसी रिश्तें दी नेई ऐ बल्के नमीं ते परानी पीढ़ी दे बचारें दी लड़ाई ऐ। सुविधा राम बच्चें गी कोई हक्क-हकूक नेई देना चांहदा। सुविधा राम अपने मुंडे दी कड़माई इच स्कूटर तगर लैने गी त्यार ऐ पर आपूं कुड़ी दे ब्याह इच सवाए कुड़ी दे होर किश नेई देना चांहदा। नाटक इच नाटककार ने ‘जालम’ नांS दे पात्र द्वारा एह संदेश दिते दा ऐ जे घिसे-पिटे दे अर्थहीन ते पराने रीति-रिवाजें कन्नै जुड़ी रौहना ठीक नेई होंदा अर्थात् जीवन सुखी बनाने आस्तै समें कन्नै समझौता करना चाहिदा ऐ।

## सत्त जमां सत्त

इस कताब इच मोहन सिंह होरें चौदां निक्के-निक्के नुक्कड़ नाटक किट्टे कीते दे न जेहड़े बक्ख-बक्ख बचार-धारा गी लेइयै चलदे न। इ'नें नाटकें इच नाटककार ने समाज दे हर खेतर गी दिक्खने दा प्रयास कीते दा ऐ। एह सारे नाटक बड़े गै रोचक ते मनोरंजक न। इंदे इच सब थमां पैहला नाटक 'बावे' नां कन्नै ऐ।

## बावे

इस नाटक इच गंवार, अनपढ़, सिद्धे-सदे, आले-भोले ते अंधविश्वासी उ'नें लोकें उप्पर लोऽ सुट्टी दी ऐ जेहड़े फटाफट बिना कुसै तर्क ते सबूत दे गै ठग बावें दी गल्लें दे शब्द-जाल इच फसी जंदे न। इ'नें बावें दी ठगगी ते धोखेबाजी दा शकर आमतौरा पर जनानियां गै बनदियां न। एह अंधविश्वासी जनानियां अपने जीवन इच होने आहले शारीरिक कष्टें दा कारण बी बमारियें गी नेई बल्के कुसै द्वारा कीते-कराए दे जादू-टूने गी गै मनदियां न। इस विशे इच एह जनानियां आमतौरा पर घरेलू सरबन्ध ठीक नेई होने करी अपनी दरानियें-जठानियें गी गै जादू-टूने करने-कराने दा लांछन लांदियां न। अज्ज शायद गै कोई घर ऐसा होग जित्थें जादू-टूने ते होर दूए बैहमें गी लेइयै कला-क्लेश नेई पौंदा होऐ। बावे इ'नें अंधविश्वासी जनानियें दी नब्ज पकड़ियै ते उंदे दिला दी गल्ल उ'नेंगी सनाइयै ठगदे-फिरदे न -

बावे : खसम तेरा है बड़ा नखट्टू, बिल्कुल भाड़े का है टट्टू

भरजाई दे चाल्लै चलदा तेरे घर तां दीप निं बलदा।" ते

"तूं चंगी, सब दोक्खी तेरे, तेरे दुश्मन बने बत्हेरे,

आंढ-गुआंढ बी जलदा सारा, तेरे अपने बी सब जलदे

तेरे घरा आहले गी इसलै, चलै करदी ऐ साढ़ सती।"

प्रस्तुत नाटक इच धर्म दे नांऽ उप्पर होने आहली ठगगी ते भ्रष्टाचारी दा चित्तर तोआरदे होई इ'नें पखंडें थमां बचने दा संदेश बी दित्ते दा ऐ अर्थात् नाटक रोचक ते मनोरंजक होने दे कन्नै-कन्नै उपदेशात्मक बी ऐ।

## अपना आप पशान

'अपना आप पशान' नां दे नाटक इच बी 'अपनी डफली अपना राग' आहला गै सार भरोचे दा ऐ। इस इच बी चापलूस, मौका परस्त लोकें दे ढीठ बनियै जां पुट्टे-सिद्धे ढंगा कन्नै जि'यां कि'यां बी होई सकै अपना उल्लू सिद्धा करने आहला व्यवहार गै जरी औंदा ऐ। 'अपनी डफली अपना राग' इच जे अगुएँ दे लोटी पाने जां

गलत व्यवहार करने शा लोक तंग न तां 'अपना आप पशान' इच बी अगुए लोक अपना घर भरने दा गै द्रिश्श प्रस्तुत करदे न ते लोकें गी तंग पेड़यै आखना गै पौंदा ऐ :-

चारै : मुड़ियै आई गे चोर, डाकुओ  
केह लैने गी आए ओ इत्थें  
नस्सी जाआ पिछड़े, नस्सी जाओ पिछड़े।"

नाटक इच चारै पात्र इक-जुट होइयै उनें लोकें गी नसाने इच सफल होई जंदे न ते ओ बड़ी मुशकलें उंदे शा बचियै निकलदे न। आखर च चारै पात्र किट्टे होइयै आखदे न -

"जे अस किट्टे होई जाचै तां, नस्सी जान शतान।

साढ़ी बाहमें जोर ऐ इन्ना, ल्हाई देचै असमान।

नीत साफ जे करियै अपनी, लग्गी पौचै सारे।

पही कोई बी कपटी आइयै, देई सकग नेई लारे।

जाग साथिया सोहगा होई जा,

अपना आप पशान साथिया अपना आप पशान।"

स्पष्ट ऐ जे नाटककार ने एकता दे कन्नै-कन्नै लोकें गी अज्ञानता दी नींदरा थमां जगाने दा बी संदेश दिते द ऐ।

### गरीबू दा छिल्ला

प्रस्तुत नाटक समाज दे दूशत वातावरण दा चित्र प्रस्तुत करदा ऐ। अज्जै दे समाज इच चबक्खी, चलाकी ते बदमाशी दा गै दौर ते जोर ऐ। सधारण ते शरीफ आस्तै जीवन बतीत करना बड़ा औखा होई गेदा ऐ? अज्जै दे दूशत वातावरण इच इक सच्चे-सुच्चे ते स्टेई इन्सान गी अपना हक्क मंगने दा बी हक्क नेई रेहदा। सारा समाज समर्थवान, पैसे आहलें ते बदमाशें दा होइयै रेही गेदा ऐ। सारी मशीनरी इ'नें बदमाशें दे इशारें उप्पर चलदी ऐ। की जे नाटक दे मुख पात्र गरीबू कन्नै बड़ा बुरा बरताऽ कीता जंदा ऐ। नाटक दे 'बरोधी' पात्र द्वारा बोल्ले गेदे शब्दें च सत्ताधारी वर्ग दे किश लोकें ते गरीबू दे मार्मक चरित्र दा चित्रण मिलदा ऐ :-

"भाइयो! में सदा इ'यै आखदा आया जे एह सत्ताधारी कदें बी असें गी अक्खीं दिक्खी निं सखांदा/इसदे केई सबूत में पैहलें बी थुआढ़े सामनै रक्खी चुके दां/ते अज्ज मुड़ियै तुसेंगी चकन्ना करन आयां जे एह बिसले

नाग कुसै दे सक्के नेई/दिक्खो एह गरीब दास बलद मंगता/सत्ताधारियें इस दी ऐसी गत बनाई जे इसी कुसै पासे दा निं छोड़ेआ/इसदा छिल्ला खाद्या लम्बडै दे जागतें, ओह सत्ता दा आदमी/इसी मारेआ थानेदारा ने ओहबी सत्ता दा आदमी ते ओह नालायक डाक्टर जिसनै इसदी मरम पट्टी नेई कीती, उ'ब्बी ते सत्ता दा गै आदमी ऐ। इ'नें सत्ताधारिये दे जुल्म कोला तुस अंदाजा लाओ जे सच्चा कु'न ऐ ते झूठा कु'न ऐ।"

(सफा-54)

एह गल्ल स्पष्ट ऐ जे शुरू थमां लेइयै हुन तोड़ी आम लोक गुलाम रेह न। अजादी कोला पैहलैं आम लोक विदेशियें दे गुलाम हे ते अज्ज अपने गै लोकें दे गुलाम न।

### इन्सान दुश्मन

'इन्सान दुश्मन' नांऽ दे नाटक इच हेराफेरी, चोर बजारी, रिश्वतखोरी ते स्वार्थ दी भावना इस हद्द तगर पुज्जी दी दस्सी गेदी ऐ जे अज्जै दा इन्सान अपने स्वार्थ आस्तै किश बी करने गी तयार ऐ, इन्सान गै इन्सान दा दुश्मन होई गेदा ऐ। ओह अपने स्वार्थ दी खातर कुसै दे जीने-मरने दी परवाह नेई करा करदा। प्रस्तुत नाटक इच ए.ई., ठेकेदार, पुलसा दा ए.पी. ते क्लर्क आदि सारे गै रिश्वतखोर ते स्वार्थी दस्से गेदे न। जिसलै मती कमीशन खाइयै ते घट्ट मटीरियल पाइयै तयार कीता गेदा चिल्डरन हस्पताल ढेई पौंदा ऐ तां ए.ई. बिल्कुल परवाह नेई करदा ते नां गै डरदा ऐ। एस.पी. सरकारी आदेशानुसार ए.ई. गी हिरासत इच लैने आस्तै औंदा ऐ तां ओह एस.पी. ते ए.ई. गी आखदा ऐ -

"तुंदे घरा दे आले-दुआले पुलिस गारद लाई दिती ऐ/उस पाससै चिड़ी निं फड़की सकदी/इस बेल्लै लोक जोश च न, जिसलै होश च होडन तां सारें चुप्प होई जाना ऐ, पही खुल्ले होइयै फिरेआ/जिन्ना चिर खतरा ऐ साढ़े कोल र'वो/सप्प बी मरी जाग ते डांग बी निं भज्जग। नां कुत्ता दिक्खग नां भौकग।"

(सफा-62)

एह सत्ता आहले सारे लोक रिश्वतखोर ते स्वार्थी होने करी इक्कै अर्थवाद दे झंडे थल्लै खड़ोते दे सेही होंदे न। इ'नें गिने-मिथे अर्थवादी टोले आहलें दी नानी इक्क ऐ। इंदी एकता गी जोड़ियै रक्खने इच पैसा सीमैट्ट दा कम्म करदा ऐ। कमीशनर दे औने उप्पर ठेकेदार ए.ई., ऐक्स.ई.एन. सब्बै बचने आस्तै तरले छन्दे करदे न। पर कमीशनर उ'नेंगी डरांदा-धमकांदा ऐ ते बड्डियां-बड्डियां गल्लां बी करदा ऐ पर बाद इच मुट्टी रकम दा भार नेई चकोने करी ओह उस भार इच दबोई जंदा ऐ। सिर्फ इन्नी गल्ल आखियै चली जंदा ऐ जे - "दिखगे-दिखगे तुस निश्चैत र'वो।" आखर इच सारा मसला हल होई जंदा ऐ सब्बै इन्सान दे दुश्मन साबत होंदे न, आम लोकें दी कोई पेश नेई चलदी इस करी छटपटाइयै चुप्प होई जंदे न।

## मानवता

प्रस्तुत नाटक इच नाटककार ने अज्जै दे माहनू इच घटा करदी दिन प्रतिदिन मानवता ते बधदी स्वार्थ दी भावना गी स्पष्ट कीते दा ऐ। माहनू अज्ज अपने तगर गै सीमत होइयै रेही गेदा ऐ। ओह इन्ना स्वार्थी होई चुके दा ऐ जे अपने अगै-पिच्छै जिस वातावरण इच ओह साह लै करदा ऐ उसी बनाई रखने आस्तै बी किश नेई सोचा करदा। दूए दा नुक्सान ते दूरा दी गल्ल ऐ अपना भविष्य बी उसी स्वार्थ इच अ'न्ने होने करी नेई लब्बा करदा। अज्जै दा माहनू अपने दना-हारे स्वार्थ आस्तै जंगलें दी सम्पत्ति गी नष्ट करी जारदा ऐ। बालने आहली लक्कड़ी दे अलावा मारती लक्कड़ी ते ओहदे कन्नै अनमुल्ल जड़ी-बूटियां बी तबाह करी जा करदा ऐ। नाटक दे पात्र 'कक्की' दी स्वार्थ आहली भावना 'वहीम' नांऽ दे दूए पात्र कन्नै आपसी वार्तालाप इच पूरी चाल्ली स्पष्ट होई जंदी ऐ। वहीम जेहड़ा अज्जकल शैहर चली गेदा ऐ अक्सर लोकें दे इलाज आस्तै जड़ी-बूटियां लैन औंदा ऐ।

वहीम : "पर औने दा कोई लाह निं होआ मिगी/एह फ़ाड़, एह जंगल जेहड़े जड़ी-बूटियें कन्नै लदोए दे होंदे हे अज्ज इत्थें अक्खीं दिक्खने गी किश निं लब्बा करदा।

कक्की : "ठीक ऐ जे नेई लब्बा करदा तां गै कम-स-कम असेंगी एह अफसोस नेई जे साढ़ी चीज साढ़े पर नेई होरथें बरतोआ करदी ऐ।"

इन्ना गै नेई जंगल दी राखी करने आहले राखे अर्थात् रक्षक बी भक्षक बनी गेदे न। उंदा अपना स्वार्थ पूरा होई जा तां उ'ब्बी किश नेई बोलदे। प्रस्तुत नाटक इच नाटककार नाटक दे इक 'प्रकाश' नां दे पात्र द्वारा लोकें तोड़ी जंगलें-बूहटें दे लाह ते उंदे अभाव इच होने आहले नक्सान दे बारे इच संदेश पजांदा ऐ ते लोकें गी बूहटे लाने दी प्रेरणा बी दिंदा ऐ। जंगलें-बूहटें दे होने ते नेई होने कन्नै वातावरण उपपर पौने आहले असर गी नाटककार नाटक दे पात्र चुन्नी ते प्रकाश द्वारा स्पष्ट करदा ऐ :-

प्रकाश : "ताऊ तुगी घर नेनां टकाई लगगी। होर ते होर पर एह ढिब्बी बी

कन्नो कन्न, मड़ा की अपनी जिंद रोढ़ने पिच्छै लगगे दा ऐ छोड़ खैहड़ा इस ढिब्बी दा ते सुखा दा साह लै।"

चून्नी : "सुखा दा साह ते हुन चिहाली उपपर गै औना ऐ। ख'ल्ला देशा लोक औंदे हे

इत्थै, गलांदे हे डाकदारै उ'नेंगी फ़ाड़ जाने आहला आक्खेआ ऐ, इत्थै गलांदे हे ताजी हवा कन्नै ठीक होई जाडन। तां अस हसदे हे ठीक ते आदमी दुआऽ-दारु कन्नै होंदा ऐ। हवा कन्नै कनेहा ठीक होना होआ भला।"

नाटक इच प्रकाश बूहटे कप्पना छोड़ियै बूहटे लाने दी प्रेरणा दिंदा ऐ ते रैहमता, चून्नी, कक्की, बिद्धां आदि पात्रें दे माध्यम कन्नै आम लोकें गी जंगलें दे लाह बारै समझांदा ऐ।

## असली बारस

इस नाटक इच किश इक आगुएँ दे असली चरित्र गी चित्रत कीता गेदा ऐ। शुरु इच गै उंदे सभाऽ गी नाटककार ने गीत द्वारा स्पष्ट कीते दा ऐ। एह लोक अपनी पार्टी दे बक्ख-बक्ख नाऽ रक्खियै आम लोकें गी अपने जाल इच फसाने आस्तै सोचदे रौहदे न :-

गीत मंडली : “इस देशा दे भोले पैशियें तै, इ’नें पार्टियें जाल बछाए नै।

भला बचियै कुसै कि’यां जाना ऐ इ’नें लारें दे ठाले लाए नै।

नाटककार ‘जादूगर’ नां दे पात्र द्वारा एह गल्ल स्पष्ट करना चाहदा ऐ जे एह लोक किस चाल्ली आम लोकें गी भिड्डां समझियै अगैं लाई लैंदे न ते पही अपनी मरजी मताबक उ’नें गी जि’यां चाहदे न, जिद्धर चाहदे न हक्की लैंदे न।

असल इच एह सारा एंकाकी व्यंगात्मक ऐ जिस इच एह दस्सेआ गेदा ऐ जे ओ मरदे दम तोड़ी देश सेवा दे ब्हानै, देश-प्रेम दे गीत गाई-गाइयै सत्ता अपने हत्था इच रक्खना चाहदे न। नाटक इच पात्र आदमी नं. -1 आम लोकें दा प्रतिनिधित्व करदा दस्सेआ गेदा ऐ जेहड़ा आम लोकें दे पक्ख इच शरेआम उनें लोकें दा बरोध करदा ऐ। नाटक दे खीर इच लेखक ने गीत द्वारा आम लोकें गी एकता दा संदेश दिते दा ऐ -

“आओ सारे रली-मिलियै, अपने भाग बनाई लैचै।

इ’नें बिच्चुएं जुक्कैं कोला, लोक ते देश बचाई लैचै।

अस असली आं वारस इसदे, बैरी मार मकाई लैचै।

इस भारत गी नमें सिरे दा, आओ सुरग बनाई लैचै।”

नाटक इच लोकें दा सादापन ते आगुएं दी नीचता, चलाकी ते होशियारी स्पष्ट झलकदी ऐ।

## मुलजम फरार

नाटक दे शुरु इच गै मुलजम फरार होने उप्पर कीती जाने आहली कारवाई उप्पर टिप्पणी करदे होई नाटककार ने गलाए दा ऐ जे केई बारी किश घटनां घटने उप्पर स्थिति उप्पर काबू पाने आस्तै कर्ष्यू लाई दित्ता जंदा ऐ। पर कर्ष्यू लगने उप्पर आम लोकें गी किन्ने-किन्ने दुख दिक्खने पौंदे न एहदा पता इस वार्तालाप थमां मिलदा ऐ -

दुआ : जनाब मे सच्च आक्खा ना घर आटा मुक्की गेदा ऐ।

इन्सपेक्टर: इसलै आटा लम्बा दा तुगी, सुट्ट ओ न्हाड़े कृ पर दो नरोइयां ते

लेई चल इसी थानै। आटा तुप्पन आए दा उल्लू दा पट्टा।”

नाटक इच किश टकोधे पुलिस आहलें दा चरित्र बी एकदम स्पष्ट करी ओड़े दा ऐ। एह पुलिस आहलें कुसै बी किस्म दी माड़ी घटना घटने उप्पर उसलै जेहड़े मौके दे गशतिये हांदे न ओह सवाए रोड़ी भन्नने आहलें उप्पर दाड़ा मारने दे अलावा होर किश नेई करी सकदे। स्थिति गी सुधारने आस्तै प्रशासन ने कर्पयू लाना पौंदा ऐ। उस मौके गरीब लोकें गी किस चाल्ली मजबूर ते बे-बस होइयै टैम गजारना पौंदा ऐ, ए नाटक ऊऐ चित्तर पेश करदा ऐ।

### भिखमंगे

इस नाटक च अपनी जनता दे स्वास्थ ते स्वार्थ दे प्रति लापरवाह ते अपने प्रति पूरी चाल्ली सतर्क लोकें दा चरित्र स्पष्ट करने आस्तै नाटककार ने इक कथा दा सहारा लैदा ऐ।

परमाणु लीकेज कन्नै दूशत होई दियां चीजां पानी दुद्ध, घ्योऽ, मास ते मक्खन सब किश जाया करने आस्तै दो विदेशी प्रस्तुत नाटक इच गल्लां करदे दस्से गेदे न। ओह इ’नें चीजें गी अपने देश दे लोकें आस्तै नेई रक्खना चांहदे तां जे उंदे उप्पर कुसै किस्म दा गलत असर होऐ। गल्लें-गल्लें च उ’नेंगी स्कीम आई जंदी ऐ जे की नेई एह चीजां कुसै होर देश दे लोकें इच बंडियां जान। इस गल्ला दी सोच शुरू होई गई।

असल इच सच्चाई इ’यै जे अस भिखमंगे आं की जे अस चंगियां माड़ियां चीजा अपने गै लोकें इच सस्ते भाऽ बेची दिन्ने आं की जे असेंगी कुसै दे जीने-मरने दी कोई परवाह नेई। अस अपने तगर सीमत होइयै रेही गेदे आं।

### हत्थें दियां दितियां

प्रस्तुत नाटक इच नाटककार रूढ़ीवादी ते परानी बचार-धारा गी नकारदे होई समें अनुसार समाज दे बदलदे मुल्लें दे अनुसार चलने दी प्रेरणा दिंदा ऐ अर्थात् समें दी सार पछानदे होई माहनू गी प्रगतिशील होना चाहिदा ऐ तां जे ओह समाज इच प्रस्तुत नाटक दे पात्र ‘बसैंता’ आहले लेखा पिछड़ी नेई जा, जीवन ओहदे आस्तै दुखें दा फाड़ नेई बनी जा।

मुड़े दा मूंह दिक्खने दी हीखी-हीखी इच बसैंते दे घर छे कुड़ियां होई जंदियां न। ओह मौलवियें, बावें ते जैतर-तबीजें दे चक्कर इच फसेआ रौहदा ऐ ते उप्परोतली कुड़ियां औंदियां जंदियां न। इन्ने बच्चें दी पढ़ाई-लखाई ते दूर रेही, रुट्टी-टल्ला बी पूरा करना बसैंते आस्तै औखा होई गेआ। कुड़ियां दूएँ बच्चें गी दिक्खियै कप्पड़े स्याने दी जिद्द करदियां ते कदें स्कूल जाने दी जिद्द करदियां। बसैंता एह सब किश नेई करी सकदा ते बुरी चाल्ली तंग होइयै डुब्बन चली पौंदा ऐ। पर रामा ते प्रकाश उसी समझांदे न जे डुब्बी मरने दियां गल्लां, छोड़ी

दे। किश करने दी सोच! ओ उसी किश रस्ते बी सुझांदे न। नमें विचारें गी अपनांदे गै बसैते दे जीवन इच बदलाव आई जंदा ऐ। जिन्ने चिर ओह पराने बचारें कन्नै जुड़े दा रौहदा ऐ ओहदा जीवन दुखी बने दा रौहदा ऐ। प्रकाश आधुनिक बचारें दा माहनू ओहदे जीवन इच बहार आहनी ओड़दा ऐ।

### नमीं बमारी

इस नाटक इच चरस, पहीम हेरोइन ते दूर नशीले पदार्थ दे कुप्रभाव कोला अज्जै दी युवा पीढ़ी गी अगाह कीता गेदा ऐ ते ओह इक्कै सूई कन्नै लगाने आहले हेरोइन दे टीकें दे कारण होने आहली एड्स जनेही खतरनाक ते जानलेवा बमारी कोला अपने अनमुल्ले जीवन गी बचाई सकन।

जि'यां हर इक शराबी सब किश जानदे होई बी अपने पीने गी न्यायोचित सिद्ध करने आस्तै बड़े-बड़े तर्क दिंदा ऐ, उ'यां गै नाटक दा नायक 'विनोद' नशे च पूरी चाल्ली फसी चुके दा ऐ ते अपनी नशे आहली इस आदत गी स्टेई साबत करने आस्तै अपने पिता गी तर्क दिंदा ऐ। विनोद इन्ना नशेई होई चुके दा ऐ जे ओह हेरोइन दे टीके सरहने रक्खियै सौंदा ऐ। किश नशे दियां पुडियां ते हेरोइन दे टीके विनोद दे कमरे चा चुक्की लैने उप्पर विनोद पिता अगँ गिड़गिड़ादा ऐ ते तरले करदा ऐ। फी चीजां नेई मिलने उप्पर ओह अपने पिता दा गलमा फड़ियै झुनकदा ते मां छड़कांदी ऐ। इस खिच्ची-खिच्ची इच ओदा पिता बेहोश होई जंदा ऐ ते विनोद घाबरियै उसी छोड़ी ओड़दा ऐ तां मिसेज गुप्ता रौंदे-रौंदे आखदी ऐ :-

“एह केह होई गेआ ऐ इ'नेंगी/बेड़ा गरक जा मोआ तेरा नेह-जेह पुतरा दा/ओ प्यो गी मारी छोड़ेआ ई बिन्द सवारी गल्ला पिच्छै कृ खड़ोता कृ मूंह केह दिक्खी जा करना ऐं। डाक्टर गी फोन कर, इ'नेंगी फटाफट हस्पताल लेने दा प्रबन्ध कर।” (सफा-135)

हस्पताल पजाने पर खून दी जरूरत पेई जंदी ऐ। विनोद खून देने गी तयार होई जंदी ऐ, पर पता लगदा ऐ जे ओहदे खून च एड्स दे जरासीम न। एह गल्ल सुनियै विनोद परेशान होई जंदा ऐ ते डाक्टर गी बार-बार बीमारी दे इलाज आस्तै आखदा ऐ। पर मैडीकल साईंस अजै इस बमारी बारै लचार ऐ। विनोद अपनियें गलतियें उप्पर पश्चाताप करदा ऐ पर उसलै समां निकली चुके दा होंदा ऐ।

### सुखा दा साह

इस नाटक इच बद्ध कोला बद्ध मात्रा इच रुक्खें-बूहटें गी लाइयै प्राकशतिक संतुलन बनाई रक्खने आस्तै ते पर्यावरण शुद्ध रक्खने दा संदेश ऐ।

नाटक दे शुरू इच इक जनानी दा बार-बार खंघना बी दूशत वातावरण दा सूचक ऐ। थोहड़े चिरा बाद जनानी कुडियें आंगर वाकमैन हत्था च फड़ियै हैंडफोन लाइयै नचदी-गांदी औंदी ऐ। एह जनानी अज्जै दे उ'नें लोकें दा प्रतिनिधित्व करा करदी ऐ जेहड़े लोक कम्प्यूटर ते इलैक्ट्रानिकस दी दुनिया इच पूरी चाल्ली लीन होइयै

पर्यावरण गी भुल्ली गेदे न। पात्र नं. 'इक' ते 'दो' पर्यावरण दे म्हत्तव दी गल्ल करा करदे होंदे न। पर आधुनिक सभ्यता दे लोकें दा प्रतिनिधित्व करने आहली जनानी इस गल्ला गी कोई बशेश म्हत्तव नेई दिंदी।

नाटककार ने कम्प्यूटर ते इलैक्ट्रानिक युग इच जीने आहले ते पर्यावरण गी म्हत्तव नेई देने आहले लोकें उप्पर व्यंग्य कीते दा ऐ :-

इक : साफ-सफाई, न्हाणा-धोना, शादी-ब्याह, हिरख-प्रेम, सब किश कम्प्यूटर करोआग।

दो : जी हां साह लैने बारै बी कम्प्यूटर गै चेता करोआग, जे कुसलै, कि'यां ते कुथें साह लैना ऐ।"

एह व्यंगात्मक वार्तालाप नाटक दे उस 'जनाना' पात्र उप्पर अपना पूरा प्रभाव करदा ऐ ते ओह बी उंदे कन्नै सैहमत होई जंदी ऐ। सारे मिलियै पर्यावरण गी शुद्ध बनाने दा यत्न करदे न।

### ममारखां

देश अजाद होए दे अद्धी सदी कोला बी उप्पर होई गेआ पर किश लोकें गी अजें बी पूरी चाल्ली अजादी दा अनुभव नेई होआ। ओ लोक अजें बी 47 कोला पैहला गुलामी आहला जीन गै जिया करदे न।

असल इच अजादी दे बाद साढ़े देश ने तरक्की ते कीती पर मती हेरा-फेरी ते रिश्तखोरी दे खेतर इच अजादी दे बाद देस दा ढांचा किश ऐसा बनी गेआ जे अमीर म्हेशां अमीर होंदा गेआ ते गरीब गरीबी दे स्तर कोला बी थल्लै ढोंदा गेआ।

इस करी निचले वर्ग आहले माहनू अजें बी गुलामी इच साह लै करदे न। जि'यां नाटक दा पात्र 'माडू' करलांदा औंदा ऐ -

दो : "केह गल्ल ऐ माडू कैह करला नां मड़ा।"

माडू : करलाना केह साहबा पिछली बरसांतिया मेरा कोटू ढेई आ हा दूई बरसांत आई गेई मावजा नीं थोआ।

दो : "तूं अजें 47 कोला पैहलै गै जियां ना मड़ा। तुम्मी पक्का पा ते मावजा लै, खराबा लै, चल बेही जा हून, ऐहमें नीं साढ़ी बेइज्जती करोआयां जे पंजाहें बरें मगरा बी हिन्दोस्तान च तेरे जनेह लोक हैन।" (सफा-156)

असल इच एह अजादी सिर्फ किश इक खड़पैचें, सरमायादारें ते अफसर शाहें गी थोई ते जां फही शरेआम रिश्त लैने आस्तै इस करी अजादी दियां ममारखां बी इ'नें लोकें गी गै देनियां चाही दियां न जेहड़े इ'नें ममारखें दे स्हेई हक्कदार खोआंदे न। की जे आम आदमी ते अजें बी गुलामी च साह लै करदा ऐ।

नाटक इच नाटककार ने अज्जै दे समाज इच फैली दी बेरोजगारी, हेरा-फेरी, आरक्षण बगैरा मुद्दें गी उभारे दा ऐ नाटककार दे अनुसार अज्जै दे समाज इच दो नम्बरिया ते नौ नम्बरिया बदमाश गै नौकरी आस्तै स्हेई योग्यता रखदा ऐ उ'ऐ समर्थ ऐ। प्रस्तुत नाटक आम लोकें गी इक होइयै संघर्ष करने दी प्रेरणा दिंदा ऐ। अपना हक्क खोहने आस्तै इशारा करदा ऐ। आम लोकें कोल वाकफी दी, पैसे दी ते हेराफेरी दी ताकत नेई ऐ पर एकता आहली ताकत इंदे कोल ऐ।

### काला सूरज

काला सूरज मोहन सिंह हुंदी सर्वोत्कृष्ट नाट्य रचना ऐ। समूलचा नाटक प्रगतिवादी बचारधारा उप्पर आधारित ते आम लोकें दी समस्याएं गी लेइयै उंदा प्रतिनिधित्व करदा सेही होंदा ऐ। नाटक इच मर्द ते जनानी आम जनता दे प्रतीक न। एह ओह जनता ऐ जेहदा इखलाक समाप्त होई चुके दा ऐ। जनानी इच पवित्रता, सतीत्व ते सुच्चे चरित्र दे गुण नेई लभदे। मर्द इच मर्दानगी, जोश, आन-बान ते स्वाभिमान दी कमी ऐ ओह इक मुर्दा जीवन जिया करदा ऐ, इक चलदी-फिरदी लोथ ऐ। नाटककार ने इस भाव गी इस चाल्ली दस्से दा ऐ :-

मरद : मिगी मारना चांहदे हे मारी दित्ता।

जनानी : मिगी खराब करना चांहदे हे करी दित्ता।

मरद : पर मारने थमां पैहलें उनें निं सोचेआ जे में जींदा बी ऐ आं जां नेई।

जनानी : खराब करने थमां पैहले उनें ए निं सोचआ जे में पवित्तर बी ऐं जां नेई।

मरद : मरे दे आदमी गी मारने इच केह अकलमंदी ऐ।"

जनानी : "खराब गी खराब करने च केह दानाई ऐ।"

नाटक मूजब मीरी, दोली, त्रेली ते फाडी, सोशलजिम, अम्यूनिज़म ते कैप्टलिजम दा लाबा पाइयै माहिर पात्रें दी भूमिका नभांदे सेही होंदे न। असल इच एह पात्र कुसै बी वाद इच नेई बज्झियै सिर्फ अपने-अपने स्वार्थवाद कन्नै गै जुड़े दे ते उस्सै इच बज्झे दे न।

मरद, जनानी, मीरी, दोली, त्रेली ते फाडी बेनाम पात्रें गी नाटककार ने अपने नाटक इच आह्नियै इक आधुनिकता गी अपनाए दा ऐ। परम्परा कोला हटियै, नमांपन आह्नने च प्रयास कीते दा ऐ। नाटककार ने जनता दे हर इक माह्नू गी ओहदे चरित्र कन्नै दिक्खने दी कोशश कीती दी ऐ ते दस्से दा ऐ जे इन्सान इच ओहदा चरित्र असल म्हत्तव रखदा ऐ।

नाटक इच मार्क्सवाद दी दुहाई देने आह्ला कामरेड असल इच कामरेड नेई, इक स्वार्थी, अवसरवादी, दबाजला ते धोखेबाज ऐ जिसनै प्रगतिवाद ते यथार्थवाद दा भगमां चाला पाइयै अपना असली रूप छपैले दा ऐ।

बन्धु इक मतलब परस्त, मौका परस्त ते स्वार्थी करदार ऐ, जेहड़ा अपने रस्ते इच रुकावटां पैदा करने आहले लौहके-मुट्टे हर माहनू गी हर हरबा बरतियै खरीदना चांहादा ऐ, इक दूए गी लड़वाने मरवाने दा जत्न करदा रौंहादा ऐ ते अंत इच अपने मिशन इच कामयाब बी होई जंदा ऐ।

‘काला सूरज’ स्वार्थपरक उस चरित्र दा प्रतीक ऐ जिस उप्पर स्वार्थ ते गंदी नीतियें दी मैल लैम्प दे शीशे उप्पर चढ़ी दी कालख आंगर सेही होंदी ऐ ते लोक उससै चरित्र आहले काले सूरज गी लेइयै लोऽ करना चांहादे न पर उस कन्नै मंजल मिलना संभव नेई। चरित्र रूपी लैम्प दे उस शीशे गी घर-परिवार दा कोई बी सदस्य साफ नेई करना चांहादा। इस करी एह धुंदली लोऽ दूए गी रस्ता दस्सना ते दूर, अपने लेई बी पर्याप्त नेई होंदी।

समाज इच जिसलै चबकखी भ्रष्टाचार व्याप्त ऐ ते सारा वातावरण विशैला होई चुके दा ऐ उस च ‘काला सूरज’ जनेहा नाटक लोकें इच लोई आहला सूरज सिद्धी होंदा ऐ। नाटककार दे अनुसार किश इक लोकें दी राजनीति सिर्फ अपने स्वार्थ दी पूर्ति दा इक साधन बनियै रेही गेदी ऐ। उंदी दमूंहीं नति, दोहरा चलन ते हिपोक्रेसी ते जनता गी ठगने आहला चरित्र बेशक कामयाबी हासल करी लैदा ऐ ते हर बारी जनता कोला बची निकलदा ऐ पर एह सब किश लेखक दी पैनी द्रिस्टी कोला नेई बचदा। ‘काला सूरज’ दी एह सब थमां बड़ी बशेशता ऐ जे एह समाज इच फैले दे नेकां वाद ते उंदे द्वारा पैदा कीती गेदी स्थिति दा चंगी चाल्ली सारयुक्त विश्लेशन करदा ऐ। प्रस्तुत नाटक इच होई दी सारी चर्चा दा एह निश्कर्ष निकलदा ऐ जे चरित्रहीन लोकें दा देश कदें बी स्थिर नेई रेही सकदा ते स्वार्थी, अतयाचारी ते दुष्ट लोक उसी म्हेशां अपनी लपेट इच रखडन।

समाज इच लोकें अन्दर जेहड़ी इक्क अगग जन धुखा करदी ऐ जिस दे दाह कन्नै आम जनता दुखी ऐ पर ज्हालत ते डर दी खातर बेजबान होइयै रेही गेदी ऐ। आम लोकें दी इस दुर्दशा आहली स्थिति गी ‘काला सूरज’ अभिव्यक्त करदा ऐ। नाटककार दे अनुसार सब लोक कुसै वाद कन्नै जुड़े दे न पर इन्सानवादी कोई बी नेई ऐ। इन्हें सभनें लोकें अपने अन्दर कुसै नां कुसै जानवर दा सुआतम बसाई लैदा ऐ। ते ओह लोक अपने उस सुआतम इच भेड़ियें, कुत्तें, बिल्लियें ते बांदरें आहला व्यवहार करा करदे न। साधारण ते शरीफ लोकें गी उल्लू समझियै उंदे उप्पर बाकी आहले जबरदस्त लोकें अत्याचार करना शुरू करी दिता जिसदी चर्चा पूरे नाटक इच मिलदी ऐ।

मोहन सिंह होरें साहित्यिक खेतर इच अपनी यात्रा दा श्री गणेश कविता राहें कीता ते नाटकें राहें अपनी प्रतिभा गी चरम सीमा तगर पजाया। इंदे काव्य साहित्य इच व्यक्तिवादी, मानवतावादी, यथार्थवादी, प्रगतिवादी ते कुतै-कुतै दार्शनिक विचार धारा दे बी दर्शन होंदे न। पर नाट्य साहित्य इच मुख् स्वर प्रगतिवाद दा मिलदा ऐ। कुल मलाइयै मोहन सिंह होर प्रगतिवादी सिद्ध होंदे न।

अज्ज मोहन सिंह होर नुक्कड़ नाटक लिखने आहले पैहले ते कल्ले प्रगतिवादी नाटककार खोआंदे न।

## अभ्यास आस्तै सुआल

### (क) लम्में सोआल

प्रश्न-1 'अपनी डफली अपना राग' नाटक संग्रह च 'अपनी डफली अपना राग'

दे नाटक दी तत्वे दे आधार उप्पर अलोचना करो?

प्रश्न-2 'अपनी डफली अपना राग' नाटक संग्रह च 'नमी अवाज' नाटक दा मूल्यांकन अपने शब्दे च करो?

प्रश्न-3 'अपनी डफली अपना राग' नाटक संग्रह च 'दना सोचो ते स्हेई' नाटक दी तत्वे दे आधार उप्पर अलोचना करो?

प्रश्न-4 नाटककार मोहन सिंह हुन्दा व्यक्तित्व ते कश्चित्त्व दसदे होई उन्दे नाटक साहित्य उप्पर लोऽ पाओ?

### (ख) लौहके सोआल

प्रश्न-1 'अपनी डफली अपना राग' नाटक दी भाशा शैली उप्पर टिप्पणी करो?

प्रश्न-2 'दना सोचो ते स्हेई' नाटक दा उद्देश्य स्पष्ट करो?

प्रश्न-3 'नमी आवाज' नाटक प्रतीकात्मक शैली च लखोए दा ऐ एहदे बारै तुस कि'न्न सैहमत ओ? अपने शब्दे च लिखो?

● **उद्देश्य**

1. इस यूनिट गी द'ऊं हिस्से च बंडेआ गेदा ऐ।
2. बारमें पाठ च मंडलीक नाटक दा तत्वे दे आधार मूल्यांकन कीता गेदा ऐ जेहदे कन्ने विद्यार्थी गी मण्डलीक नाटक बारै गूढ़ ज्ञान हासल होई सकै।
3. तेरमें पाठ च मण्डलीक नाटक दे नाटककार नरसिंह देव जम्वाल हुंदे व्यक्तित्व ते कश्चित्त्व उप्पर रोशनी पाई गेदी ऐ।

पाठ तेरां दे अंत च इस यूनिट कन्ने सरबंधत किश लम्मे सुआल ते किश लौहके सुआल आहले अभ्यास आस्तै प्रश्न पुच्छे गेदे न जे अभ्यासगत उ'नें सुआलें दी दिशा च पाठकें गी अध्ययन करने दा बोध होई सकै।

“मंडलीक’ नाटक दी तत्वेँ दे आधार पर आलोचना

नरसिंह देव जम्वाल हुंदा नाटक मंडलीक सन् 1972 च प्रकाशत होआ। एह नाटक राजा मण्डलीक दी मशहूर लोकगाथा उपर आधारत ऐ। इस नाटक च नाग जातियें दा चित्रण कीता गेदा ऐ।

दुदनेडे दी रानी बाशला गुरु गोरखनाथे थमां पुत्र प्राप्ति लेई प्रार्थना करदी ऐ ते ओहदी इस भक्ति थमां खुश होइयै गुरु उसी वरदान दिंदे न ते पिछले पैहर टिल्ले उपर बलांदे न। ओह एह सारा वस्तांत अपनी निक्की भैन काशला गी सनाई ऐ। काशला ओहदे मनै च बैहम पाई ओड़दी ऐ। जे दुदनेडे दी एड़डी बड़डी रानी रातीं दे पिछले पैहर टिल्ले उपर की गई ते लोक उन्दे बारै केह सोचडन। रानी बाशला नेई जंदी ते रानी काशला ओहदी थाहर रातीं दे पिछले पैहर टुरी जंदी ऐ ते गुरु गोरखनाथे थमां वर लेई औंदी ऐ। जेहदे कारण ओहदे घर दो पुतर अरजन, सरजुन होंदे न। तोआई बड़लै जिसलै रानी काशला टिल्ले उपर पुजदी ऐ जे उन्नै उंदे उपर भरोसा नेई करियै अपनी भैनू दी गल्लें पर भरोसा कीता जिन्नै उसी धोखा दित्ता। एह सब सुनियै रानी बाशला बड़ी दुखी होंदी ऐ ते उंदे शा माफी मंगदी ऐ अपनी भक्ति दा वास्ता दिंदे होई इक मौका मंगदी ऐ जेहदे फलस्वरूप गुरु उसी पही पुतर प्राप्ति दा वरदान दिंदे न ते कन्नै गै इस शर्त रखदे न जे ओहदी उमर ठारां बरे गै होग।

दुए पाससै जिसलै नागें दे राजे बासक गी मण्डलीक दे जन्म दा पता लगदा ऐ तां ओह उसी खत्म करने दि'यां साजशां बनान लगी पौंदा ऐ। ते अपने पोतरे ककोड़ी गी मारने आस्तै भेजदा ऐ। ओह सफल नेई होंदा जिस कारण राजा बासक उसी निखरदा ऐ।

तोआई मैहले च रानी बाशला राजकुमार मण्डलीक दी सारी सांभ-सम्हाल आपूं करदी ऐ ते बड़े चाएं-चाएं ओहदी पालना करदी ऐ।

इक दिन राजकुमार मण्डलीक अपने नीले पर सोआर होइयै शकार खेढन जंदा ऐ जे उत्थुआं गोढ बंगाल जाई पुजदा ऐ जित्थै ओहदी मलाटी उत्थूं दी राजकुमारी सिरगला कन्नै होंदी ऐ। जेहदे कन्नै उसी हिरख होई जंदा ऐ। तोआई नागें दा राजा बासक बी सिरगला कन्नै ब्याह करना चांहदा ऐ। रानी बाशला बासक राजे दा साथ दिंदी ऐ। राजा बासक पही इक बारीक ककोड़ी गी भेजियै राजे मण्डलीक गी खत्म करने दा जत्न करदा ऐ। उसी परतियै हार दा मूंह दिक्खना पौंदा ऐ ते अपने दादे राजे बासक शा द्रण्ड बी खानी पौंदी ऐ।

राजकुमारी सिरगला ते राजकुमार मण्डलीक दा ब्याह होई जंदा ऐ पर, राजकुमार रानी दे प्यार च इस कदर गोआची जंदा ऐ जे उसी घरै दी सुद्ध-बुद्ध गै भुल्ली जंदी ऐ। पिच्छुआं गजनी दा बादशाह दुदनेडे पर हमला

करदा ऐ जिस च मण्डलीक दे पिता दी मशत्यु होई जंदी ऐ। मुगल बादशाह कपला गवै गी बी अपने कन्नै लेई जंदा ऐ। तुलसू दाई दे गोढ बंगाल पुज्जने पर जिस बेल्लै मण्डलीक गी गजनी दे बादशाह ते अपने पिता दी मशत्यु दा पता लगदा ऐ तां ओह अपने नीले पर सोआर होइयै गजनी उप्पर चढ़ाई करदा ऐ ते बैरी गी मात देइयै कपला गवै गी छड़काई आहनदा ऐ।

### पात्तर—चित्रण

इस नाटक च छे पुरश पात्तर ते पंज नारी पात्तर न। नाटक दे पात्तरें दा निर्माण बड़े कलात्मक ढंगे कन्नै कीते दा ऐ। नायक राजा मण्डलीक इक शूरवीर योद्धा ऐ। जेहड़ा अपने ईन दी खातर लड़दे—लड़दे शहीद होई जंदा ऐ। मुख पुरश पात्तर च गुरु गोरखनाथ, मण्डलीक, राजा बासक बगैरा ते मुख नारी पात्तर च रानी बाशला, रानी काशला ते राजकुमारी सिरगला।

### मण्डलीक

इस नाटक दा नायक ऐ ते शूरवीर योद्धा ऐ। ओहदा गुरु गोरखनाथ दे वरदान कारण रानी बाशला घर जन्म होंदा ऐ। ओह अपने माता—पिता दा लाडला ते प्रजा दा हितैशी होंदा ऐ। ओह तुलसू दाई दी कपला गवै गी गजनी दे बादशाह कन्नै बहादरी कन्नै लड़ियै छुड़काइयै आहनदा ऐ फही ओहदी मृत्यु होई जंदी ऐ कीजे उसी गुरु गोरखनाथें मूजब इन्नी गै आयु थोई दी होंदी ऐ।

### गुरु गोरखनाथ

गुरु गोरखनाथ ब्रह्मज्ञानी न जेहड़े हर समें च इकै जनेह रौहन्दे न, उंदे उप्पर समें दा कोई प्रभाव नेई पौंदा ते ओह चमत्कार करने च सक्षम न ते टिल्ले उप्पर रौहंदे न।

### राजा बासक

राजा देव मण्डलीक दे पिता दा शत्रु ऐ। ओह मण्डलीक दे जन्म'शा गै ओहदे कन्नै दुशमनी करन लगी पौंदा ऐ ते उसी मारने दे केई हीले करदा ऐ इत्थूं तगर जे ओह अपने पोत्तरे कोकड़ी गी बी उसी मारने आस्तै भेजदा ऐ पर ओहदे विश दा ओहदे (मण्डलीक) उप्पर कोई असर नेई पौंदा ऐ ते ककोड़ी गी हार दा मूंह दिखना पौंदा ऐ।

### रानी बाशला

मण्डलीक दी माता ते राजा देव दी पटरानी ऐ ओहदा स्भाऽ बड़ा नरम ऐ मनैं थमां साफ ऐ एह गल्ल उथूं स्पष्ट होंदी ऐ जिस बेल्लै गुरु गोरखनाथ ओहदी भक्ति'शा खुश होइयै उसी रातीं दे पिछले पैहर टि'ल्ले पर बलान्दे न वर देने आस्तै। ओह अपनी भैन काशला कन्नै एहदे बारै गल्ल सांझी करदी ऐ। रानी काशला उसी

उत्थै जाने'शा मना करदी ऐ ते ओह ओहदी गल्ल मन्नियै टिल्ले उप्पर नेई जंदी। ओहदे भलोकेपन दी झलक साफ लभदी ऐ कीजे उसी कोई छल-कपट करना नेई औंदा ते उसी इस भलोकेपन मूजब गुरु गोरखनाथे'शा द्रण्ड बी पौंदी ऐ। ओह गुरु गोरखनाथ दी सच्ची भक्तन दे रूपै च बी मिलदी ऐ।

## रानी काशला

राजा देव दी निक्की रानी ते रानी वाशला दी निक्की भैन बी ऐ पर ओह स्माऽ च रानी वाशला दे बिल्कुल विपरीत ऐ। ओहदा स्माऽ तेज ते छलकपट कन्नै भरोचे दा ऐ। ओह म्हेशां रानी वाशला कन्नै खाहर खंदी ऐ। जिसलै गुरु गोरखनाथ बारै रानी वाशला उसी सनांदी ऐ ओह रानी वाशला गी टिल्ले उप्पर जाने'शा मनाह करियै आपूं टिल्ले जाइयै उत्थूं वर लेई औंदी ऐ जेहदे मूजब ओहदे घर द'ऊं पुत्तरें दा जन्म होंदा ऐ अरजन ते सरजन। ओह घरै च बी कलेश पाई रखदी ऐ।

## संवाद

‘मण्डलीक’ नाटक दे संवाद, भावपूर्ण, रसपूर्ण ते चित्त छूहने आहले न। नाटक च ऐतिहासिक घटनाएं गी बांदै कीता गेदा ऐ। नाटक च लौहके-बड़दे संवादें च नाटकी तत्वे दा मेल होए दा ऐ। उदाहरण दे तौरा पर –

मण्डलीक : गौढ-बंगालै?

सिरगला : जी।

मण्डलीक : ब मेरे कन्ने काली वीर बी ऐ ता?

सिरगला : उब्बी थाहरै सिर पुज्जियै राम करा करदा ऐ।

मण्डलीक : ते नीला?

सिरगला : ऐ ते उब्बी राम च गै ब तुंदे साईं डौर-भौर।

मण्डलीक : सच्च दस्सो। औं उंदे कन्नै मिलना चाहन्ना।

सिरगला : तुसैं गी मेरे कन्नै मिलियै कोई खुशी नेई होई?

मण्डलीक : एह तुस के आखै करदियां ओ (फही भावक होइयै) ए शलैपा, ए-उमर ते फही गलानी। जी करदा ऐ कृ

सिरगला : के जी करदा ऐ?

मण्डलीक : जी करदा ऐ तुरसंगी घड़ने आहले दे हत्थ चुम्मी लैं।  
 सिरगला : हूं। मानु स्याने लगदे ओ।  
 मण्डलीक : ब शैल नेई (हसदा ऐ) इ'यै ना?  
 सिरगला : (कटोइयै) अपने मुंहा तुस जो मरजी आखो। अच्छा छोड़ो इ'नें गल्लें गी आओ चौपड़ बाजी लाचै।  
 (सफा-94)

## अभिनय

अभिनय नाटक दे महत्वपूर्ण तत्वे चा इक ऐ। जम्वाल होरें इस नाटक गी अभिनय दी द्रिष्टी कन्नै लिखे दा ऐ। नाटक दा नाट्य-विधान आकर्शक ते प्रभावपूर्ण ऐ। द्रिश्य-विधान बी स्पष्ट ते सरल ऐ। नाटककार ने नाटक च अभिनय सरबन्धी केई अभिनय संकेत बी दिते दे न। असल च नाटक समूह दी कला ऐ इस आस्तै जित्थें इक पास्सै अभिनय कुशल अभिनेताएं, अभिनेत्रियें, निर्देशकें, संचालकें दी लोड़ होदी ऐ तां दूए पास्सै दर्शकें दी बी खास भूमिका होंदी ऐ कीजे एह दर्शकें आस्तै गै रचेआ ते खेदेआ जंदा ऐ। इस द्रिष्टी कन्नै 'मण्डलीक' नाटक च दुग्गर दी लोक गाथा गी रचनाकार ने बड़ी कुशलता कन्नै दर्शकें ते पाठकें सामनै पेश करने दी बखूबी कोशिश कीती दी ऐ।

## वातावरण चित्रण

'मण्डलीक' दुग्गर च प्रचलित लोक गाथा उप्पर आधारत नाटक जनमानस च बड़ा विशेष थाहर रखदा ऐ कीजे एह ऐतिहासिक दस्तावेज पेश करदा ऐ उस बेल्ले दा जिस बेल्ले पूरा भारतवर्ष मुस्लिम तानाशाही राज दा शकार हा, ते निक्के राजे आपूं चे लड़दे हे, इ'यां गै एहदे च द'ऊं नाग जातियें दी आपसी दुशमनी दा चित्रण होए दा ऐ। एहदा ऐतिहासिक तत्थें घटनाएं कन्नै बड़ा नेड़मां सरबंध ऐ चमत्कार ते जादू टोने दा चित्रण होए दा मिलदा ऐ। इस च लड़ाई, पर्वत ते प्राकृतिक ते अप्राकृतिक द्रिश्यें दा बड़ा सजीव वर्णन प्रस्तुत कीता ऐ। नाटक दे द्रिश्य, पात्ररें दे नांऽ चरित्र आदि वातावरण दे ऐन मुताबक न। सारे नाटक च अपने जुगै दी टकोह्दी छाप नजर औंदी ऐ।

## भाषा शैली

नाटक दी भाषा शैली ते प्रभावपूर्ण ऐ। नाटक च भाव, रस ते अभिव्यक्ति दे त्रैवे गुण साफ द्रिष्टीगोचर होंदे न। भावें ते प्रसंगे अनुसार भाषा च बी बदलाव साफ नजरी औंदा ऐ। जित्थे श्रंगारक, करुण पात्ररें दी भाषा कोमल ते सरल ऐ उत्थै गै वीर रस प्रधान प्रसंगे च ओजगुण साफ लभदा ऐ। लोक भाषा दे कन्नै-कन्नै ठेठ डोगरी शब्दें दी बरतून बी इस नाटक दी विशेषता ऐ। ब्हूगड़ी, मुटसिरा बगैरा। मुहावरे ते खोआने दा प्रयोग बी होए दा मिलदा ऐ।

### उद्देश्य

समें दी धूँहै हेठ लुप्त होंदे जा करदे लोक साहित्य दे अनमोल खजाने गी अपनी कान्नी राहें संवारियै दर्शकें ते पाठकें अगै पेश करना गै नाटककार दा मुख्य उद्देश्य रे'आ ऐ। नाटक दा अंत दुखांत ऐ कीजे गजनी लड़ाई जितियै घर पुजदे गै मण्डलीक दी मश्रु होई जंदी ऐ ते ओह म्हेशां—म्हेशां लेई अपनी माता दी गोद सुन्नी करी जंदा ऐ। इस अल्पमश्रु दा कारण एह हा जे गुरु गोरखनाथें मण्डलीक दे जन्म शा पैहले गै ओहदी आयु निश्चित कीती दी ही जेहड़ी हून पूरी होई चुकी दी ऐ।

प्रश्न – नरसिंह देव जम्वाल हुंदा व्यक्तित्व ते कृतित्व पर रोशनी पाओ?

उत्तर— बहुमुखी प्रतिभा दे मालक नरसिंह देव जम्वाल हुंदा डोगरी साहित्य च विशेष थाहर ऐ। ओह इक स्याने कवि, सोहगे कहानीकार, सरोखड़, नाटककार, सफल उपन्यासकार, मूर्तिकार ते चित्रकार दे इलावा कुशल अभिनेता बी हैन।

नरसिंह देव जम्वाल हुंदा जन्म 28 फरवरी 1931 ई. च जम्मू दे भलवाल ग्रांड च होआ। इन्दे पिता जी दा नां श्री शाम सिंह हा, इंदी मुंडली पढाई ग्रांड दे प्राइमरी स्कूल च गै होई। 1945 च इनें पंजाबी यूनिवर्सिटी लहौर थमां दसमीं पास कीती पही रियासती फौजा च भरथी होई गे। ते पही किश चिरा मगरा पुलसा च उठी आए ते सन् 1986 च बतौर डी.एस.पी. रटैर होए। इन्दी शानदार पुलस सेवाएं खातर इनेंगी राष्ट्रपति पुलस मैडल कन्नै सम्मानित बी कीता गेआ। नौकरी दौरान इन्दा पढ़ना-लिखना बरोबर जारी रे'आ। रिटायर जीवन च बी एह साहित्य सिरजना च व्यस्त रौह्दे न। डोगरी साहित्य गी रचनाएं कन्नै समृद्ध करा करदे न। जम्वाल होरें अपनी अनथक्क साधना दे बल पर डोगरी साहित्य दी हर विधा गी अपनियें रचनाएं कन्नै सुआरेआ-सजाया ते बक्ख-बक्ख कला खेतरे च अपना मुकाम बनाया ऐ। कवता-कहानी, गजल, उपन्यास, नाटक साहित्य आलोचना आदि दे कन्नै-कन्नै मूर्तिकला ते चित्रकला दे खेतरे च बी जम्वाल हुंदा नांड बड़े फखर कन्नै लैता जंदा ऐ।

### कविता संग्रह

1. नमीं कविता नमें रस्ते
2. शमां जलै की धड़की धड़की (गजल संग्रह)
3. कोरज
4. सगात
5. बुनतर (गजल संग्रह)
6. मोतिया खलारै खुशबू (गीत संग्रह) कहानी संग्रह
1. धुखदे गोहटे
2. चाननी दा सेक

3. मेरा देस मेरे लोक

4. युगवाणी

### उपन्यास

1. मण्डलीक

2. आन-मर्यादा

3. अल्लड़ गोली वीर सपाई

4. चौसर

5. पिंजरा

6. कौड़े घुट्ट

7. सरकार

8. रामलीला

9. पंजतारा (रेडियो नाटक)

10. धारां गूंजी पेइयां

11. देवयानी

12. देव पुत्तर

13. मल्लिका

14. समां कुसमां

15. बिसियर

16. भगवान परशुराम

17. त्रिफला (त्र'ऊं नाटकें दा संग्रैह)

इसदे इलावा इ'नें 'समकालीन' डोगरी कविता दा सम्पादन बी कीते दा ऐ। जिसी साहित्य अकादमी ने छापे दा ऐ।

## सम्मान

1. जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकैडमी पासेआ बैस्ट बुक अवार्ड –  
1. कोरज, 2. सांझी धरती बखले माहनू, 3. रामलीला, 4. पंजतारा
2. साहित्य अकादमी आसेआ 1978 च 'सांझी धरती बखले माहनू' उपन्यास पर पुरस्कार।

## नरसिंह देव जम्वाल बतौर नाटककार

डोगरी नाटक साहित्य च नरसिंह देव जम्वाल हुंदा मता योगदान ऐ। उ'नें डोगरी भाशा गी लगभग 20-22 नाटक देइयै नाटक विद्या गी सगोसार कीता।

### 1. मण्डलीक

जम्वाल हुंदा पैहला नाटक 1972 ई. च पत्रकाशत होआ। नाटक दा आधार राजा मण्डलीक दी बार ऐ। मण्डलीक दी गाथा साढ़े डुगुर ते राजस्थान च बड़ी मशहूर ऐ। नाटक च लेखक नै नाग जातिये दी आपसी लड़ाई दा शैल चित्रण कीते दा ऐ।

### 2. आन-मर्यादा

एह नाटक 1975 च प्रकाशत होआ। जम्वाल हुंदा इस् नाटक दे हर पैहलू च देश-भक्ति साफ झलकदी ऐ। इस च खड़क सिंह इक ऐसा रिटायर्ड फौजी ऐ, जेहड़ा अपनी आन-मर्यादा इस्सै गी समझदा ऐ जे ओहदा भगोड़ा फौजी पुत्तर किशन सिंह परतियै युद्ध च लड़ै ते बाद च किशन सिंह अपने प्योऽ दी सिक्खमत लेइयै बड़ी बहादरी कन्ने लड़दा ते शहीद होई जंदा ऐ।

### 2. अल्लड़ गोली वीर सपाई

एह नाटक 1975 च प्रकाशत होआ। जम्वाल हुंदा एह नाटक मशहूर डोगरी लोक-गाथा कुंजू चैचलो उपर आधारत ऐ। एह डोगरी दा पैहला काव्य नाटक ऐ।

### 3. सरकार

नरसिंह देव जम्वाल हुंदा एह नाटक 1985 च छपेआ। इस नाटक दा कथानक महाराजा रणवीर सिंह हुंदा जीवन, शख्सीयत, शासनकाल ते नीतियें पर आधारत ऐ। ते उस बेल्ले दे जन-जीवन समाज ते इतिहास दी झलक पेश करदा ऐ।

#### 4. पिंजरा

सन् 1984 च छपने आह्ला जम्वाल हुंदा एह नाटक पब्लिशर्ज ते होर इ'यै जनेही दुइयें एजेंसियें आसेआ होने आहले लेखक-वर्ग दी शोशन दी तर्जमानी करदा ऐ।

#### 5. कौड़े घुट्ट

सन् 1985 च छपने आह्ला नरसिंह देव जम्वाल हुंदा एह नाटक इक समस्या प्रधान नाटक ऐ।

#### 6. रामलीला

सन् 1987 च नरसिंह देव जम्वाल हुंदा सत्ते अकें पर आधारत नाटक 'रामलीला' प्रकाशत होआ।

#### 7. धारां गूंजी पेइयां

नरसिंह देव जम्वाल हुंदा एह नाटक 2001 च छपेआ। एह नाटक इक ऐसे फ्हाड़ी ग्रांS दा यथार्थ प्रस्तुत करदा ऐ जित्थै शिक्षा दी लोS अजें नेई पुज्जी। उत्थूं दे लोक अनपढ़ होने दे कन्नै-कन्नै अंधविश्वासी बी हैन।

#### 8. देवयानी

पौराणिक कथ उप्पर आधारत एह नाटक दौं संग्रैहें 'देवयानी' 2002 च प्रकाशत होआ। इसदे च 'देवयानी' ते 'अपने जाल शिकार बी आपूं' दो नाटक संकलत न। एह दोयै नाटक 'मत्सय पुराण' च शामिल इक पौराणिक कथ उप्पर आधारत न।

#### 9. देव पुतर

नरसिंह देव जम्वाल हुंदा नाटक 2002 च छपेआ। एह नाटक यूनानी लेखक सोफलित दे प्रसिद्ध नाटक 'उडीप्पस' दा डोगरी अंगीकरण ऐ। एह नाटक डोगरी नाटक साहित्य च नमां प्रयास ऐ। ते डोगरा परिवेश च एह पूरी चाल्ली अस्भावक लगदा ऐ।

#### 10. मल्लिका

नरसिंह देव जम्वाल हुंदा 'मल्लिका' नांS दा नाटक सन् 2004 च प्रकाशत होआ। एह नाटक 'मोहन राकेश' दे हिन्दी नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' दा डोगरी अंगीकरण ऐ। नाटक केन्द्री पातर 'मल्लिका' दे तप त्याग ते उसदे जीवन च झुल्लने आहले खड़बात दा इक सशक्त दस्तावेज ऐ।

### 11. समां कुसमां

2004 च प्रकाशित होने आह्ला नरसिंह देव जम्वाल हुंदा एह नाटक भ्रष्ट व्यवस्था दे पालकें ते उंदे खड़जैतरें दे शकार आम लोकें दे जीवन दा यथार्थ प्रस्तुत करदा ऐ। नाटक दे सारे पात्तर अपना-अपना सच्च भोगदे प्रतीत होंदे न।

### 12. बिसियर

एह इक प्रतीकात्मक नाटक ऐ। जम्वाल हुंदा एह नाटक 2006 च प्रकाशित होआ। 'बिसियर' नाटक ऐसे लोकें दा प्रतीत ऐ जेहड़े जरीली खैडजैतरें कन्नै बेबस ते गरीब लोकें दे जीवन च जैहर घोलदे न। इंजीनियर 'दलीप' ते मनीम फीनू राम मुख न।

### 13. भगवान परशुराम

एह नाटक बी पौराणिक कथ उपर आधारत ऐ ते 2006 च प्रकाशित होआ। इस नाटक च 'भगवान परशुराम' दे जन्म ते जीवन कन्नै जुड़ी दि'यां हर घटनाएं गी बड़ी बरीकी कन्नै दस्सेआ गेदा ऐ।

### 14. त्रिफला (त्र'ऊं नाटकें दा संग्रह)

नरसिंह देव जम्वाल हुंदा त्र'ऊं नाटकें दा संग्रह त्रिफला सन् 2010 च प्रकाशित होआ। जिस च 'भाईवाल', 'संस्पैस', 'ओह कु'न हा' संकलत न।

नरसिंह देव जम्वाल हुंदे डोगरी नाटक साहित्य च इस योगदान गी दिखदे होई एह गलाया जाई सकदा ऐ जे इ'नें अपनी योग्यता ते प्रतिभा कन्नै डोगरी नाटक साहित्य गी सगोसार ते समश्रद्ध कीता ऐ ते अपने बेजोड़ लेखन कन्नै डोगरी साहित्य च विशेष थाहर बनाए दा ऐ।

अभ्यास आस्तै सुआल

(क) लम्मे सुआल

प्रश्न – ‘मण्डलीक’ नाटक दी तत्वे दे आधार उपर अलोचना करो?

प्रश्न – नाटक दे नाटककार नरसिंह देव जम्वाल हुंदे व्यक्तित्व ते कश्चित् बरै लोऽ पाओ?

(ख) लौहके सुआल

प्रश्न – ‘मण्डलीक’ नाटक दा उद्देश्य स्पष्ट करो?

प्रश्न – ‘मण्डलीक’ नाटक दी भाशा-शैली उपर टिप्पणी लिखो?

प्रश्न – ‘मण्डलीक’ नाटक दी ऐतिहासिक महत्ता गी सिद्ध करो?

● **उद्देश्य**

1. इस यूनिट गी द'ऊं हिस्से च बंडेआ गेदा ऐ – पाठ चौदां ते पंद्ररा।
2. पाठ चौदां च एकांकी दी परिभाषा तत्व बारे सोआल तेआर कीता गेदा ऐ जेह्दे कन्नै विद्यार्थी दे ज्ञान च बाद्धा होई सकै।
3. इस पाठ दा उद्देश्य एकांकी दी परिभाषा ते तत्वे कन्नै विद्यार्थियें गी परिचित करोआना ऐ।
4. पाठ पंद्रमें च एकांकी दी विकास जातरा उप्पर रोशनी पाई गेदी ऐ।

इस पाठ दा उद्देश्य पाठकें गी डोगरी एकांकी दी विकास—जातरा दे मुंढले सफर कन्नै परिचित करोआना ऐ। इस पाठ च सन् 1960 थमां 2000 तगरे दे एकांकी दी विकास जातरा उप्पर रोशनी पाई गेदी ऐ। इसदी रोशनी च विद्यार्थी दाह्के च वर्गीकृत करियै एकांकी दी विकास यात्रा सरबन्धी होर समग्री कठेरने च बी क्रियाशील होडन।

प्रश्न – एकांकी की परिभाषा लिखदे होई एकांकी के तत्वेँ उपर रोशनी पाओ ?

उत्तर— नाटक ते एकांकी दोए दृश्यकाव्य दे तैहूत औंदे न। एकांकी च इक्कै अंक होंदा ऐ। जि'यां के इसदे नांS कोला गै स्पष्ट ऐ उ'यां 'एकांकी' संस्कृत रूपक साहित्य दे दस्से रूपें चा इक ऐ। एकांकी के केई रूप न। पर अज्जे दा एकांकी पच्छमी नाट्यकला की इक बड़ी बड़ी देन ऐ। आधुनिक एकांकी दा जन्म योरप च होआ। एही इक अंक आह्ला लघु नाटक खेड़ने च घट्ट समां लगने ते अभिनय की सुविधा मूजब तौले गै लोकप्रिय होई गेआ। शुरू-शुरू च नाटक दा परिचे देने गितै 40-45 मिनट दि'यां झलकियां प्रस्तुत कीतियां जंदियां हियां जेह्दे इक्कै अंक च लगातार खडौंदियां हियां। बाद च इ'नेंगी गै एकांकी दा नांS दित्ता गेआ। दरअसल 'एकांकी' नाटक दा ओह रूप ऐ जिस च सिर्फ इक घटना ते उसदे कन्नै सरबन्धत पातरें दा चित्रण इक समूलचे यूनिट (न्दपज) राहें उभरिए अपने उद्देश्य गी पूरा करदा ऐ। जित्थै नाटक च केई घटना ते अंक होंदे न उत्थै एकांकी च इक गै घटना ते अंक होंदा ऐ। समें की नाटक च कोई खास पबंदी नेई होंदी, ब एकांकी च समें की पबंदी दा पूरा-पूरा ध्यान रक्खेआ जंदा ऐ।

### परिभाषा

#### भारती विद्वान

हिन्दी के मन्ने-परमन्ने के विद्वान डा. राम कुमार वर्मा हुन्दा गलाना ऐ जे "एकांकी च इक गै घटना होंदी ऐ जेह्दी अपनी नाटकी कुशलता कारण गै उत्सुकता पैदा करदे होई चरमसीमा तक जाई पुजदी ऐ। सेठ गोविन्द दास लिखदे न जे नाटक च सोच की जिस कश्मकश दा वकास होंदा ऐ उसदा सिर्फ इक्क गै पैहलू एकांकी च मिथेआ जंदा ऐ। डा. एफ.सी. खत्री लिखदे न जे एकांकी इक्कै भावना ते चितवृत्ति दा रोचक प्रदर्शन आखेआ जाई सकदा ऐ। उपेन्द्रनाथ हुंदे मुताबक जि'यां आले चा औंदियां किरणां इक्क गै पाससा रोशन करदियां न। उ'यां गै एकांकी बी दर्शकें गी इक्कै सोच ते वातावरण के इक पैहलू की झलक दिंदा ऐ। नाटक ते एकांकी च फर्क दसदे होई अशक हुंदा गलाना ऐ जे नाटक की तुलना च एकांकी जीवन के इक अंश की झांकी गी इक निजमबद्ध रूपै च पेश करदा ऐ।

#### पच्छमी विद्वान

एकांकी की परिभाषा दिंदे होई सिडनी बावस लिखदे न जे "एकांकी साहित्य की ओह निजमबद्ध विधा ऐ जिस च इक घटना गी गै इस चाल्ली प्रस्तुत कीता जंदा ऐ। जे दिक्खने आहले उसदे प्रभावशाली वातावरण

च गोआची जन जंदे न। ते अपने-आपै च एकांकी दे पात्तरें च गै मिथन लगी पौंदे न। इससै चाल्ली दी गल्ल एकांकी बारै प्रसिद्ध नाटककार मिनकार्ड होरें बी आकखी दी ऐ। उंदे मूजब एकांकी गी अपने सीमत दायरे कारण कुसै खास परिस्थिति ते घटना कन्नै जुड़ियै रौहना पौंदा ऐ जिसदे फलस्वरूप उसदा स्भावक विकास होन लगी पौंदा ऐ। एकांकी बारै दिती गेदी परिभाषाएं राहें इक गल्ल स्पष्ट होई जंदी ऐ। जे एकांकी रूपक साहित्य दी ओह विधा ऐ जिस राहें दर्शकें सामनै इक भावना जां इक समस्या दी भाव-भरोची पेशकश कीती जाई सकै। विशे दी नजरी ने एकांकियें दे बी केई रूप न। जि'यां सुखांत 'एकांकी' ऐसा एकांकी ऐ जिसदी घटनाएं दा अंत पात्तरें दे सुख कन्नै जुड़े दा होंदा ऐ जि'यां – तन्द ते त्रुट्टे गंदी लैनी, अपने पैरे उप्पर। दुखांत एकांकी सुखांत दे विपरीत ऐ दुखांत एकांकी दा अंत दुखै आहले वातावरण च होंदा ऐ। पच्छमी नाटक ते एकांकी जगत च दुखांत एकांकी दा खास थाहर ऐ डोगरी च जोरावर सिंह, कर्तव्य, प्यासी धरती, मोर्चे उप्पर दुखांत एकांकियां न।

### एकांकी दे तत्व

नाटक ते एकांकी दे तत्वे च कोई टकोहदा फर्क नेई ऐ। नाटक च जे किश बक्खरे-बक्खरे अंकें राहें दस्सेआ जंदा ऐ। एकांकी च उ'यै इक यूनिट दे तौरा पर। एकांकी दी, कथावस्तु, पात्तरें दा चनां, संवाद घटना वगैरा तत्व नाटकै आंगर गै होंदे न। नाटकै कशा बड़ी सीमत स्थिति च होंदे न। एकांकी च संकलनत्रय (जितमम न्दपजे) समां, स्थान ते घटना दा खास ध्यान रक्खेआ जंदा ऐ। उस चाल्ली विशे-घटनाएं दी एकता, संक्षेप ते संकलन त्रय गी बनाए रक्खने दे तत्व मुख मन्ने जंदे न।

### कथानक जां कथावस्तु

एकांकी दी नीह, कुसै बी घटना गी लेइयै रक्खी जाई सकदी ऐ। पर इसदे कथ च गतिशीलता होनी लोड़चदी ऐ। इस च कल्पना गी उन्नी मात्रा च गै बरतना चाहिदा, जेहदे कन्नै कथावस्तु दी स्भावकता गी ठेस नेई पुज्जै। एकांकी दी कथावस्तु दा सरबंध, इतिहास, पुराण राजनीति, समाज धर्म वगैरा कुसै बी विशे कन्नै होई सकदा ऐ। अज्जकल ते एकांकी रचना लेई नमें-नमें केई विशे लैते जा करदे न। एकांकी दा पूरा दारोमदार एकांकी दी कथावस्तु उप्पर गै होंदा ऐ। कथावस्तु एकांकी दे शरीर लेई रीढ दी हड्डी दा कम्म करदी ऐ। इस करी एह दृढ, जानदार ते प्रभाव पैदा करने आहली होंदी ऐ।

### पात्तर

एकांकी च पात्तरें दी गिनतरी घट्टो-घट्ट होनी लोड़चदी ऐ तां जे धमच्चड़ नेई पेई जा। कथानक दा निर्वाह ठीक चाल्ली कीता जाई सकै। पात्तरें दी गिनतरी चार-पंज गै होनी लोड़चदी ऐ। सहायक पात्तरें गी उत्थै गै रक्खना लोड़चदा ऐ जित्थै उंदी जरूरत मसूस होवै।

## संवाद

संवाद एकांकी की जान होंदे न। एह पात्ररें दे व्यक्तित्व की ते कथानक की अग्रे टोरने आहले ते असरदार होने लोड़चदे न। संवाद जिन्ने लौहके स्भावक ते त्रिकखे होडन एकांकी उन्नी गै सफल ते असरदार होग। एकांकी की होर असरदार बनाने गितै संवादें च व्यंग ते हास्य दा पुट बी मददगार साबत होई सकदा ऐ। संवाद सिद्धे ते लम्में नेई, संक्षिप्त, सांकेतिक ते सरल होने लोड़चदे न। मुहावरेदार संवाद एकांकी की सजीव बनाई दिंदे न।

## संघर्ष

संघर्ष एकांकी दा जरूरी तत्व ऐ इसगी द्वंद ते कश्मकश कन्नै बी दस्सेआ जंदा ऐ। द्वंद राहें गै एकांकी दा कथानक अगड़ा बद्धा ऐ ते रोचक होई जंदा ऐ। एकांकी च जिन्ना ज्यादा द्वंद होग उन्नी मती रोचकता एकांकी च पैदा होग ते दर्शक इस च रुझी जाडन। इस करी संघर्ष कथानक की गति प्रदान करने च सहायक होंदा ऐ। जित्थे बाहरी संघर्ष एकांकी की कथावस्तु की जीवन प्रदान करदा ऐ, उत्थे अन्दरूनी संघर्ष पात्ररें दे किरदार की पूरी चाल्ली दर्शकें अग्रे खोल्ली दिंदे ऐ। इस करी मोनोलोग राहें अर्न्तद्वन्द दर्शकें सामनै होना लोड़चदा ऐ।

## अभिनय

एकांकी च अभिनय दा बड़ा महत्व ऐ। संवाद एकांकी दे श्राण प्रभाव की गै बनावे न, दिक्खने च अभिनय गै दर्शकें की मता प्रभावत करी सकदा ऐ। पात्ररें दा चुनाऽ, कथावस्तु दे विशेष मुताबक गै होना लोड़चदा ऐ तां जे ओह अपने किरदार च रुझियै अभिनय कन्नै दर्शकें की मंत्र-मुक्त करी सकन। अच्छे अभिनय आस्तै उपयुक्त, मंच, बुआज ते रोशनी की मुनासब व्यवस्था की खास जरूरत होंदी ऐ।

## प्रभाव की एकता

एकांकी च संकलनत्रय (समै, स्थान ते घटना) दे प्रभाव की एकता बनी रौहनी चाहिदी ऐ। एकांकी की सफलता दा दारोमदार इससै प्रभाव एकता पर होंदा ऐ।

उप्पर दित्ते गेदे तत्व इक आदर्श एकांकी रचना च जरूरी अंग मन्ने जंदे न। इक सफल एकांकी लेई इन्हें तत्वे की अपनाइयै चलना लाजमी ऐ।

प्रश्न – डोगरी एकांकी साहित्य दी विकास जातरा उपर रोशनी पाओ?

उत्तर— डोगरी एकांकी दा रूप असेंगी रामलीला, कृष्ण लीला, रासलीला, भगते, जागरने आदि दी झलकियें ते नकलें च लभदा ऐ। पही इक सुधरेआ रूप असेंगी जम्मू च रेडियो स्टेशन दे खुल्लने कन्नै ते उत्थोआं प्रसारत होने आहले डोगरी दे स्कटें, झलकियें च मिलदा ऐ। आजादी परैंत नमीं जरूरतें मुताबक समाजी चेतना, समाजी बुराइयें त किश होर विशे गी लेइयै रेडियो दी जरूरतें मुताबक एकांकी लखोन लगी पे। डोगरी दे प्रतिनिधि एकांकीकारें च सर्वश्री नरेन्द्र खजूरिया, मदन मोहन शर्मा, नरसिंह देव जम्वाल, जितेन्द्र शर्मा, विश्वनाथ खजूरिया आदि नांS शुमार होंदे न।

अस भाग जगाने आहले आं

डोगरी दा पैहला एकांकी संग्रह 'अस भाग जगाने आहले आं' सन् 1960 च छपेआ। एहदे लेखक नरेन्द्र खजूरिया होर न। सत्त एकांकियें दे इस संग्रह च बुद्धराम, साढ़े साथी, साढ़े संगी, जागो ते जगाओ, कोलम्बस दे साथी, त्रै मतबन्ने, अंग्रेजी भूत ते अस भाग जगाने आहले आं एकांकी शामिल न। इस संग्रह उपर जम्मू-कश्मीर अकादमी पासेआ पुरस्कार बी प्राप्त होआ हा। इ'नें एकांकियें दा मूल उद्देश्य मनोरंजन दे कन्नै सिखमत देना बी ऐ। इन्दे पात्तर माहनू बी हैन ते जानदार परिंदे बी। बुद्ध राम बच्चें च पिछड़ेपन दी समस्या गी दूर करने पर आधारत ऐ। सारे एकांकी बच्चे च आत्म-निर्भरता, समें दी पाबंदी ते कारनामों पर आधारत ऐ। भाषा बड़ी सरल, साद्धा ते प्रभावपूर्ण ऐ। कथावस्तु, संवाद, शैली ते अभिनय दी द्रिष्टी कन्नै बी एह सफल एकांकी ऐ।

सत्त डोगरी नाटक

सत्ते एकांकियें दा एह संग्रह जम्मू कश्मीर कलचरल अकैडमी पासेआ सन् 1966 च छपेआ। सन् 1968 च एहदा दूआ संस्करण छपेआ। एहदे च प्रो. रामनाथ शास्त्री हुंदा नाथी दा होटल, कविरत्न हुंदा मोर्चे उपर, डी. सी. प्रशांत हुंदा वीर जोरावर, यश शर्मा हुंदा हीखियां, प्रो. मदन मोहन शर्मा हुंदा नीच, जितेन्द्र शर्मा हुंदा कर्तब ते नरेन्द्र खजूरिया हुंदा प्यासी धरती एकांकी शामिल न।

इ'नें एकांकियें चा नीच, हीखियां, मोर्चे उपर ते कर्तब दी कथावस्तु दा आधार देश प्रेम ऐ। नाथी दा होटल, ते प्यासी धरती समाजी झलक पेश करदे न। वीर जोरावर गी इतिहासक एकांकियें दी गिनतरी च रक्खी सकनेआं।

## पंचरंग

सन् 1969 च जितेन्द्र शर्मा द्वारा सम्पादित पंजे एकांकियें दा एह संग्रैह छपेआ। इस संग्रैह च विश्वनाथ खजूरिया हुंदा घुण्डियां, केहिरसिंह मधुकर हुंदा संगीत रूपक 'लैहरा' नरेन्द्र खजूरिया हुंदा 'अपने-पराए', जितेन्द्र शर्मा हुंदा 'न्हरे दी तानी, संजोगे दे धागे' ते राम नाथ शास्त्री हुंदा बरांडी शामिल न।

घुण्डियां एकांकी पारिवारिक परिस्थितियें पर आधारित मनोविज्ञानक एकांकी ऐ। 'अपने-पराए' च जात-पात ते छूआ-छात, 'बरांडी' च विधवा ब्याह दी प्रथा उपर लो सुट्टियै समाजी स्तर गी उबड़ा चुक्कने ते उसी अज्ञानता दे न्हरे चा कड़ने दी बत्त सुझाई दी ऐ। 'लैहरा' इक रेडियो गीत-एकांकी ऐ जेहड़ा डुंगर च मशहूर प्रेम-गाथा कुंजू चैंचलो उपर आधारत ऐ। 'न्हरे दी धानी संजोगे दे धागे' जैकब्स दी प्रसिद्ध कहानी दे आधार रचोई दी एकांकी ऐ।

## डोगरी एकांकी

एह सत्त एकांकियें दा संग्रैह जम्मू-कश्मीर कलचरल पासेआ सन् 1970 च प्रकाशत होआ। इस संग्रैह च 'जीने दा लाह', नतीजा, मलाटी, ऐतवार दी सैर, बगान्ना सच्च ते साम्ब एकांकी शामिल न।

नतीजा एकांकी च श्री नरसिंह देव जम्वाल होरें डोगरी दे बोध-बकास ते लिपि बारै जानकारी दिती दी ऐ जे हून यूनिवर्सिटी च हर बरे ज्हरां लोक डोगरी दे मतेहान देइयै उपलम्मे हासल करदे न ते सरकार एह्दी तरक्की उपरा मता सारा रपेआ खर्च करा करदी ऐ। उंदा बचार ऐ जे कुसै बी भाशा दा बदाऽ-फलाऽ उसी अमल च आनने कन्नै होंदा ऐ ना के रटे चाढ़ियै छड़े मतेहान पास करियै। 'नतीजा' सिरलेख इस बक्खी सारत करदा ऐ जे नतीजा उंदा गै सफल निकलदा ऐ जेड़ै सोची समझियै दमाकै सोआलें दा परता दिंदे न। घोट लाने पशपशी करने आहदा दा नेई। मलाटी ऐतिहासिक घटना पर आधारत ऐ। 'ऐतवार दी सैर' च अज्जै दी व्यस्त जीवन कन्नै जुड़े दे नरेन्द्र खजूरिया दा एकांकी यर्थाथ तस्वीर प्रस्तुत करदा ऐ।

'जुक्का' प्रो. मदन मोहन शर्मा हुंदा समजक एकांकी ऐ। प्रो. रामनाथ शास्त्री हुंदा 'साम्ब' इक दार्शनिक एकांकी ऐ। इस एकांकी दा कथानक परसुआर्थी राजपरोहत बाबा अम्बो दी महानता पर आधारत ऐ।

## इक जन्म होर

1971 च प्रो. मदन मोहन शर्मा हुंदा रेडियो एकांकी संग्रैह 'इक जन्म होर' प्रकाशित होआ। एह्दे च कुल छे रेडियो एकांकी – मरगाई, ल्हू दी बाज, चार थम्म चरासी बरगे, न्यालप, फाड़ी कां ते इक जन्म होर शामिल न। एह सब्भै एकांकी बड़ी सफलता ने रेडियो कश्मीर, जम्मू थमां प्रसारित होई चुके दे न।

‘मरगाई’ एकांकी च फ़ाड़ी ते शैहरी वातावरण दा फर्क दस्से दा ऐ। फ़ाड़ दी रानी रत्ना शलैपे दी मूरत ते जींदी जागदी हसदी खेड़दी मरगाई ऐ, जेहड़ी शैहरा दे दमघोटू वातावरण च आनियै बतेई ते सुक्कियै तीला होई जंदी ऐ।

‘लहू दी बाज’ एकांकी च इक नेह मनुक्ख रूपी पशु दी क्रूरता दा वर्णन ऐ जेहदा छुरा म्हेसा लहू दे हाड़ी लेई तरेआए दा रौहदा ऐ।

‘चार थम्म, चरासी बरगे’ इक समाजिक एकांकी ऐ इन्द्रा एकांकी दी मुख पातर ऐ। कुड़ियें ताई ब्याह दी परम्परा ते चार थम्म चरासी बरगे’ यानि घर-घस्ती दा बोझ सम्भालना लाजमी समझेआ जंदा ऐ। पर ‘इन्द्रा अपने भैन भ्राउ कमला ते गोपाल ते भनेउ, भनेई राजू बबली दी चंगी चाल्ली पालमा करियै एह साबत करदी ऐ जे ओह विजन ब्याह दे बी थम्मे-बरगे दा भार चुक्कने दी समर्थ रखदी ऐ।

‘न्यालप’ एकांकी च ‘तारो’ गी अपने कृष्ण मुरारी दी उमर भर न्यालप बनी दी रौहदी ऐ। वातावरण, पातरें दे चरित्र, नाटकीयता ते भाशा-शैली दे लिहाज कन्नै बी एह इक उत्तम एकांकी ऐ।

‘फ़ाड़ी कां’ फ़ाड़ी वातावरण दी अक्कासी च इस एकांकी च यथार्थ रूप सामने औंदा ऐ। गुजरू पूरणी गी मनैशा चांहदा ऐ। ओह सोहगा-स्याना ऐ ते अपने फ़ाड़े दे उत्थुआं दे बसनीकें ताई ओह इक लोउ ऐ। फ़ाड़े दी अज्ञानता ते गरीबी उसी डंगदी रौहदी ऐ। अपने प्यार ते सुक्खे दे बलिदान देइयै ओह फ़ाड़े दी लाज बचाई लैदा ऐ।

‘इक जन्म होर’ नट सरदारा, नटनी चैचलो ते राजा संग्रामपाल। सरदार ते चैचलो इक दुयें गी मन थमां चांहदे न। राजा संग्रामपाल जोर, जुल्म ते क्रूरता दा प्रतीक ऐ। उन्दे सुच्चे हिरखै मझाटै इक रुकावट ऐ ओह सारी उमर उनेंगी मिलन नेई दिंदा। नट, नटनी, बजोगी अग्गी च धुखी-धुखियै भस्म होई जंदे न ते मनै च ‘इक होर जन्म’ दी कामना बनी दी रौहदी ऐ।

### डोगरी शीराजा एकांकी अंक इक ते दो

1973 च जम्मू-कश्मीर पासेआ शीराजा एकांकी इक ते दो संग्रैह प्रकाशित होए। इनें दौनें संग्रैहें च पंज-पंज एकांकी न। शरीजा अप्रैल 1973, अंक-1 च प्रो. मदन मोहन शर्मा हुंदा ‘मौती दी छामां हेठ’, नरेन्द्र खजूरिया हुंदा ‘ऐतवार दी सैर’, सुर-सम्राट, ‘सांझी भुल्ल’ ते ‘जादू सिर चढ़ी नै बोले’ संकलत न।

‘मौती दी छामां हेठ’ एकांकी च निम्न मध्यमवर्गी परिवार दा चित्रण ऐ। ‘सुर-सम्राट’ इक हास्य एकांकी ऐ ‘सांझी भुल्ल’ एकांकी नरसिंह देव जम्वाल हुन्दे आसेआ पारिवारिक दम्पति दे गलतफैहमियें उप्पर आधारत इक मनोविज्ञानक एकांकी ऐ।

जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकादमी पासेआ शीराजा डोगरी दा एंकाकी विशेषांक-2 बी 1973 ई. च छपेआ। इस संग्रैह च 'नरसिंह देव जम्वाल' हुंदा 'हीखी', रामनाथ शास्त्री हुंदा 'पुराना बड़ ते नमीं सिड़क', मदन मोहन शर्मा हुंदा 'सड़ैन', नरेन्द्र खजूरिया हुंदा 'तन्द जे त्रुट्टै गंढी लैनी' ते जितेन्द्र शर्मा हुंदा 'शूटिंग' एंकाकी संकलत न।

'हीखी' इक समस्या प्रधान एंकाकी ऐ। इस एंकाकी च मुख्य समस्या डोगरी नाटकें ताई जनाने पात्तरें दी लोड़-थोड़ ते तपाश ऐ ते उंदे मिलने दी हीखी तोड़ तक बनी रौहदी ऐ।

'पुराना बड़ ते नमी सिड़क' इक प्रतीकात्मक ते मनोविज्ञानक एंकाकी ऐ। 'बड़' प्रतीक ऐ स्थिरता, रूढ़िवादी परम्पराएं ते पुरानी कट्टर विचारधारा दा ऐ ते सिड़क अज्जै दे यर्थाथ दा प्रतीक ऐ।

'तंद जे त्रुट्टै गंढी लैनी ओ' एहदे च त्रै गै पात्तर न चन्दू, रूपा ते साहब। साहब शैहरी बनौटी सभ्यता दा अंग ऐ। चन्दू ते रूपा ग्राई पहड़ी वातावरण ते भोले-भलोके, निर्मेल पात्तर न। रूपा दी हिरखै दी तन्द जेल्लै शैहरी साहब कन्ने त्रुट्टी जन्दी ऐ तां ओह उ'यै तंद अपने हिरखी चन्दू कन्ने गंढी लैदी ऐ।

'शूटिंग' एंकाकी तकनीकी आधार पर पूरी चाल्ली सफल एंकाकी ऐ। हिरोइन माला एहदा केन्द्री पात्तर ऐ सारा ताना-बन्ना इस्सै पात्तर दे आलै-दुआला बुनेआ गेदा ऐ।

'यात्रू' सन् 1974 च प्रो. मदन मोहन शर्मा हुंदा दूआ एंकाकी संग्रैह प्रकाशित होआ। एहदे च छे एंकाकी न - गलेडियटर, बिन आलड़े दे पंछी, जाई दी इक रात, इक फंगु तरेआई दी, मेरा लहु तेरा पानी ते यात्रू।

'गलेडियटर' मोनोलाग स्टाइल च इक पात्तर पर आधारत एंकाकी ऐ। ओहदी नजरी च हर लेखक इक गलेडियटर आंगर ऐ, जेहड़ा अपने आपै पर जोरदार बार करियै लहु-लुहान होई अद्धी-अद्धी राती तक्कर अपने तत्ते लहुआ कन्ने अपनी रचनाएं गी चित्रदा ऐ उनेंगी जन्म दिंदा ऐ।

'बिन आलड़े दे पंछी' च 1971 च भारत-पाकिस्तान ते 'मेरा लहु तेरा पानी' च बांग्ला देश पर पाकिस्तानी हमले दा जिकर ऐ।

'जाई दी इक रात' भद्रवाह दे कुदरती शलैपे दी गोदा इक ग्रांड 'जाई' च शरीफा गुज्जरी, लल्लू गुज्जर, सेठ शिवनाथ, रचना ते रंजीत द्वारा गजारी गई इक रातीं दा सुंदर-सजीव वर्णन ऐ। रयना, सेठ शिवनाथ्छ दी दूई पत्नी ऐ रंजीत, रचना दा हान मेल ऐ ते मन-चिते थमां उसी चांहदा ऐ। रचना दा पिता ओहदा ब्याह पंजतालियें ब'रें दे बुद्धे करी दिंदा ऐ। रचना कर्दे बी उसी दिली तौर उप्पर स्वीकार नेई करनदी। खीर च तंग आइयै रंजीत गी शिवनाथ गी मरवाई देने दी सलाह दिंदी ऐ। एह सैस्पेंस खीर तक बनेआ रौहदा ऐ। दुई बक्खी शरीफां ते कालू गुज्जर भाएं गरीब न पर सुखी न।

‘यात्रू’ इस संग्रह दा सारेंशा शैल ते जोरदार एकांकी ऐ। एहदा कथानक भद्रवाह दी सन्हाकी धार ऐ। जित्थै हर बरे बासक नाग दा मेला लगदा ऐ ज्हारां बद्धे लोक उत्थें अपने मनै दी मुरादां मंगन जंदे न। पात्तरें दे कन्नै यात्रा ते यात्रुएं दा बी शैल चाल्ली वर्णन होए दा ऐ। पात्तरें चा इक महत्वपूर्ण पात्तर मुलकराज ऐ ओह बुद्धिजीवी ऐ ते नमीं सोचें दा मालक ऐ। चलदी आवा करदी रुढ़ीवादी वचारेंशा ओहदी सोच बक्खरी ऐ।

‘डोगरी बाल एकांकी’ ओम गोस्वामी हुंदा सत्त बाल एकांकियें दा एह संग्रह 1974 ई. च प्रकाशित होआ। एहदे च गुरु दक्खना, कच्ची-पक्की, मां इक कहानी सनाऽ, घर-घर, जमात-करामात, बुआल ते मित्रोकोटियां एकांकी शमल न।

‘गुरु दक्खना’ एकांकी दा कथानक महाभारत दे एकलव्य दी मशहूर कथा पर आधारत ऐ।

‘कच्ची-पक्की’ च बचपने दे आले-भ्पाले दौर च खेढ, हास्से, जिद्ध ते मन-मटाऽ आदि मनोविज्ञानक पक्खें पर आधारत एकांकी ऐ।

‘बुआल’ एकांकी च अज्जै दी शिक्षा-प्रणाली ते शरेआम नकल मारने बिदत पर चोट कीती दी ऐ।

‘मित्रोकोटियां’ दी तस्वीर झलकदी ऐ। इ’नें एकांकियें मनोरंजन दे कन्नै-कन्नै सिक्ख-मत बी ऐ।

‘झकदियां किरणां’ सन् 1975 च प्रो. रामनाथ शास्त्री हुंदा छे एकांकियें दा एह संग्रह प्रकाशित होआ। इस संग्रह च चार एकांकी बरांडी, नमीं सिड़क नाथी दा होटल, बेबसाई, पुराना बड़ ते बरोबरीर इस संग्रह च प्रकाशित न।

इस संग्रह च ‘बेबसाई’ शास्त्री हुंदा समाजिक एकांकी ऐ। लेखक दा द्रिष्टीकोण मनोविज्ञानक ऐर एकांकी दा मुख पात्तर अमला ते रमेश दिशाहीन, भटकदे समाज दे डिगदे समाजी मान-मुल्ले प्रति चिन्तन न। अज्जै दे मरजादाहीन समाज प्रति बेबसाई पर ओह सोच-विचार करदे न।

‘बरोबरी’ समाजवादी द्रिष्टीकोण पर आधारत ऐ एहदे च ज्ञान ते गन्दरबू बचपने दे दोस्त न ते एहदे मुख पात्तर न। दोयै अपनी दोस्ती बिना अमीरी-गरीबी दै फर्क ते बड़्डे-लौहके दे भेद-भाव दे बरोबर नभांदे न। दिली बरोबरी च लाजमी नेई जे एह पैसे जां रुतबे दे आधार पर होयै। बरोबरी मानसिक रिश्ते मझाटै मानसिक संतुलन ऐ।

‘अपने पराए’ नरेन्द्र खजूरिया हुंदा एह संग्रह 1975 च प्रकाशित होआ। इस च पंज एकांकी शामिल न। इ’नें एकांकियें च ऐतवार दी सैर, प्यासी धरती ते तन्द जे त्रुट्टै गंढी लेनी ओ ते हिजरत शामिल न।

“अपने पराए” इस संग्रह दी जोरदार एकांकी ऐ। इसदे चार पात्तर न मुख पात्तरें च रिटायर्ड अफसर ते ओहदी घरैआहली न, जेहड़े इक बड़्डी कोठी च रौहदे न ते इक नौकरे दी कमी दी शिद्धत कन्ने मसूस करदे

न। दूये दो पात्तरें च पंजियें बरे दा जुआन गभरु मंगल ते ओहदी त्रीमत बैती। एकांकी च अमीर, खिंझ भरोचे इक्कलसोखे शैहरी पात्तरें ते उंदे व्यवहार दी अक्कासी करदा ऐ ते दूर्इ बक्खी ग्राई गरीब, आले-भोले हिरखी पात्तरें दी नुमाइदंगी करदा ऐ। अपने, अपने होंदे होई बी बगान्ने न जे उंदे च हिरख-समोध संदोख ते अपनापन नेई।

‘हिजरत’ इस संग्रह च इक होर एकांकी ऐ जेहड़ी इतिहासक घटना उपर आधारत ऐ इसदे च बावा जितो ते बुआ कौड़ी प्रमुख पात्तर न।

‘पंजरंग’ 1975 च छपने आह्ला त्रिया एकांकी संग्रह पंजरंग ऐ। डा. देव रत्न शास्त्री हुंदा एह सब एकांकी समाज दियां बक्खो-बक्ख यर्थथ तस्वीरां प्रस्तुत करदे न।

इस संग्रह च बजट दा भविक्ख, बक्खरे-बक्खरे पैडे, दोस कोहदा अपने पैरें उपर, हत्यारन शामिल न। ‘बजट दा भविक्ख’ एकांकी मध्यमवर्गी परिवार दी कहानी ऐ प्रो. ते ओहदी घरैआली कृष्णा दे बनाए ऐसे घरेलू बजट उपर आधारत ऐ जेहड़ा मते जतने ते कोशिश बावजूद तोड़ नेई चढ़दा। कीजे म्हीने च कोई ना कोई अनमित्थेआ खर्च आई जंदा ऐ ते उंदा बजट बिगड़ी जंदा ऐ।

“दोस कोहदा” एकांकी घरेलू वातावरण दी इक ऐसी तस्वीर ऐ जेहदे च सस्स नूह दे मझाटै निक्की-निक्की गल्लें कारण खुड़बो-खुड़बी लग्गी रौहदी ऐ। एह ममूली गल्लां कदें-कदें भयंकर रूप धारी लैदियां न, अस एह निं सोची सकदे, दोस कोहदा ऐ।

‘हत्यारन’ एह इक पात्र एकांकी ऐ ते इक जुआन, नमीं ब्याहता द्वारा अदालती च दिते गेदे ब्यानें पर आधारत ऐ, किश चाल्ली ओह अपने पति दे दुरव्यवहार शा तंग आइयै अपने जीवन शा नराश होई जंदा ऐ। अपनी नाजुक धिरु दा गल इस लेई घोटी छुड़दी ऐ जे उसी बी कल डारे पर नेई चलना पवै। इस एकांकी च नारी दे प्रति मर्द दे जोर-जुल्म दी तस्वीर पेश करदी ऐ।

‘अंगारे दी लोड’ मदन मोहन शर्मा हुन्दा चार एकांकियें उपर आधारत संग्रह ऐ ते 1976 च प्रकाशत होआ। इन्दे च अंगारे दी लोड, गूज ‘अम्बर दूर उच्चा’ कुरुक्षेत्र सबै रेडियो एकांकी न।

“अंगारे दी लोड” च रंजीत इस एकांकी दा मुख पात्तर ऐ ओ इक अय्याश जिमींदार दा इक आदर्शवादीर पुत्तर ऐ। एहदे इलावा रजनी ते बलदेव दुये दो मुख पात्तर न।

“गूज” इस एकांकी दा आधार स्टूडेंट अनरैस्ट ऐ। यानि विद्यार्थी वर्ग च फैलदी बेचैनी। प्रो. वर्मा मुख पात्तर ऐ। अफसर, रमा ते कुलदीप इसदे दूए जानदार पात्तरें च न। डा. वर्मा इक आदर्श अध्यापक ऐ, ओह चांहदा तां पुलसा दा अफसर, तसीलदार जां कोई होर सरकारी औहदेदार बनी सकदा हा, पर ओह इमानदारी सच्चाई प्यार ते पेशे प्रति समर्पित ऐ। इक आदर्शवादी अध्यापक दे निजी जीवन, उसदे उसूल ते कश्मकश दी जींदी जागदी तस्वीर असेंगी इस च लभदी ऐ।

‘अम्बर’ दूर उच्चा’ इक मनोविज्ञानक एकांकी ऐ। ‘कुरुक्षेत्र’ च आदर्श ते असूलें पर चलने आहले मनुक्खै गी परिस्थितियें दे कुरुक्षेत्र च रोज लड़ना पौंदा ऐ संघर्ष करना पौंदा ऐ। पैसे दी इस दुनिया अगर दिक्खेआ जा तां शाश्वत मुल्लें दी कदर-कीमतर मती ऐ। पैसा बाहरी सुख ते देई सकदा ऐ पर मनै दा चैन नेई।

‘ठंडिया धारां मकदे डारे’ सन् 1978 च विष्णु भारद्वाज द्वारा रेडियो एंकाकी संग्रैह ‘ठंडियां धारां मकदे डारे’ छपेआ। एह सभै रेडियो कश्मीर जम्मू पासेआ सफलता कन्नै प्रसारित होई चुके दे न। एहदे च ठंडिया धारां मकदे डारे, एह संज, ओह सवेरा ते धूडां शामिल न।

‘ठंडियां धारां मकदे डारे’ च डुंगर दि’यां ठंडियां शलैपे भरोचियां धारां इन्नियां रौसलियां न उत्थै बसने आहले लोकें दा जीना कि’न्ना औखा ऐ – एहदे च दस्सेआ गेदा ऐ। एह संज ओह सवेरा समाजिक एकांकी ऐ।

‘बंजर’ एह एकांकी संग्रैह 1980 च प्रकाशित होआ एहदे च चार एकांकी शामिल न। बंजर, चीड़ा देन गुआई, लम्म पैडे दे मसाफर, ते ठण्डा जुआलामुखी।

‘बंजर’ च नारी दे तप त्याग दी यथार्थ तस्वीर पेश करदा। ‘चीड़ा देन गोआई’ च वात्सल्य रस कन्नै ओत-प्रोत एकांकी ऐ।

‘लम्मे पैडे दे मसाफर’ जिन्दगी दे इस सफर च नेकियां-बदियां, अच्छाईयां-बुराईयां, दुख-सुख म्हेशा माहनु कन्नै रौहदे न इ’यै इस एकांकी दा मूल उद्देश्य ऐ।

‘ठंडा ज्वालामुखी’ समें दी समर्थता ते सार्थकता गी आधार बनाए दा ऐ। कि’न्ना बी रोह रोस्सा की नेई होयै, किन्ना गै बड़डा हादसा की नेई होयै समें दी बर्फ हर जुआलामुखी गी ठंडा करी ओड़दी ऐ।

‘चौखर’ नरसिंह देव जम्वाल हुंदा एकांकी संग्रैह 1980 च प्रकाशित होआ। इन्दे च हीखी, सांझी भुल्ल, अतीत दा भूत ते धुखन एकांकी शामिल न। ‘अतीत दा भूत’ पति-पत्नी दे आपसी रिश्ते बश्कार फसे दे इक नकारे बैहमगी लेइयै मनोविज्ञानक ढंगाकन्नै लिखेआ गेदा एकांकी ऐ। लज्जया, जेहड़ी कदें बिशन कन्नै प्यार करदी ही ते जैदेव कन्नै ब्योई दी ही, उसी बिशन दा पलै-पलै उन्दे घर औना ते जैदेव दा उसदे कन्नै इक-मिक होई गूढ़ियां गल्लां करना, लज्जया दे मनै च बैहम दा भूत बस्सी जंदा ऐ ते ओह मनोमन एह सोचन लगी पौंदी ऐ जे उसदे घरा आहले गी उसदे अतीत बारै सब किश पता ऐ। ते ओह जानी-बुझियै उसदे पराने प्रेमी बिशन गी अपने घर सद्वियै बुहाली लैदा ऐ। तां जे कुसै दिन ओह उसी नसर करी सकै। जां ओह अंदरो-गति धुखदी सड़दी र’वै। लज्जया दा इ’यै त्राह नुहाड़े कोला आखर सच्च खोआई ओड़दा ऐ। जिसदे बारै उसदे घरैआहले गी किश बी पता नेई होंदा। ‘धुखन’ इक पौराणिक कथा उप्पर आधारित एकांकी ऐ। राक्षसें द्वारा कच्च गी मारियै नुहाड़ी शराब बनाईयै शुक्राचार्य गी पलेआन कोला एकांकी दी शुरुआत होंदी ऐ ते संजीवनी दा भेत लेइयै कच्च दे उत्थुआं चली जाने ते देवयानी दे राने करलाने कन्नै गै एकांकी दा अन्त होंदा ऐ।

‘नीलकण्ठ’ एह संग्रह विश्वनाथ शास्त्री हुंदा 1980 च छपेआ। एहदे च पंज रचनां न – घुडियां, फुल्ल खिड़ेआ पर, नीलकण्ठ, अछूत ते निगोसार।

‘फुल्ल खिड़ेआ पर’ हिन्दू-मुसलमान एकता ते भाईचारे दी भावना गी लेइयै लिखी गेदी रचना ऐ। हैडमास्टर, फजलू चपड़ासी ते जीनत एहदे मुख किरदार न। फजलू स्कूलै दा बड़ा मेहनती ते इमानदार चपड़ासी ऐ। ओह क्यारी दे फुल्लें दी साम्भ सम्भाल आस्तै जान दी बाजी लाई ओड़दा ऐ।

‘नीलकण्ठ’ मध्यमवर्गी परिवार दी कहानी पर आधारत ऐ। नीलकण्ठ स्यानी उमरी दा हंसमुख, मस्त-मलंग तबीयत दा मालक ऐ। ओहदा एह भगल बनेआ रौहदा ऐ जे नुहाड़े कोल मते पैसे न। एह भेत कुतै खीर च जाइयै खुलदा ऐ जे ओहदी गंडी कुल कत्ती रुपे गै हे। कला ते शिल्प दे आधार उपर एह सरोखड़ एकांकी ऐ।

‘अछूत’ डोगरी नाटक दे इतिहास च इक महत्वपूर्ण एकांकी ऐ। 1935 च लखोआ ते रामनगर दे मिडल स्कूलै दे आर्जी मण्डुए पर सफलता कनै खेढ़ेआ गेआ। इसदा कथानक अछूत उद्धार ते डड्डू बसैंतगढ़ जनेह पहाड़ी ग्राएं च फैले पहाड़ी रोग उपर आधारत ऐ।

‘घुडियां’ दादे-पोतरे दी इक दूए आस्तै स्वभावक कशश ते समझ गी लेइयै घरै दियें मनै च उजदियां-मठौदियों घुडियें दा इक मनोविज्ञानक चित्रण ऐ। नमें ते पुराने विचारें बशकार पेदी खाई गी होर ते होर झूंगा करने च वजनी गी नकरात्मक सोच गै इसदे च बाद्धा पांदी ऐ ते हरि भगत गी करैह्त भरोची नजरें कनै दिक्खने उपर मजबूर करदी ऐ एह सोच इस बल्लै हर घर च घर करी गेदी ऐ ते उत्तर आधुनिकतावाद दी इक्कलसोख नीती दी पक्की नशानदेही करदी ऐ। ‘निगोसार’ पारिवारिक समस्याएं परिस्थितियें उपर आधारत एकांकी ऐ।

‘साढ़ा साहित्य 1982’ च देशबन्धु डोगरा नूतन हुंदा सरुर ते जितेन्द्र शर्मा हुंदा शूटिंग मुड़ियै छपे। एहदे च गै घनश्याम घगवालिया हुंदा ‘मनुक्ख ते परछामे’ नांऽ दा एकांकी छपेआ।

‘सतरंग’ सन् 1984 च ओम गोस्वामी हुंदा सम्पादन च एह एकांकी संग्रह छपेआ। इस संग्रह च प्रो. रामनाथ शास्त्री हुंदा मैले दर्पण, धुधले चेहरे, प्रो. मदन मोहन शर्मा हुंदा रिसर्च स्कालर, विश्वनाथ खजूरिया हुंदा बावा जित्तो। जितेन्द्र शर्मा हुंदा ‘कर्तब’ प्रो. ललित मंगोत्रा हुंदा ‘सक्के अजनबी’, चमन अरोड़ा हुंदा ‘कागदे दे फुल्ल’, मोहन सिंह हुंदा ‘बेरये’ एहदे च संकलित न।

‘मैले दर्पण, धुधले चेहरे’ एह एकांकी रेडियो-एकांकी रेडियो-कश्मीर जम्मू थमां प्रसारित होई चुके दा ऐ। कथानक दा आधार ओह लोक न जेहड़े अपने अहम् दे शीशे च अपने-आप गी बड्डा ते अपने सुआए होरने सारें गी लौहका ते नां समझ समझदे न। ऐसे लोक कदें बी अपने-आप गी दिक्खने दी कोशिश नेई करदे।

“रिसर्च स्कालर” इस एकांकी का उद्देश्य आधुनिक पुस्तकें प्रकाशकें द्वारा लेखकें ते उंदे उच्च साहित्य दे प्रति बेकदरी दी भावना गी उजागर करना ऐ। उयै लेखक जेहड़ा कताबें गी पब्लिशर इक बारी छापियै पछतांदा हा जेहदी रचनाएं गी सिनक चटदी ही, ओहदी रचनाएं गी जिस बेल्लै प्रो. पीताम्बर जनेहा सोहगा अलोचक मिलदा ऐर तां ओहदियां कशतियां अमर होई जंदियां। हत्थो—हत्थ लगदियां न। इस एकांकी च प्रो. पीताम्बर, तिलोत्तमा, सूरज सरूप ते मालतू एकांकी दे खास पातर न।

‘बाबा जित्तो’ विश्वनाथ खजूरिया हुंदा एह एकांकी बाबा जित्तो दी मशहूर ऐतिहासिक कथानक उपर आधारत ऐ। जित्तो, जुलम, जोर—जबरदस्ती, बेइन्साफी दे खलाफ इक क्रांति दा चिन्न ऐ, जेहड़ा जागीरदारी प्रथा अगो अपने गोड़दे नेई टेकदा सगुआं उंदे कन्नै डटियै मुकाबला करदा ऐ खीर च आत्मदाह करी लैंदा ऐ।

‘कागदे दे फुल्ल’ इक मध्यमवर्गीय परिवार च घरेलू जिम्मेदारियें, मजबूरियें हालात ते अहसासें दे घेरें कदें—कदें इन्ने फैली जंदे न जे सझौता करना ओखा होई जंदा ऐ पति—पत्नी दे मझाटै तलाक तक दी नौबत आई जंदी ऐ। इससै दे आलै—दुआलै एकांकी दा कथानक चलदा रौहदा ऐ।

“सक्के अजनबी” इस एकांकी दा आधार पारिवारिक सदस्यें च पनपदी ओह आजाद भावना ऐ जेहदे कारण सक्के सरबन्धें च बी छिंडे मठोंदे न ते सक्के बी अजनबियें साई बझोंदे न।

‘कर्तब’ इस एकांकी च ‘अमर’, निशा, अजीत ते अमर दी मां मुख पातर न। सबै अपना—अपना कर्तब नभाने च सार्थक न। अमर इक फौजी ऐ, देसै दे प्रति अपना बलिदन देइयै, अजीत अपने बड़दे भ्राऊ दी इच्छा मुताबक अपनी भाबी निशा कन्नै ब्याह करियै, निशा अपने पति दी चाह मुताबक देर कन्नै ब्याह दी हामी भरियै सभनें अपना—अपना कर्तब नभाए दा ऐ।

‘बेरवे’ इक निम्नमध्यवर्गीय परिवार च जित्थे आमदन दे बसीले घट्ट ते खरचे, जिम्मेदारियें दी सूची लम्मी होऐ, इक तनाऽ, घुट्टन ते खुड़बो—खुड़बी दा वातावरण बनेआ रौहदा ऐ इस एकांकी च दरशाया (चित्रित कीता) गेदा ऐ।

“जोत” 1985 च शिव दोबलिया हुंदा च ‘ऊं’ एकांकियें उपर आधारत एह संग्रह छपेआ। चारै एकांकी हास्य व्यंग शैली उपर आधारत न।

“परौहनचारी” एकांकी च अज्जै दे दवाजर हिपोक्रेसी किस्म दे माहनुएं दा दमुआ रूप साढ़े सामने औंदा ऐ। सूध, कंजूस, सभा आह्ला अधकड़ उमरी आह्ला परसराम इस एकांकी दे मुख पातर न।

‘लाटरी दा टिकट’ धनीराम ते भागवैती एहदे च मुख पातर न। लाटरी दा टिकट खरीदने परैंत धनीराम ते भागवैती अपनी ख्याल दुनिया दी सुख—सृष्टि दी कल्पना करदे न। आखरी लाटरी दा टिकट कुसै होर दे नांऽ निकलदा ऐ उंदी उम्मीदें उपर पानी फिरी जंदा ऐ।

‘अधिकार’ ते ‘करी लेओ पही गल्ल’ समाजिक एकांकियें न।

‘शीराजा एकांकी’ 1984–85 इस संग्रह च विश्वनाथ खजूरिया हुंदा ‘सत्य शिव’, प्रो. मदन मोहन शर्मा हुंदा ‘दिल देरआ’, नरसिंह देव जम्वाल हुंदा ‘सीरां’, डॉ. मनोज हुंदा ‘पंजिमी सदी दे डाक्टरै दी हट्टी’, शिव दोबलिया हुंदा ‘सप्प गै सप्प’ ते देशबन्धु डोगरा नूतन हुंदा ‘सेहत अंदराज’ सम्मिलित न।

“सत्यं शिवं वक्ती तौर उपर भाएं कुसै कला दा मान मुल्ल नेई पवै, बेकरदी होयै, पर खीर सुच्ची कला दा गुआड़ छप्पे दा नेई रौहदा ऐ ओह इक रंग जरूर लांदा ऐ। इससै उद्देश्य गी लेइयै लिखेआ गेदा एह एकांकी ऐ।

‘दिल देरआ’ इस एकांकी च पिछड़े कबीले वासियें दा चित्रण पेश करदा ऐ। कबील दि‘यां रीतां–रस्मां, कार–व्यवहार ते स्था–सुआतम आदि मता किश सामनै औंदा ऐ। कथानक देरआ दे आर–पार बस्से दे उनें दौं परिवारें पर टिके दा ऐ। जिंदी आपू चे सिर धड़ै दी लगदी ऐ। इक परिवार दे सदस्यें च देबां, संगरा, जगती ते दुई बक्खी दे पातरें च राणा, गौरां ते रानो शामिल न।

‘सीरां’ इस एकांकी दा आधार मसूम बच्चे न, जिनें गी गुण्डे चराई लेई जंदे न ते पही भिख मंगने पर मजबूर करदे न। मुख पातरें च मनोहर, उषा ते मंगता बच्चा बगैरा न। बेदना ते ममता दी सच्ची तस्वीर लभदी ऐ।

‘पंजिमी सदी दे डाक्टरै दी हट्टी’ डॉ. मनोज दा एह एकांकी अपनी चाल्ली दा प्रयोग ऐ। एह इक फैंटसी ऐ यानि अज्जै कोला 500 बरें बाद दे जीवन दी काल्पनिक झलक दस्सी दी ऐ। एह दुनियां किन्नी बदली गई होग, रिश्ते दे रूप कनेह होडन, माहू दे शरीरा दे अंग दिल, दमाग, कन् अक्खीं सब ‘स्पेयर पार्ट्स’ आह्ला लेखा उपलब्ध होडन। एकांकी दा शिल्प रोचक ते शैली प्रभावपूर्ण ऐ।

‘सप्प गै सप्प’ एह एकांकी घटना प्रधान एकांकी ऐ। देसराज, माया ते चौधरी मुख पातर न, सारा वातावरण अदालत दा ऐ। सारियां घटनां पलेश बैक राहें सामने औंदियां न। चौधरी दा माया कन् जबरदस्ती करना ते पही ओहदा घर बी फूक्की देना बगैरा शामिल न।

‘सेहत’ अंदराज’ इस एकांकी दा आधार ग्रांएं च पटवारियें, लम्बड़दारें ते चौकीदारें दी मिली–भगत कन् साधारण करसानें च होने आहली हेरा–फेरी ऐ। एकांकी दा मुख पातर विनोद ऐ जेहड़ा इक भाशाई सर्वे ताई इक फ्लाड़ी ग्रांऽ जंदा ऐ ते उसीर एह सब दिक्खने दा मौका मिलदा ऐ। एकांकी दी भाशा–महावरेदार ठेठ डोगरीर ऐ ते ग्रांई–फ्लाड़ी वातावरण दी बड़ी खूबसूरती कन् अक्कासी कीती दी ऐ।

शीराजा 1986 दे अगस्त–सितम्बर अंक च ‘धरती दे चित्र गुप्त’ नांऽ दा इक एकांकी छपेआ। ज्ञानसिंह पगोच हुंदा लिखे दा एह एकांकी अज्जै दे सुविधाजनक दौर च जित्थै टैक्नॉजाजी ने काफी तरक्की करी लैदी ऐ। रगमंच दे बदलदे परिवेश ने रंगमंच उपपर असम्भव गी सम्भव करी दस्सेआ गेदा ऐ।

‘लाटरी दा टिकट’ नवम्बर 1987 च शिव दोबलिया हुंदा एकांकी संग्रह प्रकाशित होआ। इस च कुल पंज एकांकी न – परौहनचारी, लाटरी दा टिकट, अधिकार, करी लो गल्ल ते सप्प गै सपप। इस संग्रह दे सब्भै एकांकी हल्के-फुल्के अंदाज च हास्य व्यंग दी गल्ल करदे पाठक/दर्शक गी बन्नी रखने दी सलाहियत रखदे न।

‘बुड्ढ सुहागन’ 1988 च डोगरी दे एकांकी इतिहास च महत्वपूर्ण पोथी सामनै आई। इस संग्रह दे सब्भै एकांकी सशक्त न। एकांकीकार ने बड़े गै सोहगे ते नमें अंदाज च इस एकांकी दा निर्वाह कीते दा ऐ। इस चाल्ली दी टेकनीक दा डोगरी एकांकी च एह पैहला ते सफल प्रयास ऐ। जेहड़ा इसी बाकी एकांकियें शा बक्खरा करदा ऐ।

‘इनामी भाशा’ एकांकी 1990 दे जुलाई दिसम्बर नमीं चेतना च बाल एकांकी प्रो. शशि पठानिया हुंदे सम्पादन च प्रकाशित होआ। एह आत्मकथात्मक शैली च लिखी गेदी एकांकी ऐ।

1990 शीराजा एकांकी अंक अप्रैल-मई एकांकी संग्रह शिवराम दीप हुंदे सम्पादन च प्रकाशित होआ। एहदे च सत्त एकांकी शामिल न। विश्वनाथ हुंदा मरीच, जितेन्द्र शर्मा हुंदा ‘चढी जा बच्चा सूली पर’ पश्चमी ते भारती शैली दे मिश्रण दे जोरदार नमूने न।

मोहन सिंह हुंदा ‘भली होई जान पछान’ हल्का-फुला हास्य व्यंग ऐ ते शराफत ते मरहक्खे लाइयै फिरने आहलें दे पर्दे पुटदा ऐ।

नरसिंह देव जम्वाल ‘सबस्टीयूट’ शैहरी मानसिकता ते आधुनिकता दी परत चाढ़ियै रौहने आहले इक्कलखोख परिवारें दी कहानी गी बड़े सैहज तरीके कन्नै साढ़े सामनै रखे दा ऐ।

इस संग्रह च देशबन्धु डोगरा नूतन हुंदा एकांकी ‘हाटा’ इक ऐसी समस्या गी लेइयै लिखेआ गेदा एकांकी ऐ जेहड़ा डुग्गर दे पहाड़ी ग्राई जन-जीवन कन्नै सरबन्धत रखदी ऐ। इस संग्रह दा सारें कोला बक्खरा ते टकोहदा एकांकी ऐ मदन मोहन शर्मा हुंदा ‘बच्चा’ पैहलो पैहल रेडियो थमां ब्राडकास्ट होआ हा। कर्पयू च सुनसान सिड़के पर इक बच्चे दे जोरै-जोरै रोने दी आवाज औंदी ऐ। बच्चा भुल्ली गेदा होंदा ऐ। भुल्ले दा बच्चा करस्तै पेई सकदा ऐ कोई बच्चा कुसै बी हालती च ते भुल्लियै करस्तै नेई पवै इस एकांकी दा सार ऐ।

‘पंजीकड़ा’ 1989 च शिवदेव सिंह मन्हास हुंदा बाल एकांकी संग्रह प्रकाशित होआ एहदे च पंज एकांकी शामिल न – ठगोई ते ठग्ग, गुरु मैहमा, सबक, चोरै गी मोर, ‘चरचै दी लोड’, गै इक ऐसा एकांकी ऐ, जेहड़ा एकांकी विधा दा पूरी चाल्ली निर्वाह करदा ऐ। एह गल्ल बक्खरी ऐ जे अज्ज टारच ते टारचै दी लोड दूर दराड़ै बी कुसै आस्तै ओपरी नेई ऐ। पही बी इस बच्चें आस्तै इक सफल प्रयास आक्खीं सकनेआं। गुरु मैहमा ते ठग्ग ते ठगोई भाव-पक्ख दी द्रिष्टी कन्नै ते कला-पक्ख दी द्रिष्टी कन्नै एकांकी पूरी चाल्ली निर्वाह करदियां न।

1992 च जून-जुलाई शिवराम दीप हुंदे सम्पादन च प्रकाशित होआ। 'गुंझल' सुदर्शन रत्नपुरी हुंदा, शिव दोबलिया हुंदा चुत्थे मुंह जुक्के दा, जगदीप दुबे हुंदा नौहरेबाजी, ज्ञान सिंह पगोच हुंदा आसरा, शिवराम दीप हुंदा नमा सवेरा एह्दे च संकलित न।

'चुत्थो मुंह जुक्के दे' जंगलाती लकड़ी दी चोरी दी समस्या गी लेइयै बुनेआ गेदा पारिवारिक एकांकी ऐ। हल्के-फुल्के अंदाज च बड़े सैहज ते साददी ढंगे कन्ने लेखक ने अपनी गल्ल आकखी दी ऐ। 'नौहरेबाजी' ते 'नमां सवेरा' दोयै नुक्कड़ नाटक दी तरज दे एकांकी न। आधुनिक शैली च लिखे गेदे न। दोयै एकांकी माजूदा हालात च जिथै मनुक्खी कदरें दी अनदिक्खी कीती जा करदी ऐ। उसदी अक्कासी करदे न। 'नौहरेबाजी' अति यथार्थवादी शैली दा सहारा लेइयै इस नोट उपर मुकदा ऐ। जे इत्थै हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख, इसाई ते बसदे न पर आदमी निं उत्थै 'नमां सवेरा' संघर्षशील रौहने गितै प्रेरित करदा ऐ ते आशा दी किरण जगाई रखने दा साददा दिंदा ऐ।

1992 च नवरंग एकांकी संग्रह शिव दोबलिया हुंदे सम्पादन च प्रकाशित होआ। एह्दे च नरसिंह देव जम्वाल हुंदा 'दर्द अपना-अपना' उग्रवाद थमां प्रभावत इक संवेदनशील पारिवारिक एकांकी ऐ। 'सुंदरी' देशबन्धु डोगरा नूतन हुंदी अज्जै दे भारत दी सियासी नखेख लते आपराजी पाससै व्यंग ऐ।

"अगला पाठ" ओम गोस्वामी हुंदा द'ऊं हिस्से च लखोए दा एकांकी ऐ। पैह्ला हिस्सा भलेआं फलसफाना ते दूआ हिस्सा यथार्थ दे शिकजे च कसोए दा अज्जै दे मार्डन ख्याल लोकें दी तस्वीर पेश करदा ऐ दौनै हिस्से च थाहरां बी बक्खरियां-बक्खरियां न।

'गेआ गै कुत्थै हा' चंचल शर्मा हुन्दा हास्य रस दा इक एकांकी ऐ।

'लॉ मेकर' आधुनिक शैली च लिखेआ गेदा एकांकी कड़ी दर कड़ अपनी गल्ला गी सामने रखदा ऐ। कनून बनाने आहले गै उसदा गल्ल इस्तेमाल करदे न। अपनी लोड़ा ते सुविधा मुताबक त्ररोड़ी-मरोड़ी लैंदे न। शुरू थमां इयै गै आवा करदा ऐ ते हुन बी उयै किश होआ दा ऐ। इयै इस एकांकी दा केन्द्र बिन्दु ऐ।

'कि'यां मुक्कग, कु'न मकाग' सुतीक्ष्ण कुमार आनंदम हुंदा दाजै दी कबैत गी लेइयै लिखेआ गेदा बक्खरी चाल्ली दा प्रयास ऐ। डोगरा संस्कृति दा प्रतीक बुड्डढा असल च एकांकी दा स्त्रोत ते आधार पात्तर ऐ। इस चाल्ली दि'यां समस्यां अक्सर नारेबाजी च बदलोई जंदिंयां न। लेखक ने नारेबाजी कोला बचने दी काफी कोशिश कीती दी ऐ।

'एह लोक ते एह लोक' सुदर्शन रत्नपुरी हुन्दा अज्जै दी चूहा दौड़ ते पैसे दी होड़ लेइयै लिखेआ गेदा एकांकी ऐ। नमी पीढ़ी ते पुरानी पीढ़ी दे ख्यालें दा टाकरा। खुड़बो-खुड़बी नीमी पीढ़ी दा पुरानी पीढ़ी आस्तै नकारात्मक रवेइया। इक आम परिवार दी कहानी राहें लेखक ने अज्जै दे समें दी तस्वीर प्रस्तुत कीती दी ऐ। ते काफी हददा तगर ओह इसदे च सफल ऐ खीर च पुलसा दा औना ते प्रकाश गी बनियै लेई जाना कुसै सरकारी प्रॉपगंडे आहलै पाससै इशारा करदा सेही होंदा ऐ।

“लोक सेवा” शिवराम दीप हुन्दा इक राजनीतिक व्यंग ऐ। शोशन दी बड़ी गै बरीकियें गी इस एकांकी च उभारने दी सफल कोशिश कीती दी ऐ।

1999 च साढ़ा साहित्य 1997 दा एह एकांकी अंक ओम गोस्वामी हुंदे सम्पादन च जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकादमी ने छापेआ ऐ। इस संग्रैह च अट्ठ एकांकियां संकलित न। नरसिंह देव जम्वाल हुन्दा ‘दर्द अपना-अपना’, ‘अगला पाठ’, ओम गोस्वामी, ‘घुंड़ियां’, विश्वनाथ खजूरिया ‘गूंज’, मदन मोहन शर्मा ‘कर्तब’, जितेन्द्र शर्मा ऐतवार दी सैर, नरेन्द्र खजूरिया , ‘बजट दा भविष्य’ देवरत्न शास्त्री, चुम्थे मूंह जुक्कें दा, शिव दोबलिया हुन्दे एकांकी संकलित न।

बहरहाल डोगरी एकांकी गी जेकर होर खरी चाल्ली खंघालेआ जा तां दर्जना ऐसे एकांकी न साहड़ी नजर सामनै आई खड़ेई जाडन, जेह्दे दुइयें भारती भाशाएं दे एकांकियें कोला सिर कढदे सेई होंदे न। डुग्गर च एकांकी-मंचन दी परम्परा नेई होने दे बावजूद इन्ने ते इस चाल्ली एकांकी लखोना डोगरी साहित्य च बड़ी बड़्डी उपलब्धि ऐ। इस काफले च नमें नाऽ मतवातर (लगातार) जुड़े न ते जुड़ा बी करा करदे न।

### अभ्यास आस्तै सुआल

#### (क) लम्मे सुआल

प्रश्न – ‘एकांकी’ दि‘यां परिभाषां दिंदे होई ‘एकांकी’ दे तत्वेँ उपपर रोशनी पाओ ?

प्रश्न – डोगरी ‘एकांकी’ दे उद्भव ते विकास दी चर्चा करदे होई उन्नी सौ सदृश लेइयै उन्नी सौ अस्सी तगर दे एकांकियें बारै चर्चा करो?

#### (ख) लौहके सुआल

प्रश्न – ‘एकांकी’ दे भेदेँ उपपर रोशनी पाओ?

प्रश्न – “एकांकी” दी विकास जातरा दे अर्न्तगत कु‘ने द‘ऊं एकांकियें संग्रैहें दा मूल्यांकन करो ?